@Qpatrika
@qaumipatrika hindi
instagram.com/qaumipatrika

कौमी पत्रिका
राष्ट्रीय दैनिक अखबार

दिल्ली-हरियाणा-पंजाब-चण्डीगढ़-उत्तर प्रदेश से प्रसारित
रविवार, 30 मार्च 2025

VISIT: www.qaumipatrika.in
Email: qpatrika@gmail.com

R.N.I. No. UP-HIN/2007/21472 सम्पादक - गुरचरन सिंह बब्बर वर्ष 18 अंक 138 qaumipatrikahindi 011-41509689, 23315814, 9312262300 गाजियाबाद संवत् 2077-78, पेज (12) मूल्य 3.00 रुपये (हवाई शुल्क 50 पैसे अतिरिक्त)

यूपी से म्यांमार जाएंगे फील्ड अस्पताल के 118 मेडिकल स्टाफ

नई दिल्ली, 29 मार्च। भारत ने भूकंप प्रभावित म्यांमार की मदद के लिए ऑपरेशन ब्रह्मा शुरू किया है। ऑपरेशन ब्रह्मा पर विदेश मंत्रालय ने बताया कि म्यांमार में भारत के राजदूत राहत और बचाव कार्यों का बेहतर समन्वय करने के लिए फिलहाल नेपीता में हैं। सरकार के मुताबिक भारतीय समुदाय के किसी सदस्य के हताहत होने की अभी तक कोई खबर नहीं मिली है। बता दें कि म्यांमार में भूकंप के कारण अब तक एक हजार से अधिक लोगों की मौत हो चुकी है। ऑपरेशन ब्रह्मा की शुरुआत के मकसद पर विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने बताया कि संकट के समय सबसे पहले मदद करना भारत की विदेश नीति का हिस्सा है। वहीं भारत के तमाम ऑपरेशन की जानकारी देते हुए विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने कहा कि, भारत सबसे पहले प्रतिक्रिया देने वाला देश रहा है। जब चक्रवात यागी ने म्यांमार पर कहर बरपाया था, उस समय भी भारत ने अभियान चलाया था। हमने म्यांमार के लोगों को राहत, सामग्री, मानवीय सहायता प्रदान की, न केवल म्यांमार के लोगों को बल्कि कई अन्य देशों को भी जो इससे प्रभावित हुए थे। सबसे पहले प्रतिक्रिया देने वाला देश बनना हमारी नीति का हिस्सा है। उन्होंने आगे कहा, आज हमने ऑपरेशन ब्रह्मा की शुरुआत की है। ब्रह्मा सृजन के देवता हैं, ऐसे समय में जब हम म्यांमार सरकार और म्यांमार के लोगों को तबाही के बाद अपने देश के पुनर्निर्माण में मदद का हाथ बढ़ा रहे हैं। ऑपरेशन के इस विशेष नाम का एक विशेष अर्थ है। 15 टन राहत सामग्री लेकर पहला विमान हिंडन एयरफोर्स बेस से सुबह करीब 3 बजे उड़ा। यह सुबह करीब 8 बजे भारतीय समयानुसार यांगून पहुंचा। हमारे राजदूत राहत सामग्री लेने के लिए वहां मौजूद थे और उसके बाद उन्होंने इसे यांगून के मुख्यमंत्री को सौंप दिया... उसके बाद, खोज और बचाव कर्मियों और उपकरणों के साथ-साथ कुत्तों के साथ दो विमान रवाना हुए। उनमें से एक रवाना हो चुका है और दूसरा रवाना होने की प्रक्रिया में है।

जब लोकसभा में बोलने का समय था तब वो वियतनाम में थे: अमित शाह

सिम्मी कौर बब्बर

नई दिल्ली, 29 मार्च। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने कांग्रेस सांसद राहुल गांधी द्वारा संसद के कामकाज को लेकर की गई आलोचना पर तीखा हमला बोला। उन्होंने कहा कि जब लोकसभा में उन्हें बोलने के लिए समय दिया गया था, तब नेता प्रतिपक्ष वियतनाम में थे। इसके साथ ही उन्होंने कर्नाटक में सिद्धारमैया सरकार द्वारा अनुबंधों में मुसलमानों को 4 फीसदी कोटा देने को लॉलीपॉप बताया है। संसद के कामकाज की राहुल गांधी द्वारा की गई आलोचना पर प्रतिक्रिया देते हुए अमित शाह ने कहा कि लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष को शायद यह पता नहीं कि सदन में बोलने के नियम होते हैं और इसे मनमर्जी से नहीं चलाया जा सकता है। बजट पर चर्चा के दौरान उन्हें 42त्न समय दिया गया था। अब यह उन पर निर्भर करता है कि वे किसे बोलने का अवसर दें। अमित शाह ने कहा कि, जब संसद में गंभीर चर्चा चल रही थी, तब वे वियतनाम में थे और जब वे लौटे, तो अपनी मनमर्जी से बोलने की जिद करने लगे। उन्होंने कहा कि संसद नियमों और प्रक्रियाओं के अनुसार चलती है, न कि कांग्रेस पार्टी की तरह, जिसे एक परिवार चलाता है और जहां कोई भी जब चाहे बोल सकता है। मुझे खेद है, लेकिन उन्हें नियमों और प्रक्रियाओं का पालन करना होगा। कांग्रेस द्वारा देश में आपातकाल जैसी स्थिति होने के आरोप पर शाह ने कहा कि विपक्षी पार्टी लगातार सरकार की आलोचना करती रहती है। अगर सच में आपातकाल होता, तो कांग्रेस के नेता जेल में होते। एक निजी चैनल के कार्यक्रम में बोलते हुए गृह मंत्री अमित शाह ने कर्नाटक में कांग्रेस सरकार द्वारा अनुबंधों में मुसलमानों के लिए घोषित 4 फीसदी कोटे को लॉलीपॉप करार दिया। उन्होंने कहा कि धर्म के आधार पर कोई भी आरक्षण संविधान का उल्लंघन है और अदालतों द्वारा इसे रद्द कर दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि, हम धर्म के आधार पर किसी भी आरक्षण का कड़ा विरोध करते हैं।

जातिगत जनगणना की कांग्रेस की मांग पर गृह मंत्री ने कहा कि खुद कांग्रेस ने पहले इस तरह की कवायद का विरोध किया था। उन्होंने कहा, 2011 में उन्होंने (कांग्रेस) जातियों पर एक सर्वे किया था, लेकिन उसके परिणाम घोषित नहीं किए। अब हम आंतरिक विश्लेषण कर रहे हैं कि जातिगत जनगणना के लिए कौन-सी प्रक्रिया अपनाई जानी चाहिए। एक बार जब हम इसे अंतिम रूप दे देंगे, तब आगे की कार्रवाई देखी जाएगी। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने पश्चिम बंगाल में तृणमूल कांग्रेस सरकार पर अवैध प्रवासियों को पार्टी के वोट बैंक के रूप में इस्तेमाल करने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा है कि केंद्र सरकार इस तरह के कदम को सफल नहीं होने देगी। उन्होंने कहा, वे(टीएमसी) अवैध प्रवासियों को अपना वोट बैंक मानते हैं। वे अवैध प्रवासियों को अपना वोटर बनाना चाहते हैं। लेकिन हम किसी भी पार्टी को अवैध प्रवासियों को वोट बैंक के रूप में इस्तेमाल करने की अनुमति नहीं दे सकते। अमित शाह ने कहा कि तमिलनाडु कभी बहुत प्रगतिशील राज्य था, लेकिन डीएमके सरकार की नीतियों के कारण यह अराजकता का शिकार हो गया है। जिससे लोग परेशान हैं और वे अगले विधानसभा चुनाव में इसे उखाड़ फेंकने के लिए तैयार हैं। उन्होंने सत्तारूढ़ डीएमके को तमिल विरोधी करार देते हुए कहा कि तमिलनाडु सरकार ने अभी तक तमिल भाषा में चिकित्सा और इंजीनियरिंग की शिक्षा शुरू नहीं की है और किताबों का तमिल में अनुवाद भी नहीं किया है। शाह ने विश्वास जताया कि 2026 के विधानसभा चुनाव के बाद दक्षिणी राज्य में एनडीए की सरकार सत्ता में आएगी।

चंपाई सोरेन ने की प्रदेश में राष्ट्रपति शासन लगाने की मांग

कौमी संवाददाता

रांची, 29 मार्च। झारखंड में बढ़ती अपराधिक घटनाओं को लेकर राजनीतिक बयानबाजी तेज हो चुकी है। पिछले दिनों विधानसभा सत्र के आखिरी दिन भाजपा विधायकों ने राज्य सरकार पर जमकर निशाना साधा। इसी बीच पूर्व मुख्यमंत्री चंपाई सोरेन ने राज्य में राष्ट्रपति शासन लागू करने की मांग कर दी। चंपाई सोरेन द्वारा दिया गया बयान राजनीतिक गलियारों में चर्चा का विषय बन गया। चंपाई सोरेन के बयान पर पलटवार करते हुए झारखंड सरकार में शिक्षा मंत्री रामदास सोरेन ने कहा, अब चंपाई सोरेन भाजपा के द्वारा सिखाई गई भाषा का उपयोग करने लगे हैं, वो भूल जा रहे हैं। भाजपा शाशित राज्यों में कितना अपराध हो रहा है। राज्य की हेमंत सरकार क्राइम कंट्रोल करने के लिए लगातार प्रयासरत है और जो अपराधिक घटनाएं घटी निश्चित

तौर पर दोषियों को चिह्नित कर कार्रवाई की जाएगी। भाजपा नेता सह पूर्व मुख्यमंत्री चंपाई सोरेन पर चुटकी लेते हुए शिक्षा मंत्री रामदास सोरेन ने कहा, चंपाई सोरेन हमारे पुराने साथी रह चुके हैं। हम लोगों ने एक साथ झामुमो में लंबे अरसे तक काम किया। लेकिन भाजपा द्वारा गुमराह किए जाने पर वो भाजपा में गए कारण है, उन्हें लगा वो मुख्यमंत्री बनेंगे। उन्हें भाजपा में उचित सम्मान मिलेगा। लेकिन भाजपा ने उन्हें कितना सम्मान दिया। वो वर्तमान में दिख रहा है। झामुमो ने चंपाई सोरेन को सम्मान देने का काम किया, मंत्री बनाया गया। फिर मुख्यमंत्री, लेकिन वो भाजपा के बिछाए गए जाल में फंस गए।

धार्मिक स्थलों के 500 मीटर के दायरे में मांस बिक्री प्रतिबंधित: सीएम योगी

लखनऊ, 29 मार्च। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में उत्तर प्रदेश सरकार ने अवैध बूचड़खानों को बंद करने और धार्मिक स्थलों के 500 मीटर के दायरे में मांस की बिक्री पर प्रतिबंध लगाने का सख्त आदेश जारी किया है। नगर विकास विभाग के प्रमुख सचिव अमृत अभिजात ने सभी जिलाधिकारियों, पुलिस आयुक्तों और नगर आयुक्तों को बूचड़खानों को तत्काल बंद करने और धार्मिक स्थलों के पास मांस बिक्री पर प्रतिबंध लागू करने के निर्देश दिए हैं। 2014 और 2017 में जारी आदेशों का हवाला देते हुए योगी सरकार ने स्पष्ट किया है कि अवैध पशु वध और धार्मिक स्थलों के पास मांस बिक्री पूरी तरह प्रतिबंधित होगी। इस फैसले को प्रभावी बनाने के लिए जिलाधिकारियों की अध्यक्षता में जिला स्तरीय समितियों का गठन किया गया है। इनमें पुलिस, प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, पशुपालन विभाग, परिवहन विभाग, श्रम विभाग, स्वास्थ्य विभाग और खाद्य सुरक्षा प्रशासन के अधिकारी शामिल होंगे।

बलिदानी तुकाराम ओंबले के सम्मान में महाराष्ट्र सरकार का ऐतिहासिक कदम

मुंबई, 29 मार्च। महाराष्ट्र सरकार ने 26/11 के आतंकी हमले में शहीद हुए मुंबई पुलिस के सब-इंस्पेक्टर तुकाराम ओंबले के सम्मान में एक स्मारक बनाने का निर्णय लिया है। यह स्मारक सतारा जिले में उनके पैतृक गांव केदांबे में बनाया जाएगा, जहां तुकाराम ओंबले का जन्म हुआ था। महाराष्ट्र सरकार ने इस स्मारक के निर्माण के लिए 13.46 करोड़ रुपये की राशि मंजूर की है। इस मंजूरी के बाद, स्वीकृत राशि की पहली किस्त 2.70 करोड़ रुपये शुक्रवार को जिला प्रशासन को प्रदान कर दी गई है। बता दें कि यह स्मारक तुकाराम ओंबले की वीरता और बलिदान को सम्मानित करने के लिए बनाया जाएगा, जिन्होंने 26/11 के हमले के दौरान आतंकवादियों से मुकाबला करते हुए अपने प्राणों की आहुति दी थी। 26/11/2008 का वो काला दिन जब समुद्र के रास्ते पाकिस्तान से आए 10 आतंकवादियों द्वारा देश की आर्थिक राजधानी मुंबई में खूनी खेल खेला गया था। इस हमले में कई निर्दोष मारे गए थे। इन आतंकवादियों में सबसे खूंखार आतंकवादी अजमल कसाब था, जिसने रक्तपात का ऐसा खूनी खेल खेला जिससे पूरी दुनिया सन्न रह गई थी। कसाब उन आतंकी हमले में अकेला ऐसा पाकिस्तानी आतंकी था जिसे जिंदा पकड़ा गया था। इस हमले का मास्टर माइंड आतंकी कसाब को जिंदा पकड़ने के लिए काफी कोशिशें की गई थी लेकिन बार-बार वह चकमा दे रहा था। आखिर में मुंबई पुलिस में बतौर सहायक इंस्पेक्टर तैनात रहे तुकाराम ओंबले ने सिर्फ एक लाठी के सहारे उसे पकड़ लिया। हमले के चलते इलाके भर में अफरातफरी मची हुई थी। दूसरी ओर पुलिस की ओर से हुई फायरिंग में एक आतंकी मारा गया और कसाब नाटक करने लगा कि वह मर गया है। बता दें कि उस समय तुकाराम ओंबले के पास सिर्फ एक लाठी थी और कसाब के पास एक एके-47 थी। ओंबले ने कसाब की बंदूक की बैरल पकड़ ली थी। उसी समय कसाब ने ट्रिगर दबा दिया और गोलियां ओंबले के पेट और आंत में लगीं।

भाजपा के पास बहुमत नहीं, नीतीश और नायडू पर निर्भर हैं मोदी: ओवैसी

सौरभ शर्मा

हैदराबाद, 29 मार्च। ऑल इंडिया मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुस्लिमीन (एआईएमआईएम) के प्रमुख असदुद्दीन ओवैसी ने वक्फ संशोधन विधेयक को लेकर केंद्र सरकार को घेरा है। उन्होंने कहा कि विधेयक को पारित कराने के लिए भाजपा के पास लोकसभा में बहुमत नहीं है। अगर चंद्रबाबू नायडू और नीतीश कुमार इसका विरोध करते हैं, तो बिल पारित नहीं होगा। ओवैसी ने कहा कि पीएम नरेंद्र मोदी चंद्रबाबू नायडू और नीतीश कुमार की बैसाखी पर निर्भर हैं। वहीं केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह वक्फ बिल को लेकर देश में झूठ फैला रहे हैं। अमित शाह भारत सरकार के गृह मंत्री हैं और उनका बयान इस बात का सबूत है कि आप एक असांविधानिक कानून बनाने की कोशिश कर रहे हैं जिसे अदालत में चुनौती दी जा सकती है। यह संविधान के अनुच्छेदों का उल्लंघन है और इससे पूरे देश के वक्फ को नुकसान होगा। उन्होंने कहा कि सरकार वक्फ संपत्ति का खंड हटा रही है, इसका लाभ किसे मिलेगा? आप लाखों रुपये के राजस्व को छोड़ रहे हैं। अमित शाह

देश से झूठ बोल रहे हैं कि वक्फ ट्रिब्यूनल को अदालत में चुनौती दी सकती है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी नीतीश कुमार और चंद्रबाबू नायडू की बैसाखी पर निर्भर हैं और अगर वे इस असांविधानिक विधेयक का समर्थन नहीं करते हैं, तो यह कानून नहीं बनेगा। शुक्रवार को जुमा अलविदा की नमाज के दौरान ओवैसी ने वक्फ (संशोधन) विधेयक के खिलाफ काली पट्टी बांधकर विरोध प्रदर्शन किया था। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने शुक्रवार को कहा था कि वक्फ संशोधन विधेयक को संसद के बजट सत्र में पेश किया जाएगा। शाह ने कहा कि प्रस्तावित कानून से किसी को भी डरने की जरूरत नहीं है। नरेंद्र मोदी सरकार संविधान के दायरे में वक्फ अधिनियम में संशोधन कर रही है। विपक्ष मुसलमानों को गुमराह कर रहा है। मुसलमानों के किसी भी अधिकार पर अंकुश नहीं लगाया जाएगा। वे सिर्फ झूठ बोल रहे हैं। ओवैसी के विरोध प्रदर्शन पर अमित शाह ने कहा था कि लोगों को ऐसा करने का अधिकार है। कुछ लोग अपने कपड़ों के जरिये ऐसा करते हैं, कुछ लोग अपने शब्दों के जरिये। संसद में लोग तर्क के जरिये विरोध करते हैं।

प्रियंका ने वायनाड भूस्खलन में प्रभावित छात्रों को दिया तोहफा

तेजिन्दर कौर बब्बर

वायनाड, 29 मार्च। कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा ने शनिवार को वायनाड जिले में भूस्खलन से प्रभावित छात्रों को शिक्षा सुनिश्चित करने का वादा किया। कलपेट्टा में मुंडक्कई-चूरलमाला क्षेत्र के बचे हुए छात्रों को छात्रवृत्ति वितरण के उद्घाटन के दौरान प्रियंका गांधी ने कहा कि इस भूस्खलन में बाहर पढ़ने वाले छात्र बच गए, लकिन दुखद ये करहा कि उन्होंने अपने परिवारों को खो दिया। उन्होंने कहा कि यूनाइटेड डेमोक्रेटिक फ्रंट (यूडीएफ) ने यह सुनिश्चित करने का फैसला लिया है कि ऐसे छात्र अपनी शिक्षा जारी रख सकें। प्रियंका गांधी ने विभिन्न संस्थानों की ओर से की गई मदद की सराहना की। साथ ही बताया कि वायनाड के 121 छात्र वर्तमान में हृढ्ढष्ट॥श्व कन्याकुमारी में पढ़ाई कर रहे हैं, जिनको पूर्ण छात्रवृत्ति दी गई है। इसके अलावा, कर्नाटक के येनेपोया विश्वविद्यालय ने वायनाड के चार छात्रों के लिए वित्तीय सहायता प्रदान की है। इसके साथ ही प्रियंका गांधी ने

भूस्खलन के बाद वायनाड में लोगों के दर्द और पीड़ा की बात की। उन्होंने कहा कि इस आपदा के बाद वह भविष्य में उनके जीवन को आसान बनाने के लिए हर संभव प्रयास करेंगी। उन्होंने कहा, हम आपको वह वापस नहीं दे सकते जो आपने खोया है, लेकिन हम भविष्य में आपके जीवन को आसान बना सकते हैं। इसके अलावा उन्होंने वायनाड में शैक्षिक पुनर्वास के लिए कलपेट्टा विधायक टी सिद्दीकी की सराहना की, जिन्होंने छात्रों के लिए धन जुटाने और कॉलेजों से शुल्क छूट दिलाने के लिए कड़ी मेहनत की है। प्रियंका गांधी का तीन दिवसीय वायनाड दौरा आज समाप्त हो रहा है। इससे पहले प्रियंका गांधी वाड्रा ने वायनाड में पत्रकारों से बातचीत के दौरान केंद्र सरकार पर निशाना साधा। उन्होंने आरोप लगाया कि केंद्र संसद में चर्चा को रोक रहा है। विपक्ष की आवाज दबाकर लोकतांत्रिक प्रक्रिया को कमजोर किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार का दृष्टिकोण किसी भी तरह से चर्चा को टालना है, इसके लिए विभिन्न हथकंडे अपनाए जा रहे हैं। विपक्ष की आवाज को कथित रूप से दबाने के सवालों का जवाब देते हुए सांसद ने कहा कि सरकार ने संसद में चर्चा को रोका है।

दूसरे धर्मों के लोगों को मतदान से दूर रखने की कोशिश

मुंबई, 29 मार्च। एक देश एक चुनाव के मुद्दे को लेकर केंद्र सरकर और विपक्षी दलों में आरोप-प्रत्यारोप की राजनीति तेज है। इसी बीच शिवसेना यूबीटी ने एक बार फिर इस प्रस्ताव पर केंद्र सरकार का घेराव किया है। यूबीटी ने आरोप लगाया है कि केंद्र सरकार एक साथ चुनाव कराने की आड़ में मतदाता सूची से अन्य धर्मों क लोगों को बाहर करने के प्रयास में है, ताकि अंत में कुछ खास वोटर्स को ही मतदान का अधिकार मिल सके। बता दें कि शिवसेना (यूबीटी) के मुखपत्र सामना में प्रकाशित संपादकीय में ये भी कहा गया कि भाजपा की योजना है कि देश में केवल एक ही पार्टी सत्ता में हो और एक पार्टी, एक चुनाव उनका अंतिम लक्ष्य है। शिवसेना यूबीटी के संपादकीय में अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप का भी जिक्र किया गया। इसमें कहा गया कि जहां ट्रंप अमेरिकी चुनावों में अश्वेत, लैटिनो और अप्रवासियों को मतदान से रोकने की कोशिश कर रहे हैं, वहीं भारत में भाजपा द्वारा अन्य धर्मों के लोगों को मतदाता सूची से बाहर करने का प्रयास किया जा रहा है। इसके साथ ही इस संपादकीय में ट्रंप द्वारा अमेरिकी चुनाव सुधारों के लिए किए गए हस्ताक्षरित आदेश का भी हवाला दिया गया, जिसमें नागरिकता के प्रमाण को मतदान पंजीकरण के लिए अनिवार्य किया गया है। शिवसेना (यूबीटी) ने कहा कि भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है, और अमेरिका सबसे मजबूत लोकतंत्र है, लेकिन दोनों देशों में लोकतंत्र की जड़ें कमजोर हैं। संपादकीय में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और ट्रंप को लोकतंत्र और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के प्रति विश्वासहीन बताया गया। साथ ही मुखपत्र में ट्रंप को श्वेत मोदी करार दिया गया। इसके अलावा, संपादकीय में यह भी कहा गया कि मोदी और भाजपा का उद्देश्य केवल एक ही पार्टी को सत्ता में बनाए रखना है, और एक पार्टी, एक चुनाव का प्रस्ताव इसके तहत ही पेश किया गया है।

भाई-भतीजावाद और कुप्रबंधन ने बैंकिंग क्षेत्र को संकट में डाला: राहुल गांधी

नरेश मल्होत्रा

नई दिल्ली, 29 मार्च। कांग्रेस सांसद और लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने एक निजी बैंक के कुछ कर्मचारियों से मुलाकात की। मुलाकात के बाद उन्होंने भाजपा पर बैंकिंग क्षेत्र को संकट में डालने जैसा गंभीर आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार के भाई-भतीजावाद और नियामक कुप्रबंधन ने भारत के बैंकिंग क्षेत्र को संकट में डाल दिया है, जिसके चलते जूनियर कर्मचारियों को तनाव और तनावपूर्ण कार्य स्थिति का सामना करना पड़ रहा है। साथ ही राहुल गांधी ने भाजपा पर अपने अरबपति मित्रों के लिए 16 लाख करोड़ रुपये के ऋण माफ करने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि इस आर्थिक कुप्रबंधन की कीमत हजारों ईमानदार कामकाजी पेशेवरों को चुकानी पड़ रही है। उन्होंने आईसीआईसीआई बैंक के पूर्व कर्मचारियों के प्रतिनिधिमंडल के साथ अपनी बैठक का एक वीडियो भी साझा किया, जिसमें कर्मचारी बता रहे थे कि बैंक में कुप्रबंधन के कारण उन्हें नुकसान उठाना पड़ा। राहुल गांधी ने आगे कहा कि कांग्रेस पार्टी इन कामकाजी पेशेवरों के अधिकारों के लिए लड़ेगी और उनके कार्यस्थल पर अतरिक्त तनाव

को समाप्त करने की कोशिश करेगी। साथ ही राहुल गांधी ने उन लोगों से भी आग्रह किया जिन्होंने इसी तरह के अन्याय का सामना किया है। राहुल गांधी ने कहा कि वैसे लोग मुझे संदेश भेजे। इसके साथ ही उन्होंने यह भी बताया कि आईसीआईसीआई बैंक के 782 पूर्व कर्मचारियों के प्रतिनिधिमंडल ने संसद में उनसे मुलाकात की। उन्होंने कर्मचारियों की कहानियों में कार्यस्थल पर उत्पीड़न, जबरी स्थानांतरण, एनपीए उल्लंघकों को अनैतिक तरीके से ऋण देने का खुलासा करने के बाद प्रतिशोध और बिना उचित प्रक्रिया के बर्खास्तगी जैसी समस्याओं का खुलासा हुआ। राहुल गांधी ने ये भी बताया कि ऐसे दो मामलों में तो इन घटनाओं के कारण आत्महत्या तक हो गई। साथ ही राहुल गांधी ने कहा कि कर्मचारियों ने बताया कि इस तरह की अन्यायपूर्ण प्रथाएं केवल आईसीआईसीआई बैंक तक ही सीमित नहीं हैं, बल्कि ये निजी क्षेत्र के बैंकों में भी एक व्यापक प्रवृत्ति बन चुकी हैं, जो अधिक से अधिक लाभ कमाने के दबाव से प्रेरित हैं। हालांकि इस मामले में निजी बैंक की ओर से इस मुद्दे पर अभी तक कोई प्रतिक्रिया नहीं आई है।

सांसद रामजीलाल सुमन के पक्ष में सड़क पर उतरी समाजवादी पार्टी

ललितपुर, 29 मार्च। सांसद रामजीलाल सुमन के आगरा स्थित आवास पर 26 मार्च को करणी सेना के पदाधिकारियों द्वारा आवास सहित उनकी गाड़ियों को निशाना बनाया गया। इतना ही नहीं सांसद के परिजनों पर हमला किया गया था। जिसके विरोध में समाजवादी पार्टी एकजुटता के साथ शनिवार को सड़क पर उतरी और सपा जिलाध्यक्ष नेपाल सिंह यादव के नेतृत्व में जिलाधिकारी के माध्यम से राष्ट्रपति को ज्ञापन भेजा गया है। शनिवार को बाबा साहब अम्बेडकर पार्क में सपा नेताओं के जुटने का सिलसिला शुरू हुआ। जहां भारी संख्या में प्रशासन एवं पुलिस के अधिकारी पहुंचे। इस दौरान पुलिस कर्मियों से सपाईयों की नोकझोंक भी हुई। बाद में सपा जिलाध्यक्ष के हस्तक्षेप के बाद प्रदर्शन को आगे बढ़ने की अनुमति दी गई। सपाईयों ने बाबा साहब अम्बेडकर पार्क से पैदल चलते हुए तुवन चौराहा होते कलेक्ट्रेट परिसर में कूच किया। जहां सपाई पुलिस के घेरे में रहे। राष्ट्रपति को भेजे ज्ञापन में सपा जिलाध्यक्ष नेपाल सिंह यादव ने कहा कि सपा सांसद एवं वरिष्ठ नेता रामजी लाल सुमन के घर तोड़फोड़ करने वाले आरोपी खुलेआम घूम रहे हैं। जब लोकतंत्र के सबसे बड़े सदन में सांसद सुरक्षित नहीं है, तो सोचो दलित वर्ग का क्या हाल होता होगा, इसी घटना से अंदाजा लगाया जा सकता है। प्रदेश की कानून व्यवस्था ध्वस्त हो चुकी है। योगी सरकार पर कानून व्यवस्था संभालने नहीं संभल रही है। प्रदेश में गुंडाराज कायम है, आज हमारी बहन बेटियां सुरक्षित नहीं हैं, प्रतिदिन प्रदेश में हत्या, लूट, बलात्कार जैसी कई घटनाएं घट रही हैं और सरकार अपनी झूठी उपलब्धियों का बखान कर रही हैं। इसके बाद झांसी ललितपुर लोकसभा बूथ प्रभारी एवं पूर्व जिलाध्यक्ष ज्योति सिंह यादव ने कहा कि हम दलितों का अपमान किसी भी सूरत में बर्दाश्त नहीं करेंगे। यदि हमारे दलित समाज के सम्मान को ठेस पहुंचती है तो समाजवादी पार्टी पूरे प्रदेश में बड़ा जन आंदोलन छेड़ देगी। उन्होंने आगे कहा कि यह देश बाबा साहब अम्बेडकर के संविधान से चलेगा, किसी की तानाशाही से नहीं चलेगा, मनमानी किसी भी सूरत में बर्दाश्त नहीं होगी। प्रदर्शन के दौरान अनुसूचित पिछड़ा प्रकोष्ठ के प्रदेश उपाध्यक्ष मोहन घायल, जिला उपाध्यक्ष भजनलाल कुशवाहा, नगर अध्यक्ष अंशुल जैन, युवजन सभा जिलाध्यक्ष अरशद मंसूरी, मुलायम सिंह यूथ बिग्रेड जिलाध्यक्ष ह्रदेश यादव मुखिया, पूर्व लोहिया वाहिनी जिलाध्यक्ष आकिब मंसूरी, पिछड़ा प्रकोष्ठ जिलाध्यक्ष नरेंद्र सिंह राजपूत, बाबा साहब अम्बेडकर वाहिनी जिलाध्यक्ष तुलसीराम अहिरवार, राममूर्ति तिवारी सहित अनेक सपा नेता एवं कार्यकर्ता मौजूद रहे।

भूकंप के बाद श्रीलंका ने म्यांमार, थाईलैंड के प्रति की संवेदना व्यक्त

कोलंबो। श्रीलंका के विदेश मंत्रालय, विदेशी रोजगार और पर्यटन ने एक बयान में कहा कि वह म्यांमार और थाईलैंड में आए भूकंप से प्रभावित लोगों के साथ एकजुटता से खड़ा है। मंत्रालय ने उन लोगों के प्रति संवेदना व्यक्त की जिन्होंने अपने प्रियजनों को खो दिया है और जो लोग घायल हुए हैं उनके शीघ्र स्वस्थ होने की कामना की।मंत्रालय ने थाईलैंड और म्यांमार में श्रीलंकाई लोगों से सतर्क रहने और यांगून और

बैंकॉक में श्रीलंकाई दूतावासों से संपर्क करने का अनुरोध किया। इससे पहले, बैंकॉक में श्रीलंकाई दूतावास ने कहा कि अभी तक थाईलैंड में श्रीलंकाई नागरिकों के भूकंप से प्रभावित होने की कोई रिपोर्ट नहीं मिली है, जिसके कारण बैंकॉक और अन्य देशों में झटके महसूस किए गए।

भूकंप से म्यांमार में अब तक 700 लोगों की मौत

बर्मा। म्यामांर में आए भूकंप में मरने वालों की संख्या 700 के करीब तक जा पहुंची है। अब तक 694 लोगों के मरने की पुष्टि म्यांमार शासन कर दी है। हर तरफ लाशें बिखरीं पड़ी हैं। अमेरिकी भौगोलिक सर्वेक्षण के मुताबिक यह भूकंप दस किलो मीटर की गहराई पर था। भूकंप का केन्द्र मांडले शहर से लगभग 17.2 किलो मीटर दूर बताया गया है। चीन की समाचार एजेंसी शिन्हुआ के मुताबिक म्यांमार में

अभी तक 694 लोगों के मरने की पुष्टि हो चुकी है। लगातार मलबे को हटाया जा रहा है। उधर शनिवार को भी म्यांमार से सटे दक्षिण पश्चिमी युन्नान प्रांत में भी झटके महसूस किए गए। हालांकि वहां से किसी जान-माल के नुकासन की खबर नहीं हैं।

अफगानिस्तान में सुबह लगे भूकंप के झटके

काबुल। म्यांमार के बाद आज शनिवार को सुबह अफगानिस्तान में भी भूकंप के झटके महसूस किए गए। यह झटके भारतीय समय के मुताबिक सुबह 5,16 बजे लगे। भूकंप की तीव्रता रिक्टर स्केल पर 4.7 मापी गई है। हालांकि भूकंप से अफगानिस्तान में किसी नुकसान या फिर हताहत होने की खबर नहीं हैं। नेशनल सेंटर फार सीस्मोलाजी के मुताबिक अफगानिस्तान में भूकंप सुबह 5.16 बजे आया, जिसकी गहराई करीब 180 किलो मीटर मानी जा रही है। रिक्टर स्केल पर 4.7 की तीव्रता का भूकंप मध्यम श्रेणी का माना जाता है। इससे हल्के झटके लगते हैं और मामूली नुकसान की आशंका रहती है।

अमेरिका ने यमन पर किए 26 नए हवाई हमले

सना। अमेरिकी सेना ने यमन की राजधानी सना और अन्य प्रांतों पर 26 नए हवाई हमले किए, जिसमें कम से कम एक व्यक्ति की मौत हो गई और तीन अन्य घायल हो गए। हूती द्वारा संचालित अल-मसीरा टीवी ने यह जानकारी दी। अल-मसीरा टीवी ने बताया कि दक्षिणी सना में अल-सवाद

क्षेत्र पर आठ हवाई हमले किए गए और 18 हवाई हमलों में सादा और अल-जौफ प्रांतों के कई हिस्सों को निशाना बनाया गया। अमेरिकी पक्ष ने अभी तक इस घटना पर कोई टिप्पणी नहीं की है। इससे पहले दिन में अल-मसीरा टीवी ने बताया कि अमेरिकी सेना ने भोर से पहले यमन पर 40 से अधिक हवाई हमले किए, जिसमें सना अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे, कमांड कैंप, सरीफ क्षेत्र और सनहान क्षेत्र में जरबन साइट के साथ-साथ उत्तरी प्रांतों में कई अन्य स्थानों को निशाना बनाया गया। इसमें कहा गया है कि एक व्यक्ति घायल हो गया।

दक्षिण कोरिया में जंगल की आग से जान-माल के नुकसान पर अमेरिका ने जताया दुख, मदद का दिया आश्वासन

एजेंसी

सोल । अमेरिका ने दक्षिण कोरिया के दक्षिणी क्षेत्र में जंगल की आग से हुए नुकसान और जान-माल की हानि पर दुख जताया। वाशिंगटन ने सोल को पूरी मदद देने का वादा किया। अमेरिकी विदेश विभाग की प्रवक्ता टैमी ब्रूस ने एक बयान में कहा, दक्षिण-पूर्वी क्षेत्र में जंगल में आग से हुई जान-माल की हानि और भारी नुकसान के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका, कोरिया गणराज्य के लोगों के प्रति अपनी गहरी संवेदना व्यक्त करता है। उन्होंने दक्षिण कोरिया का आधिकारिक नाम लिया। ब्रूस ने कहा, इस कठिन समय में अमेरिका अपने सहयोगी के साथ खड़ा है। संयुक्त राज्य कोरिया बल भी आग से निपटने और प्रभावित समुदायों की सहायता करने के लिए तैयार है। प्रवक्ता ने कहा, हम बहादुर अग्निशमन कर्मियों और अन्य लोगों की मृत्यु पर दुख व्यक्त करते हैं। हमारी संवेदनाएं उनके परिवारों,

विस्थापित लोगों और इस कठिन समय में शरण लेने वाले सभी लोगों के साथ हैं। योनहाप समाचार एजेंसी की रिपोर्ट के अनुसार, ब्रूस ने अमेरिका में लगी विनाशकारी आग के दौरान दक्षिण कोरिया के मजबूत समर्थन को भी याद किया। उन्होंने कहा, जैसे आप हमारे साथ खड़े रहे हैं, वैसे ही हम भी आपके साथ खड़े रहेंगे। इस बीच, अग्निशमन कर्मी और सैनिक हेलीकॉप्टरों की मदद से देश की सबसे बड़ी जंगल की आग को बुझाने की कोशिश कर रहे हैं, जो दक्षिण-पूर्वी प्रांत नॉर्थ ग्योंगसांग में लगी थी। इस आग में अब तक 28 लोगों की मौत हुई जबकि 32 लोग घायल हुए हैं। सरकारी आंकड़ों के अनुसार, पिछले इस क्षेत्र में आग ने बड़ा नुकसान किया है और 38,000 हेक्टेयर से ज्यादा जंगल जलकर खाक हो गया है। यह 2000 में पूर्वी तट पर लगी आग से लगभग 13,000 हेक्टेयर ज्यादा है, जिसमें उस समय 23,794 हेक्टेयर जंगल जल गया था। उस समय वह आग देश की सबसे बड़ी आग मानी गई थी। शाम 7 बजे तक कुल 37,829 लोग विस्थापित हुए, जिनमें उत्तरी ग्योंगसांग प्रांत के उइसियोंग और अंडोंग क्षेत्रों के लगभग 30,000 लोग शामिल हैं। दक्षिण कोरिया के कार्यवाहक राष्ट्रपति हान डक-सू ने कार्यवाहक आंतरिक मंत्री को की-डोंग को उत्तर ग्योंगसांग प्रांत में रहने तथा आग पर काबू पाने तक जंगल की आग के पीड़ितों के लिए राहत कार्यों की देखरेख करने का निर्देश दिया।

अफ़ग़ानिस्तान ने ईद-उल-फ़ित्र पर 2 हज़ार से ज़्यादा कैदियों को रिहा किया

एजेंसी

काबुल। अफ़गान अधिकारियों ने मुसलमानों के लिए सबसे महत्वपूर्ण त्योहारों में से एक ईद-उल-फ़ित्र की पूर्व संध्या पर 2,463 कैदियों को रिहा किया है। स्थानीय मीडिया 'टोलो न्यूज़' ने शनिवार को यह जानकारी दी।

रिपोर्ट में कहा गया कि अंतरिम सरकार के सर्वोच्च नेता मावलवी हिबतुल्लाह अखुंदज़ादा के आदेश के आधार पर कैदियों को रिहा किया गया और जिन कैदियों में अपेक्षाकृत हल्के मामले थे, उन्हें अफ़गानिस्तान के 34 प्रांतों की जेलों से रिहा किया गया।

काठमांडू में हालात सामान्य, हटाया गया कर्फ्यू

एजेंसी

काठमांडू। राजशाही समर्थकों के हिंसक प्रदर्शन, तोड़फोड़ और आगजनी की घटना के बाद शुक्रवार शाम चार बजे लगाया गया कर्फ्यू शनिवार की सुबह सात बजे से हटा दिया गया है। कर्फ्यू हटाने के साथ ही जनजीवन सामान्य होने लगा है। काठमांडू जिला प्रशासन कार्यालय ने शनिवार सुबह कर्फ्यू हटाने का फैसला लिया ।

प्रमुख जिलाधिकारी ऋषिराम तिवारी ने बताया कि स्थिति सामान्य होने के कारण सुबह सात बजे से काठमांडू के जिन क्षेत्रों में कर्फ्यू लगाया गया था, उसे हटा लिया गया है। गया। इसी बीच जिला प्रशासन ने सेना को भी सड़कों से वापस भेज दिया गया है। प्रमुख जिलाधिकारी ने बताया कि जनजीवन सामान्य बनने के बाद सेना की आवश्यकता नहीं है। इसलिए उन्हें बैरक में वापस भेज दिया गया है। कल जिस जगह पर

पर सबसे अधिक नुकसान हुआ था, लोग उस जगह को देखने के लिए पहुंच रहे है। काठमांडू के चौक चौराहों पर सुरक्षाकर्मियों की मौजूदगी देखी जा सकती है। गौरतलब है कि हिंसक झड़प के बाद काठमांडू के मैतीघर मंडला से लेकर संसद भवन तक, नयन बाणेश्वर से पुराने बाणेश्वर तक, कोटेश्वर से लेकर बालकुमारी तक और जड़ीबूटी से लेकर सिनामांगल तक के क्षेत्र में कर्फ्यू लगा दिया गया था। साथ ही सेना व पुलिस लगातार पूरी रात गश्त करती रही।

युद्ध विराम के बाद पहली बार इज़रायल ने बेरूत उपनगर को बनाया निशाना

एजेंसी

बेरूत। इज़रायली हवाई हमलों ने बेरूत के दक्षिणी उपनगरों में एक इमारत को निशाना बनाया। पिछले नवंबर में युद्ध विराम पर सहमति बनने के बाद से यह पहला ऐसा हमला था।

हवाई हमलों के तुरंत बाद इज़रायल रक्षा बलों ने कहा कि उन्होंने लेबनान की राजधानी के पास हिज़्बुल्लाह से संबंधित ड्रोन भंडारण सुविधा को निशाना बनाया थाहवाई हमलों से पहले आईडीएफ ने सोशल मीडिया पर निकासी अलर्ट जारी किया, जिसमें लेबनानी नागरिकों को साइट के आस-पास के 300 मीटर के क्षेत्र को छोड़ने की सलाह दी गई। आईडीएफ के अरबी भाषा के प्रवक्ता अविचे अद्राई ने स्थान को चिह्नित करने वाला एक नक्शा साझा किया और निवासियों से तुरंत खाली करने का आग्रह किया। प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि जब परिवार अपने घरों से भाग रहे थे, तो वहां अफरा-तफरी का

माहौल था, कुछ लोग जल्दबाजी में स्कूल खाली कर रहे थे। आगे भी हमले की आशंका के चलते बच्चे पजामा पहनकर निकलते देखे गए। लेबनान के शिक्षा मंत्रालय ने लक्षित क्षेत्र के पास सभी सरकारी और निजी स्कूलों, माध्यमिक संस्थानों, व्यावसायिक केंद्रों और राफिक हरीरी विश्वविद्यालय परिसर को बंद करने का भी आदेश दिया।

काठमांडू में हुई हिंसक झड़पों में एक पत्रकार सहित दो की मौत, 110 घायल

एजेंसी

काठमांडू। काठमांडू में राजशाही को वापस लाने की मांग कर रहे प्रदर्शनकारियों और पुलिस के बीच हुई हिंसक झड़प में दो लोगों की मौत हो गई। एक पत्रकार को जिंदा जला दिया गया, जबकि एक अन्य व्यक्त की पुलिस गोली लगने से मौत हो गई। पुलिस और प्रदर्शनकारियों के बीच दिनभर चली झड़प के दौरान स्थिति को नियंत्रण में लेने के लिए पुलिस द्वारा चलाई गई गोली से घायल एक प्रदर्शनकारी की मौत हो गई। गृह मंत्रालय के प्रवक्ता छवि रिजाल ने बताया कि तिनकुने क्षेत्र में हुए प्रदर्शन के दौरान उग्र भीड़ को नियंत्रित करने के लिए पुलिस द्वारा चलाई गई गोली लग कर घायल 29 वर्षीय सबीन महर्जन की उपचार के दौरान मौत हो गई। उन्होंने बताया कि सीने में गोली लगने के कारण मौत होने की जानकारी चिकित्सकों ने दी है। इसी तरह झड़प की रिपोर्टिंग करने

के लिए गए एक पत्रकार की जिंदा जलकर मौत हो गई । प्रदर्शनकारियों ने जिस भवन को आग के हवाले किया, उसी भवन से एक पुरुष का शव निकला जिसकी पहचान एक स्थानीय टीवी चैनल के कैमरामैन के रूप में की गई । गृह मंत्रालय के प्रवक्ता रिजाल ने बताया कि इस पत्रकार का शव 95 प्रतिशत जले हुए अवस्था में बरामद किया गया। हालांकि प्रदर्शनकारियों का तर्क है कि इसी भवन में पुलिस ने बहुत अधिक मात्रा में अश्रु गैस के बुलेट रखने के कारण वहां आग पकड़ ली। सोशल मीडिया पर अभिनेत्री मनीषा कोइराला ने एक वीडियो डाला है जिसमें इसी भवन से पुलिस द्वारा मंच पर अश्रु गैस प्रहार करते हुए दिखाया गया है। प्रदर्शन के दौरान 110 लोग घायल हो गए हैं। काठमांडू के एसएसपी विश्व अधिकारी के मुताबिक घायलों में अधिकांश सुरक्षाकर्मी ही शामिल हैं। उन्होंने बताया कि नेपाल पुलिस के 53, सशस्त्र प्रहरी बल के 34 जवान घायल हो गए हैं। 33 प्रदर्शनकारियों के भी घायल होने की खबर है। सरकार ने सभी घायलों का इलाज मुफ्त में कराने का फैसला किया है।

म्यांमार भूकंप से पड़ोसी चीनी प्रांत में 1,700 लोग प्रभावित

एजेंसी

बीजिंग। म्यांमार में आए 7.7 तीव्रता के भूकंप से दक्षिण-पश्चिमी चीनी प्रांत युन्नान में 1,700 से ज़्यादा लोग प्रभावित हुए हैं। सरकारी चीनी टेलीविजन चैनल सीसीटीवी ने यह जानकारी दी।

भूकंप से सीमावर्ती जिले रुइली में 458 घर प्रभावित हुए, कुल 1,705 लोग प्रभावित हुए। दो लोग घायल हुए। कई ऊंची इमारतें और पुराने घर क्षतिग्रस्त हो गए। पानी और बिजली की आपूर्ति, सार्वजनिक परिवहन और दूरसंचार सेवाएँ बाधित हुईं। भूकंप का असर म्यांमार के पड़ोसी पाँच देशों में भी महसूस किया गया। म्यांमार के प्रधानमंत्री मिन आंग ह्लाइंग ने कहा कि इस आपदा में कम से कम 144 लोगों की मौत हो गई। आपातकालीन स्थिति के रूसी मंत्रालय ने आपातकालीन प्रतिक्रिया प्रयास में म्यांमार की सहायता के लिए बचाव दल को ले जाने वाले दो विमान भेजे।

रूस-यूक्रेन युद्ध पर राष्ट्रपति पुतिन बोले, 'शांतिपूर्ण समाधान चाहते हैं, लेकिन मुख्य कारणों का निवारण जरूरी'

एजेंसी

मास्को । रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने कहा है कि रूस-यूक्रेन युद्ध का समाधान शांतिपूर्ण तरीके से संभव है, लेकिन इसके लिए इस संघर्ष के मुख्य कारणों को दूर करना जरूरी है। उन्होंने इस युद्ध को जटिल मामला बताते हुए सतर्क और संतुलित दृष्टिकोण अपनाने की जरूरत पर जोर दिया। पुतिन ने रूसी नौसेना के साथ बैठक के दौरान कहा, ÷हम सभी समस्याओं को शांतिपूर्ण तरीके से हल करने के पक्ष में हैं, लेकिन इसके लिए उन कारणों को भी समाप्त करना होगा, जिनकी वजह से मौजूदा हालात बने हैं।÷ राष्ट्रपति पुतिन ने यह भी स्पष्ट किया कि रूस यूरोप के साथ बातचीत करने के लिए तैयार है, लेकिन पिछली गलतियों से सीख लेगा और पश्चिम पर जरूरत से ज्यादा भरोसा नहीं करेगा। रूसी मीडिया के अनुसार, पुतिन ने कहा,

÷हम यूरोप के साथ काम करने के लिए भी तैयार हैं, लेकिन वे लगातार असंगत तरीके से काम कर रहे हैं और हमें धोखा देने की कोशिश करते रहते हैं। खैर, हमें इसकी आदत हो गई है। उम्मीद है कि अब हम अपने तथाकथित भागीदारों पर जरूरत से ज्यादा भरोसा करके कोई गलती नहीं करेंगे। इस बीच, फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों ने पेरिस में एक सम्मेलन में यूक्रेन को समर्थन देने के लिए कई नई पहल की घोषणा की। फ्रांस और ब्रिटेन ने मिलकर यूक्रेन की सेना को पुनर्गठित करने के लिए एक योजना तैयार की है। मैक्रों ने कहा कि ब्रिटेन के प्रधानमंत्री कीर स्टार्मर और मैं यूक्रेन के अंतरराष्ट्रीय गठबंधन के समन्वय प्रयासों का संयुक्त रूप से नेतृत्व करेंगे। सम्मेलन के बाद ब्रिटिश प्रधानमंत्री कीर स्टार्मर ने कहा कि रूस पर लगे प्रतिबंध हटाने का समय अभी नहीं आया है, मैक्रों ने भी इस बात पर सहमति जताई कि रूस पर प्रतिबंधों को हटाने का यह सही समय नहीं है। इस बीच, रूसी विदेश मंत्रालय की प्रवक्ता मारिया जखारोवा ने कहा कि यूक्रेन में पश्चिमी देशों द्वारा शांति सैनिकों की तैनाती का रूस कड़ा विरोध करता है। जखारोवा ने चेतावनी दी कि अगर पश्चिमी देश यूक्रेन में शांति मिशन के नाम पर अपनी सेना भेजते हैं, तो इससे रूस और नाटो के बीच सीधा टकराव हो सकता है। लंदन और पेरिस सैन्य हस्तक्षेप की योजना बना रहे हैं।

पुतिन ने यूक्रेन युद्ध सुलझाने के लिए रूस के संभावित साझेदारों में उत्तर कोरिया को भी किया शामिल : रिपोर्ट

एजेंसी

सोल । रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने उत्तर कोरिया को उन देशों में शामिल किया है, जिनके साथ वह यूक्रेन युद्ध के समाधान पर काम करने के लिए तैयार हैं। रूस के मरमंस्क दौरे के दौरान युद्ध को सुलझाने की कोशिशों पर बात करते हुए राष्ट्रपति पुतिन ने कहा कि न केवल संयुक्त राज्य अमेरिका, बल्कि चीन, भारत, ब्राजील, दक्षिण अफ्रीका, सभी ब्रिक्स देश और उत्तर कोरिया भी सहयोग के लिए साझेदार बन सकते हैं। समाचार एजेंसी ने रूसी समाचार एजेंसी तास के हवाले से बताया कि राष्ट्रपति पुतिन ने कहा कि वह स्थिति को सुलझाने के किसी भी प्रयास का स्वागत करते हैं।ब्रिक्स एक अंतरराष्ट्रीय संगठन है, जिसमें दस देश शामिल हैं, जैसे ब्राजील, रूस, भारत, चीन, दक्षिण अफ्रीका और मिस्र। यह टिप्पणी यूक्रेन युद्ध को लेकर रूस और उत्तर कोरिया के बीच बढ़ते सैन्य तनाव के बीच आई है, जिसमें प्योंगयांग ने रूस के पक्ष में हजारों सैनिकों को तैनात किया है। रूस के उप विदेश मंत्री आंद्रे रुडेंको

ने हाल ही में कहा था कि इस साल उत्तर कोरियाई नेता किम जोंग-उन की रूस यात्रा की तैयारियां चल रही हैं। इससे पहले, गुरुवार को उत्तर कोरियाई नेता किम जोंग-उन को रूसी सरकार ने विजय दिवस की 80वीं वर्षगांठ के मौके पर एक पदक से सम्मानित किया। दूतावास के सोशल मीडिया पोस्ट के मुताबिक, यह पदक द्वितीय विश्व युद्ध में नाजी जर्मनी पर सोवियत संघ की जीत का प्रतीक है और इसे राष्ट्रपति पुतिन के निर्देश पर किम जोंग-उन को दिया गया। प्योंगयांग के मानसुडे असेंबली हॉल में एक पुरस्कार समारोह आयोजित किया गया, जहां रूसी राजदूत एलेक्जेंडर मात्सेगोरा ने उत्तर कोरिया की सुप्रीम पीपुल्स असेंबली की स्थायी समिति के उपाध्यक्ष कांग युन-सोक को पदक और प्रमाण पत्र सौंपा। प्रमाण पत्र में कहा गया है कि किम जोंग-उन को यह पदक उत्तर कोरिया में शहीद हुए और वहां दफनाए गए सोवियत सैनिकों की याद में उनके योगदान के लिए दिया गया है। यह पदक विजय दिवस से एक महीने पहले दिया गया, जो 9 मई को मनाया जाता है। रूस ने इससे पहले मई 2015 और मई 2020 में 70वीं और 75वीं वर्षगांठ के अवसर पर किम जोंग-उन को इसी तरह के पदक दिए थे।

इराक ने 2025 के पहले तीन महीनों में दो टन से अधिक नशीली दवाओं की जब्ती की

एजेंसी

बगदाद। इराक के गृह मंत्रालय ने 2025 में अब तक 2.156 टन नशीली दवाओं की जब्ती की घोषणा की। इस सफल अभियान के तहत, मंत्रालय ने नशीली दवाओं के खिलाफ अपनी

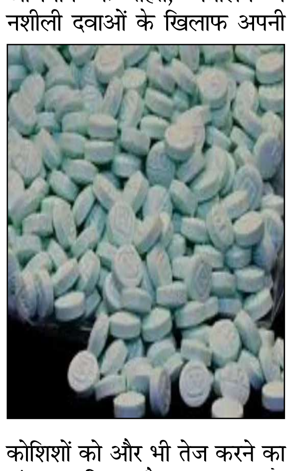

कोशिशों को और भी तेज करने का संकल्प लिया है।

म्यांमार-थाईलैंड भूकंप : मस्क ने बढ़ाया मदद का हाथ, स्टारलिंक किट की पेशकश की

एजेंसी

वाशिंगटन।म्यांमार थाईलैंड में भूकंप ने भारी तबाही मचाई है। ऐसी विषम स्थिति में दुनिया ने मदद का हाथ बढ़ाया है। इस बीच एक्स के मालिक एलॉन मस्क ने भी पेशकश की है। उनके मुताबिक ये आपदा की घड़ी में कम्युनिकेशन में मदद करेगा।

मस्क ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर एक पोस्ट के जरिए अपनी बात रखी। उन्होंने कहा, थाईलैंड और म्यांमार में भूकंप के कारण हुए नुकसान के बारे में सुनकर बहुत दुख हुआ। स्पेसएक्स की टीम संचार आवश्यकताओं और राहत प्रयासों में सहायता के लिए स्टारलिंक किट प्रदान करने के लिए तैयार है। दरअसल, स्टारलिंक एक सैटेलाइट कॉन्सटेबुल सिस्टम है जिसका उद्देश्य वैश्विक इंटरनेट कवरेज देना है। यह सिस्टम ग्रामीण और भौगोलिक रूप से अलग-थलग क्षेत्रों के लिए आदर्श है जहां इंटरनेट कनेक्टिविटी न के बराबर होती है। बता दें, 7.7 की तीव्रता वाले भूकंप के बाद म्यांमार स्थित नेशनल सेंटर फॉर सीस्मोलॉजी ने बताया कि शुक्रवार देर रात यहां रिक्टर स्केल पर 4.2 तीव्रता का एक और भूकंप आया। यह भूकंप दक्षिण-पूर्व एशिया के अधिकांश हिस्सों में आए 7.7 तीव्रता के शक्तिशाली भूकंप के कुछ घंटों बाद आया है। पहले भूकंप के बाद 150 से ज्यादा लोगों की मौत की पुष्टि हुई और सैकड़ों लोग घायल हुए। शुक्रवार को, म्यांमार सैन्य जुंटा ने शुक्रवार के विनाशकारी भूकंप के बाद छह क्षेत्रों में आपातकाल की स्थिति घोषित कर दी। अधिकारियों ने कहा कि म्यांमार और थाईलैंड में खोज और बचाव प्रयासों के चलते हताहतों की संख्या बढ़ने की आशंका

है। भूकंप से बैंकॉक में एक निर्माणाधीन ऊंची इमारत के ढहने से आठ लोगों की मौत हो गई और नौ घायल हो गए। पुलिस ने कहा कि 100 से अधिक लोग लापता हैं। 7.7 तीव्रता के भूकंप के बाद, थाईलैंड के प्रधानमंत्री पैटोंगटार्न शिनावात्रा ने बैंकॉक को आपातकालीन क्षेत्र घोषित कर दियाप्रधानमंत्री शिनावात्रा ने आंतरिक मंत्रालय को तुरंत बैंकॉक को आपातकालीन क्षेत्र घोषित करने और देश भर के प्रांतों को सूचित करने का निर्देश दिया कि वे स्थिति को राष्ट्रीय आपातकाल के रूप में देखें, ताकि जरूरत पड़ने पर तत्काल सार्वजनिक सहायता मिल सके। प्रधानमंत्री तुरंत बैंकॉक लौट रहे हैं और लोगों से ऊंची इमारतों से बचने, केवल सीढ़ियों का उपयोग करने और शांत रहने का आग्रह कर रहे हैं। सभी सरकारी एजेंसियों को जानकारी दे दी गई है और स्कूलों को बच्चों को जल्दी घर भेजने का निर्देश दिया गया है।

कौमी पत्रिका
संपादक-गुरचरन सिंह बब्बर
स्वामी मुद्रक एवं प्रकाशक, गुरचरन सिंह बब्बर ने कौमी पत्रिका प्रिंटिंग प्रेस, सेक्टर ए-4/ए-144 इंडस्ट्रीयल एरिया ट्रोनिका सिटी लोनी (गाजियाबाद), उत्तर प्रदेश से छापकर प्रकाशित किया।
Corporate Office:
5, Bahadurshah Zafar Marg
ITO, New Delhi-110002
फोन : 011-41509689, 23315814
मोबाइल नंबर : 9312262300
E - mail address :
qpatrika@gmail.com
Website: www.qaumipatrika.in
R.N.I. No.
UP-HIN/2007/21472
Legal Advisors:
Advocate Mohd. Sajid
Advocate Dr. A.P.Singh
Advocate Manish Sharma
Advocate Pooja Bhaskar Sharma

केदारनाथ मंदिर परिसर में वीडियो व रील बनाने पर प्रतिबंध

एजेंसी

देहरादून। उत्तराखंड में 30 अप्रैल से यमुनोत्री और गंगोत्री धाम के कपाट खुलने के साथ ही चारधाम यात्रा शुरू हो जाएगी। सरकारी स्तर पर यात्रा की तैयारियां जोरों पर है। इसी बीच केदारनाथ-बदरीनाथ पंडा समाज ने केदारनाथ मंदिर परिसर में वीडियो और रील बनाने पर पूरी तरह रोक लगाने का निर्णय लिया है। पंडा समाज के अनुसार, यदि कोई व्यक्ति मंदिर परिसर में वीडियो या रील बनाता हुआ पाया गया, तो उसे दर्शन किए बिना ही वापस भेज दिया जाएगा और भविष्य में प्रवेश पर भी रोक लगाई जा सकती है। इस संबंध में प्रशासन को भी पत्र भेजकर सूचना दी गई है। केदारनाथ सभा के अध्यक्ष राजकुमार तिवारी ने बताया कि पिछले साल यात्रा के दौरान वीडियो और रील बनाने वालों की भीड़ बढ़ गई थी। ग्लेशियर के ठीक नीचे, 12,000 फीट की ऊंचाई पर स्थित केदारनाथ धाम में ढोल-नगाड़ों के शोर के साथ वीडियो शूट किए गए, जिससे उच्च हिमालयी क्षेत्र के पर्यावरण पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा और यात्रियों को भी असुविधा हुई। उन्होंने स्पष्ट किया कि इस बार केदारनाथ धाम में बैक डोर एंट्री भी पूरी तरह से बंद रहेगी, जिससे मंदिर की पवित्रता और श्रद्धालुओं की सुविधा सुनिश्चित की जा सके।

लॉक्स केरोसीन 200 टी थ्रस्ट सेमी-क्रायोजेनिक इंजन का पहला सफल परीक्षण पूरा

नई दिल्ली। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने एक और बड़ी सफलता दर्ज की। इसरो ने लॉक्स केरोसीन 200 टी थ्रस्ट सेमी-क्रायोजेनिक इंजन का पहला बड़ा सफल परिक्षण सफलतापूर्वक पूरा कर लिया है। इसरो सेमी-क्रायोजेनिक इंजन विकसित कर रहा है। इसका मकसद प्रक्षेपण यान मार्क-3 (एलवीएम3) की पेलोड क्षमता बढ़ाना है। केन्द्रीय मंत्री डॉ जितेन्द्र सिंह ने ट्वीट करके जानकारी दी कि इसरो ने अपनी अंतरिक्ष मिशन क्षमताओं को अगले स्तर तक बढ़ाने में एक और कामयाबी दर्ज कर ली है। लॉक्स केरोसीन 200 टी थ्रस्ट सेमी-क्रायोजेनिक इंजन का पहला बड़ा हॉट टेस्ट सफलतापूर्वक पूरा हो गया है। सफल परीक्षण की जानकारी देते हुए केंद्रीय मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह ने कहा कि लॉक्स केरोसीन 200 टी थ्रस्ट सेमी-क्रायोजेनिक इंजन का भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) द्वारा नई सुविधा में सफलतापूर्वक परीक्षण किया गया, जिसे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने तिरुवनंतपुरम की अपनी यात्रा के दौरान राष्ट्र को समर्पित किया।

आवारा पशुओं के संरक्षण के लिए सशक्त बिल लाएगी दिल्ली सरकारः आशीष सूद

नई दिल्ली। दिल्ली सरकार शीघ्र ही आवारा पशुओं के संरक्षण के लिए सशक्त बिल लाएगी। गृह मंत्री आशीष सूद ने दिल्ली विधानसभा में प्राइवेट मेंबर बिल पर चर्चा में यह घोषणा की है। उन्होंने बताया कि इस बिल में सभी हितधारकों और विधानसभा के सदस्यों के सुझावों को भी शामिल किया जाएगा। गौमाता को क्रूरता से बचाने के लिए प्रस्ताव के संबंध में सूद ने कहा कि यह प्रस्ताव गौमाता की सुरक्षा से ही संबंधित नहीं है बल्कि यह पूरे सदन की भावनाओं और दिल्ली की जनता की भावनाओं से भी जुड़ा हुआ है। जो हमारी सनातन संस्कृति से अनुरूप भी है। सदन का हर सदस्य इस मुद्दे के साथ पूरी तरह से भावनात्मक और नैतिक रूप से भी जुड़ा हुआ है। इस प्रस्ताव में मंत्री ने बताया कि माफिया द्वारा गौमाता को प्रताड़ित करने के लिए बेहद सख्त कानून बनाया जा रहा है, जिससे अवैध पशु व्यापार पर भी रोक लगेगी। इस प्रस्ताव को और अधिक प्रभावशाली और सख्त बनाने के लिए इसमें भारतीय दंड संहिता (बीएनएस) की धाराओं के साथ-साथ दिल्ली नगर निगम और लोक निर्माण विभाग के सुझावों को भी शामिल किया जाएगा। गृह मंत्री ने यह भी बताया कि हमारी सरकार गौमाता के संरक्षण और क्रूरता से बचाने के लिए पूरी तरह से प्रतिबद्ध है। इस संदर्भ में हमारी सरकार ने दिल्ली में गौमाता की उचित देखभाल और सुरक्षा करने के लिए नई गौशालाओं का निर्माण करने के लिए दिल्ली के 2025-26 के बजट में अलग से उचित प्रावधान भी किया है।

केजरीवाल ने म्यांमार व थाईलैंड में आए भूकंप पर जताई चिंता

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी (आआपा) के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने म्यांमार और थाईलैंड में आए शक्तिशाली भूकंप के बाद वहां के हालात पर चिंता जतायी है। उन्होंने वहां के लोगों की सुरक्षा के लिए प्रार्थना की। अरविंद केजरीवाल ने सोशल मीडिया एक्स पर पोस्ट में प्रभावित लोगों की सुरक्षा के लिए प्रार्थना की। उन्होंने कहा कि म्यांमार और थाईलैंड में शक्तिशाली भूकंप आया है। प्रभावित सभी लोगों की सुरक्षा और भलाई के लिए प्रार्थना करता हूं। उल्लेखनीय है कि म्यांमार और थाईलैंड में 7.7 तीव्रता का भूकंप आया। भूकंप का केंद्र म्यांमार में जमीन के दस किलोमीटर नीचे था। इस भूकंप के झटके थाईलैंड और चीन तक महसूस किए गए। भूकंप के कारण बैंकॉक में कई ऊंची इमारतें गिर गई। बड़ी संख्या में जन-धन की हानि हुई है।

किसानों का डेटा पूरी तरह सुरक्षित, योजनाओं का लाभ उठाने में मददगारः शिवराज सिंह

एजेंसी

नई दिल्ली। केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने देश के किसानों को आश्वस्त किया है कि उनका डेटा राज्यों के पास पूरी तरह से सुरक्षित है। किसानों का डेटा उनकी सहमति के बिना साझा नहीं किया जा सकता। डिजिटल धोखाधड़ी और किसानों के डाटा के दुरुपयोग को रोकने के लिए सरकार द्वारा अनेक उपाय किए गए हैं। राज्यसभा में प्रश्नकाल के दौरान सवालों का जवाब देते हुए केंद्रीय मंत्री ने उपन्यासकार श्रीलाल शुक्ल के राग दरबारी के एक किसान पात्र लंगड़ का जिक्र किया, जिसे अधिकारियों के तमाम चक्कर काटने के बाद भी खेत की नकल नहीं मिल पाती। उन्होंने कहा कि उस पात्र के माध्यम से लेखक ने किसानों की समस्याओं को जिस तरह से दर्शाया, उसे कांग्रेस सरकार नहीं समझ सकी लेकिन प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने

समझा। उसी का नतीजा है कि डिजिटल कृषि मिशन बनाकर किसान की सारी दिक्कतें समाप्त करने का फैसला किया। उन्होंने बताया कि किसान रजिस्ट्री को राज्य में राजस्व रिकार्ड से जोड़ा गया है, जिससे वह तत्काल अपडेट हो सके। ताकि जमीन की वास्तविक स्थिति की जानकारी रहे। मंत्री ने बताया कि अगर किसी किसान ने अपनी जमीन किसी और को बेच दी तो तत्काल किसान रजिस्ट्री में अपडेट हो जाएगा। उन्होंने कहा कि हालांकि, किसान रजिस्ट्री के दौरान कुछ समस्याएं आती हैं लेकिन उनके समाधान के लिए शिकायत निवारण तंत्र कार्य करता है। इसमें किसान मोबाइल या वेब एप्लिकेशन का उपयोग कर शिकायत दर्ज कर सकते हैं। कृषि मंत्री ने कहा कि डिजिटल क्रांति से सेवाओं में और योजनाओं का लाभ देने में क्रांतिकारी परिवर्तन किया जा सकता है। एक प्रधानमंत्री थे, जो कहते थे कि 1 रुपये भेजता हूं तो केवल 15 पैसे पहुंचता है लेकिन आज हमारे प्रधानमंत्री मोदी बिहार के भागलपुर में एक बटन दबाते हैं तो 9 करोड़ 80 लाख किसानों के खाते में सीधा पैसा पहुंच जाता है। किसान सामने मोबाइल दिखाकर कहता है कि पैसा खाते में आ गया, ये डिजिटल क्रांति के कारण संभव हुआ है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी ने देश के किसानों को किसान पहचान पत्र के रूप में बहुत उपयोगी सौगात दी है।

समुद्री माल परिवहन विधेयक, 2024 को मंजूरी

एजेंसी

नई दिल्ली। लोकसभा में समुद्र के रास्ते माल ढुलाई के नियमों को आधुनिक और सरल बनाने से जुड़े विधेयक को मंजूरी प्रदान कर दी गई। समुद्री माल परिवहन विधेयक, 2024 को चर्चा के बाद आज ध्वनिमत से पारित कर दिया गया।

विधेयक इसी से जुड़े 1925 के अधिनियम का स्थान लेगा। यह विधेयक भारत के एक बंदरगाह से दूसरे या दुनिया के किसी बंदरगाह में माल ढुलाई से जुड़ी जिम्मेदारियों, अधिकारों सुरक्षा और देनदारियों को तय करता है। विधेयक पर हुई चर्चा का संक्षिप्त जवाब देते हुए केंद्रीय बंदरगाह, जहाजरानी एवं जलमार्ग मंत्री सर्वानंद सोनोवाल ने कहा कि नया कानून औपनिवेशिक काल के कानून को खत्म करने और व्यापार करने में आसानी सुनिश्चित करने की सरकार की व्यापक पहल का हिस्सा है। उन्होंने कहा कि विधेयक को लाते समय सभी हितधारकों का पक्ष लिया गया है और हमारा उद्देश्य कानून को सरल करना है।

दिल्ली पुलिस ने अरविंद केजरीवाल के खिलाफ अदालत में अनुपालन रिपोर्ट दाखिल की

एजेंसी

नई दिल्ली। दिल्ली पुलिस ने दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल और अन्य के खिलाफ कथित तौर पर सार्वजनिक धन का दुरुपयोग करने और दिल्ली संपत्ति विरूपण रोकथाम अधिनियम के प्रावधानों का उल्लंघन करने के आरोप में प्राथमिकी दर्ज करने के बाद स्थानीय अदालत के समक्ष अनुपालन रिपोर्ट दाखिल की।

अतिरिक्त मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट नेहा मित्तल ने 11 मार्च को अपने आदेश में पुलिस को संपत्ति विरूपण रोकथाम अधिनियम के उल्लंघन का आरोप लगाने वाली अर्जी पर प्राथमिकी दर्ज करने और अदालत के समक्ष अनुपालन रिपोर्ट दाखिल करने का निर्देश दिये थे। अर्जी में अदालत ने बड़े आकार के बैनर लगाने के लिए मटियाला के पूर्व विधायक गुलाब सिंह और द्वारका वार्ड की तत्कालीन पार्षद नितिका शर्मा के खिलाफ भी प्राथमिकी दर्ज करने का निर्देश दिया था। शिकायकर्ता शिव कुमार सक्सेना ने वर्ष 2019 में आवेदन दायर कर आरोप लगाया था कि श्री केजरीवाल, गुलाब सिंह (आप) और पार्षद सुश्री शर्मा ने सेक्टर 11, डीडीए पार्क, द्वारका और सेक्टर 10,

द्वारका मुख्य क्रॉसिंग और बिजली के खंभों, डीडीए पार्क और अन्य सार्वजनिक स्थानों पर बड़े आकार के होर्डिंग्स लगाकर जानबूझकर जनता के पैसे का दुरुपयोग किया है। अदालत ने मामले की अगली सुनवाई 18 अप्रैल के लिए स्थगित कर दी है।

वन नेशन-वन इलेक्शन की संयुक्त संसदीय समिति के अध्यक्ष पीपी चौधरी ने की प्रधानमंत्री मोदी से मुलाकात

एजेंसी

नई दिल्ली। वन नेशन-वन इलेक्शन की संयुक्त संसदीय समिति के अध्यक्ष एवं पाली (राजस्थान) से सांसद पीपी चौधरी ने नई दिल्ली में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से मुलाकात की। सांसद चौधरी ने इस शिष्टाचार भेंट में प्रधानमंत्री मोदी को ''एक राष्ट्र-एक चुनाव'' (वन नेशन-वन इलेक्शन) जेपीसी द्वारा ली गई बैठकों की संक्षिप्त जानकारी दी। इस अवसर पर चौधरी ने प्रधानमंत्री मोदी की पारंपरिक लघु चित्रकला की एक विशेष तस्वीर भेंट की। इस तस्वीर को मां चामुण्डा सेल्फ ग्रुप द्वारा बनाया गया, जोकि आदिवासी भील समाज की महिलाओं का समूह है। प्रधानमंत्री मोदी से हुई भेंट की तस्वीर को सांसद चौधरी ने अपने सोशल मीडिया एकाउंट एक्स पर साझा करते हुए इसे भावुक क्षण बताया। उन्होंने लिखा कि प्रधानमंत्री मोदी

के दूरदर्शी नेतृत्व ने भारत के वैश्विक कद को बढ़ाया है और सभी क्षेत्रों में विकास को नई गति दी है। हमेशा की तरह, आपने गर्मजोशी एवं स्नेह दिखाया और राष्ट्रसेवा का अमूल्य मार्गदर्शन दिया। प्रधानमंत्री जी से मिलकर हृदय भावुक हुआ। आपके उदात्त सानिध्य में विकसित भारत निर्माण के लिए काम करना जीवन का सबसे बड़ा सौभाग्य है। अपना बहुमूल्य समय देने के लिए आपका हृदय की गहराईयों से आभार।' चौधरी ने कहा कि वे प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में विकसित भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए वे निरंतर प्रयासरत रहेंगे। इससे पहले सांसद चौधरी राष्ट्रपति दौपद्री मुर्मु के आमंत्रण पर राष्ट्रपति भवन में आयोजित अल्पाहार कार्यक्रम में भी शामिल हुए। इस अवसर पर राजस्थान एवं एनडीए से जुड़े कई अन्य सांसद भी मौजूद रहे।

एनडीएमसी ने संपत्ति कर संग्रह केंद्र को 29 से 31 मार्च तक खोलने का किया फैसला

नई दिल्ली। नई दिल्ली नगरपालिका परिषद (एनडीएमसी) ने वित्तीय वर्ष 2024-2025 के अंत में नागरिकों को अपना कर जमा करने की सुविधा प्रदान करने के लिए 29 से 31 मार्च तक अपने संपत्ति कर संग्रह केंद्र खोलने की घोषणा की। नगरपालिका परिषद जारी एक बयान में कहा कि करदाताओं को कर और बकाया राशि जमा करने में सुविधा प्रदान करने तथा जमा किए जाने वाले बकाया राशि के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए कर अधिकारियों से बातचीत करने का अवसर प्रदान करने हेतु, नई दिल्ली नगरपालिका परिषद (एनडीएमसी) ने शनिवार से सोमवार तक यानी 29 से 31 मार्च तक अपने संपत्ति कर संग्रह काउंटरों के साथ-साथ टैक्स कार्यालय को खोलने का निर्णय लिया है।

एनडीएमसी ने घोषणा की है कि मुख्यालय में टैक्स विभाग - संसद मार्ग स्थित पालिका केंद्र तथा नई दिल्ली क्षेत्र में विभिन्न स्थानों - गोल मार्केट, आरके पुरम और संसद मार्ग पर तीन टैक्स संग्रह काउंटर संपत्ति कर संग्रह के लिए वित्तीय वर्ष 2024-2025 की समाप्ति के कारण शनिवार से सोमवार तक यानी 29 से 31 मार्च तक खुले रहेंगे। ये टैक्स जमा काउंटर एनडीएमसी क्षेत्र के निवासियों, बिजली और पानी के उपभोक्ताओं से उनके बकाया बिजली और पानी के बिलों और एस्टेट संपत्तियों के बकाए के लिए भुगतान भी स्वीकार करेंगे। उन्होंने बताया कि एनडीएमसी क्षेत्र के करदाता अपनी सुविधा के अनुसार ऑनलाइन मोड के माध्यम से भी अपना टैक्स जमा कर सकते हैं। एनडीएमसी ने करदाताओं से अनुरोध करते हुए कहा कि वे एनडीएमसी को अपने संपत्ति कर का भुगतान करें ताकि यह अपने निवासियों को विश्व स्तरीय नागरिक सेवाएं प्रदान करने में सक्षम हो सके।

श्रम एव जयते
NDMC
नई दिल्ली नगरपालिका परिषद्

ऑटो में तस्करी कर लाई जा रही शराब पकड़ी, तस्कर गिरफ्तार

नई दिल्ली। द्वारका इलाके में ऑटो में शराब की तस्करी का खुलासा कर पुलिस ने एक तस्कर को गिरफ्तार किया है। आरोपित की पहचान दीपक के रूप में हुई है। उसके कब्जे से 9 पेटी शराब बरामद हुई।

भविष्य की चुनौतियों से निपटने के लिए सेनाओं में तालमेल जरुरी : सेना प्रमुख

एजेंसी

नई दिल्ली। सेना प्रमुख जनरल उपेंद्र द्विवेदी ने भविष्य की जरूरतों को देखते हुए सेना में बदलाव के पांच स्तंभों पर जोर दिया है जिसमें प्रौद्योगिकी अवशोषण, संरचनात्मक परिवर्तन, मानव संसाधन विकास और तीनों सेवाओं के बीच सामंजस्य बढ़ाना शामिल है। सेना प्रमुख ने कॉलेज ऑफ डिफेंस मैनेजमेंट (सीडीएम), सिकंदराबाद में उच्च रक्षा प्रबंधन पाठ्यक्रम के अधिकारियों को समापन भाषण देते हुए भविष्य के लिए तैयार लड़ाकू बल बनने के लिए भारतीय सेना का समग्र रोडमैप रखा। जनरल द्विवेदी ने भविष्य की जटिल चुनौतियों का सामना करने में सक्षम तकनीकी रूप से उन्नत, अनुकूलनीय और आत्मनिर्भर बल बनने के लिए सेना की प्रतिबद्धता पर प्रकाश डाला। उन्होंने प्रक्रिया संचालित दृष्टिकोण से परिणाम संचालित दृष्टिकोण की ओर बढ़ने और प्रदर्शन के पैमाने से प्रभावशीलता के पैमाने में बदलाव की जरूरत पर बल दिया। उन्होंने सेना के परिवर्तनकारी लक्ष्यों को रेखांकित किया और परिवर्तन के युग, समेकन के युग और नियंत्रण के युग के तीन चरणों पर विचार-विमर्श किया। इस कार्यक्रम में सशस्त्र बलों के 167 अधिकारियों द्वारा प्रमुख उच्च रक्षा प्रबंधन पाठ्यक्रम को सफलतापूर्वक पूरा किया गया, जिसमें मित्र देशों के 14 अधिकारी शामिल थे।

एचडीएमसी एक प्रमुख कार्यक्रम है, जिसे वरिष्ठ सैन्य अधिकारियों को रणनीतिक दूरदर्शिता, प्रबंधन विशेषज्ञता और उच्च रक्षा प्रबंधन और नीति निर्धारण भूमिकाओं के लिए महत्वपूर्ण निर्णय लेने की क्षमता से लैस करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। सीओएएस ने सशस्त्र बलों के परिवर्तन से लेकर राष्ट्र निर्माण की दिशा में भूमिका और जिम्मेदारियों तक कई महत्वपूर्ण मुद्दों पर भविष्य के रणनीतिक नेताओं को संबोधित किया। उन्होंने स्नातक अधिकारियों को कल्पनाशील होने और अपनी क्षमता को चैनलाइज़ करने और भविष्य की चुनौतियों से निपटने के लिए सत्य, विश्वास और पारदर्शिता के सिद्धांतों को आत्मसात करने के लिए दृष्टिकोण और अनुकूलनशीलता विकसित करने का आह्वान किया। मान्यता के प्रतीक के रूप में उन्होंने उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए मेधावी अधिकारियों को सम्मानित किया ।

NAME CHANGE
I, JC-811948Y, Rank-SUB MAJ Name-SURENDER SINGH Presently residing at VPO-DULOTH AHIR, TEHSIL & DISTT-MAHENDERGARH, HARYANA-123029, have changed my wife's name from SAROJ to SAROJ DEVI for all future purposes vide Affidavit dated 29/03/2025 before Notary Public, Delhi.

NAME CHANGE
I, SAVITRI DEVI Wife of No. 4201194H Rank-HAV Name-MAHENDRA SINGH AIR Presently residing at VILL-KHATEL KHANDA KHAM, PO+TEH-KHATIMA, DIST-UDHAM SINGH NAGAR, UTTARAKHAND-262308, have changed my name from SAVITRI DEVI to SAVITRI for all future purposes and in my husband's service records my date of birth wrongly mentioned as 22/07/1989 instead of my correct date of birth as 20/02/1990 vide Affidavit dated 29/03/2025 before Notary Public, Delhi.

NAME CHANGE
I, C UMA LAKSHMI Wife of No. 15322315P Rank-HAV Name-JUSTIN P Presently residing at 5/76, AALUVILAI, PUNKARAI, KALKULAM, PO-THIRUVITHANCODE, DIST-KANYAKUMARI, TAMIL NADU-629174, have changed my name from C UMA LAKSHMI to UMA LAKSHMI C for all future purposes vide Affidavit dated 29/03/2025 before Notary Public, Delhi.

NAME CHANGE
I, LIPIKA MANDAL Wife of No. 15704666P Rank-SIGMN Name-SOUMITRA MANDAL Presently residing at VILL-LAHARAPARA, PO-BRAMHANPARA, TEH-KANDI, DIST-MURISHIDABAD, WEST BENGAL-742138, have changed my name from LIPIKA MANDAL to LIPIKA MONDAL for all future purposes vide Affidavit dated 29/03/2025 before Notary Public, Delhi.

NAME CHANGE
I, AMMAVASAI Father of JC-441245Y Rank-SUB Name-BALAKRISHNAN A Presently residing at VILL-KALPOONDI, PO+TEH-KILPENNATHUR, DIST-TIRUVANNAMALAI, TAMIL NADU-604601, have changed my name from AMMAVASAI to AMAVASAI NARAYANAN for all future purposes and in my son's service records my date of birth wrongly mentioned as 10/02/1946 instead of my correct date of birth as 03/04/1941 vide Affidavit dated 29/03/2025 before Notary Public, Delhi.

NAME CHANGE
I, A AMUTHA Wife of JC-313461F Rank-SUB Name-G KUMARAN Presently residing at VILL-V MOTTOOR, PO-VEERICHETTYPALLI, PS-PARADARAMI, TEH-GUDIYATTAM, DIST-VELLORE, TAMIL NADU-632603, have changed my name from A AMUTHA to A AMUDHA for all future purposes vide Affidavit dated 29/03/2025 before Notary Public, Delhi.

NAME CHANGE
I, No. 4201194H Rank-HAV Name-MAHENDRA SINGH AIR Father of MAHIRA AIR Presently residing at VILL-KHATEL KHANDA KHAM, PO+TEH-KHATIMA, DIST-UDHAM SINGH NAGAR, UTTARAKHAND-262308, have changed my minor daughter's name from MAHIRA AIR to AADHYA AIR for all future purposes vide Affidavit dated 29/03/2025 before Notary Public, Delhi.

NAME CHANGE
I hitherto known as Gyan chand alias Sonu Gola S/O Om Prakash, R/O ? NO- 105-106, F-2-Block, Mangol Puri, North West Delhi, Delhi - 110083,have changed my name and shall hereafter be known as Gyan chand.

NAME CHANGE
I, RUDRAPPA Mother of No-16134126K Rank-SPR Name-KALMESH R PATIL residing at 1/30, PATIL GALLI GUNDYANATTI, BAILUR, KHANAPUR, BELGAUM, KARNATAKA-591106, have changed my name from RUDRAPPA to RUDRAPPA GUPPANNI for all future purposes vide Affidavit dated 29/03/2025 before Notary Public, Delhi.

NAME CHANGE
I, No. 15704666P Rank-SIGMN Name-SOUMITRA MANDAL Father of TINA MANDAL Presently residing at VILL-LAHARAPARA, PO-BRAMHANPARA, TEH-KANDI, DIST-MURISHIDABAD, WEST BENGAL-742138, have changed my minor daughter's name from TINA MANDAL to TINA MONDAL for all future purposes vide Affidavit dated 29/03/2025 before Notary Public, Delhi.

NAME CHANGE
I, GANGAGAVVA BHOPANNT Father No-16134126K Rank-SPR Name-KALMESH R PATIL residing at 1/30, PATIL GALLI GUNDYANATTI, BAILUR, KHANAPUR, BELGAUM, KARNATAKA-591106, have changed my name from GANGAGAVVA BHOPANNT to GANGAVVA BHOPANNI for all future purposes vide Affidavit dated 29/03/2025 before Notary Public, Delhi.

सार्वजनिक सूचना
सर्व साधारण को यह सूचित किया जाता है की मेरे मुवक्किल श्री बिजेंद्र सिंह पुत्र श्री रंग लाल व मुवक्किला श्रीमती सुनीता देवी पत्नी श्री बिजेंद्र सिंह, निवासी 170, जसोला गाँव, जामिया नगर ओखला, दिल्ली-110025 ने अपने पुत्र सन्नी व उसकी पत्नी गुनगुन को मेरे मुवक्किल व मुवक्किला के साथ आए दिन दुर्वयहवार करने, आपस में लड़ाई झगड़ा करने और मनमाने चाल चलन के कारण अपनी समस्त चल व अचल संपत्ति से बेदखल कर दिया है, इसलिए यह दोनों मुवक्किल व मुवक्किला से अपने सारे रिश्ते नातो से संबंध विच्छेद करके अपनी मर्जी से घर छोड़के जा चुके है। अब भविष्य में अपने पुत्र सन्नी व पुत्रवधू गुनगुन के किसी भी कृत्य, लड़ाई झगड़ा, कानूनी कार्यवाही, आपसी मुकदमेबाज़ी व लेनदेन में मेरे मुवक्किल व मुवक्किला और इनका परिवार जिम्मेदार नहीं होगा।
विजय प्रताप सिंह अधिवक्ता
चैम्बर न. 614, साकेत कोर्ट, नई दिल्ली

PUBLIC NOTICE
TO WHOM SO EVER IT MAY CONCERN
Mrs. Shamim Begum W/o Mr. Nain Khan, is the absolute owner of Plot No. 63, area measuring 45 Sq. Yds., (i.e., 37.62 Sq. Mts) Out of Khasra No. 550, situated at residential Colony Ikram Park, Village Loni (Outside Chakbandi), Pargana and Tehsil Loni, Distt. Ghaziabad, U.P.
Mrs. Shamim Begum W/o Mr. Nain Khan has misplaced the Original Will dated 31.08.2009, Original Notarized Agreement to Sell dated 06.01.2010 and Will dated 06.0.2010 and Original General Power of Attorney, Agreement to Sell and Will dated 21.06.2011. An FIR regarding the loss has been lodged on 26.03.2025. Any individual or entity in possession of the aforementioned Original Will dated 31.08.2009, Original Notarized Agreement to Sell dated 06.01.2010 and Will dated 06.0.2010 and Original General Power of Attorney, Agreement to Sell and Will dated 21.06.2011is requested to return it at the earliest. Kindly contact
Advocate Deepak Malik at +91-9540419009/95404190091 within 7 days from the date of this notice
Deepak Malik (Advocate)
Shop no. 2, First Floor Kataria complex, Near Axis Bank, New Railway Road, Gurugram-122001
Ph: 9540419009
Email - Advocatedeepak9009@gmail.com

PUBLIC NOTICE
It is to inform to the public at large that Mrs. Neetu Devi W/o Mr. Trilok Kumar is the owner of Residential House built on Plot No. 45, area measuring 50 Sq. yards, i.e. 41.81 Sq. Meters, out of Khasra No. 1070, Situated at Mohalla Preet Vihar Colony, Village Dadri, Pargana & Tehsil Dadri, Distt. Gautam Budh Nagar, U.P.-203207 vide Sale Deed Dated 08.03.2022 (Doc. No.8243) executed by Mrs. Geeta and same to be finance & mortgage by Hinduja Housing Finance Ltd., having its Branch at Loni, U.P. That, Original Sale Deed Dated 29.10.2001 executed by Mr. Anil Kumar in favour of Mr. Sukhpal Singh, vide Doc. No. 4404, Book No. 01, Volume No. 7122, On Pages No. 07-22, On Dated 29.10.2001, SRO-Dadri has lost/misplaced. So, to comply the requirements of BANK/NBFC, we give this public notice that if any Person having any type of claim /right/title/interest/creating mortgage over the said property, may inform in writing, at the address mentioned below, about his objections, within a week from today, failing which it shall be presumed that the said property is free from all type of Encumbrances, lien etc.
Advocate Abhishek Singh
A-2/367, Nand Nagri, Near GTB Enclave, SDM Court Nand Nagri, Delhi-110093
Mobile: 7706007066
Email: advabhisingh1993@gmail.com

सार्वजनिक सूचना
सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि कि श्री दीपक तिवारी का एक आईडी कार्ड कोटक महिंद्रा प्राइम लिमिटेड बैंक आईडी कार्ड नं 16926, 28-03-2025 को लापता और/या खो गया है। किसी को भी, जो आईडी कार्ड पाता है, से अनुरोध किया जाता है कि वह उक्त आईडी कार्ड को कोटक महिंद्रा प्राइम लिमिटेड बैंक प्लॉट 7 सेक्टर 125 नोएडा पिन कोड 201313 पर लौटा दे। कोटक महिंद्रा प्राइम लिमिटेड बैंक के सभी ग्राहकों को यह सूचित किया जाता है कि वे किसी भी अनधिकृत व्यक्ति को आईडी कार्ड नं 16926 पर कोई भुगतान न करें। कृपया ध्यान दें कि आईडी कार्ड रखने वाले किसी भी व्यक्ति को भुगतान करने वाला व्यक्ति अपनी लागत, और जोखिम पर ऐसा करेगा और कोटक महिंद्रा प्राइम लिमिटेड बैंक किसी भी भुगतान के लिए बाध्य और/या जिम्मेदार नहीं होगा।
कोटक महिंद्रा प्राइम लिमिटेड बैंक
दिनांक : 29.03.2025
स्थान : नोएडा,उ०प्र०

अभियुक्त व्यक्ति की हाजिरी की अपेक्षा करने वाली उद्घोषणा

धारा 82 Cr. P.C. देखिए

मेरे समक्ष परिवाद किया नामः **आरिश, पुत्रः अब्दुल गफ्फार, निवासीः बी-ब्लॉक, हसन मस्जिद, भोपरा, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश** ने अपराध किया है (या किए जाने का संदेह है) **FIR No. 472/2022 Dt.13.07.2022 U/S 356/379/411/34 IPC** के तहत एक मामला **थाना पटपड़गंज औद्योगिक क्षेत्र, पूर्वी जिला, दिल्ली** में दर्ज किया गया है किया है (या किए जाने का संदेह है) और उसके बाद जारी गिरफ्तारी वारंट को यह कहते हुए वापस कर दिया गया कि अभियुक्त **आरिश** नहीं मिला या मेरी संतुष्टि के लिए दिखाया गया है कि आरोपी **आरिश** फरार हो गया है (या उक्त वारंट कि तामील से बचने के लिए अपने आप को छिपा रहा है)।

इसलिए इसके द्वारा उद्घोषणा कि **FIR No. 472/2022 Dt.13.07.2022 U/S 356/379/411/34 IPC, थाना पटपड़गंज औद्योगिक क्षेत्र, पूर्वी जिला, दिल्ली** के आरोपी उक्त **आरिश** को उक्त शिकायत का जवाब देने के लिए दिनांक **31.05.2025** को या उससे पहले अदालत के समक्ष उपस्थित होना आवश्यक है।

आदेशानुसार श्री पी. भार्गव राव
न्यायिक मजिस्ट्रेट प्रथम श्रेणी-05, पूर्वी जिला, कमरा नं. 03, कड़कड़डूमा कोर्ट, दिल्ली

DP/3955/ED/2025
(अदालती मामला)

अभियुक्त व्यक्ति की हाजिरी की अपेक्षा करने वाली उद्घोषणा

धारा 82 CrPC देखिए

मेरे समक्ष परिवाद किया गया है कि अभियुक्त **पिंटू पुत्र** चुन्नी, **निवासी** 476, भीमनगर, गाजियाबाद (उ.प्र.), ने **CC No. 1231/2018, U/S 138 NI Act, पुलिस स्टेशन करोल बाग, सेंट्रल जिला, दिल्ली,** के अधीन दंडनीय अपराध किया है (या संदेह है कि उसने किया है) और उस पर जारी किया गया गिरफ्तारी के वारंट को यह लिख कर लौटा दिया गया है कि उक्त अभियुक्त **पिंटू** मिल नहीं रहा है और मुझे समाधानप्रद रूप में दर्शित कर दिया गया है कि उक्त अभियुक्त **पिंटू** फरार हो गया है (या उक्त वारंट की तामील से बचने के लिए अपने आप को छिपा रहा है)

इसलिए इसके द्वारा उद्घोषणा की जाती है कि **CC No. 1231/2018, U/S 138 NI Act, पुलिस स्टेशन करोल बाग, सेंट्रल जिला, दिल्ली,** के उक्त अभियुक्त **पिंटू** से अपेक्षा की जाती है कि वे इस न्यायालय के समक्ष (या मेरे समक्ष) उक्त परिवाद का उत्तर देने के लिए दिनांक **05.05.2025** को या इससे पहले हाज़िर हो।

आदेशानुसार
सुश्री श्रेया सिंह
न्यायिक मजिस्ट्रेट प्रथम श्रेणी-05, (एनआई एक्ट) तीस हजारी कोर्ट, दिल्ली

DP/3925/CD/2025
(Court Matter)

ऑनलाइन फ्रॉड के खिलाफ 1930 पर दर्ज कराएं शिकायतः एसडीएम

एजेंसी

महेंद्रगढ़। एसडीएम अनिल कुमार यादव ने कहा कि वर्तमान डिजिटल युग में इंटरनेट बैंकिंग, ऑनलाइन शॉपिंग और डिजिटल भुगतान का चलन तेजी से बढ़ रहा है। उन्होंने सोशल मीडिया के दौर में बढ़ते साइबर वित्तीय धोखाधड़ी के मामलों को देखते हुए आमजन से आग्रह किया कि वे ऐसे मामलों की तुरंत सूचना देने के लिए केंद्रीय गृह मंत्रालय द्वारा संचालित हेल्पलाइन नंबर 1930 पर संपर्क करें। एसडीएम ने कहा कि हाल के वर्षों में ऑनलाइन शॉपिंग का क्रेज बढने के कारण लोग अक्सर सोशल मीडिया पर मिलने वाले भारी छूट, लॉटरी या इनाम से जुड़े विज्ञापनों के झांसे में आ जाते हैं। ऐसे में जरूरी है कि पहले यह जांच लें कि जिस वेबसाइट का उपयोग किया जा रहा है, वह सुरक्षित है या नहीं। उन्होंने सुझाव दिया कि यदि संभव हो तो ऑनलाइन खरीदारी करते समय कैश ऑन डिलीवरी का विकल्प चुनें, ताकि आपकी बैंक और कार्ड संबंधी जानकारी साइबर अपराधियों के हाथों में न जाए। एसडीएम ने कहा कि यदि किसी कारणवश आप साइबर धोखाधड़ी का शिकार हो जाते हैं, तो सबसे पहले हेल्पलाइन नंबर 1930 पर कॉल करें और अपनी शिकायत साइबर क्राइम रिपोर्टिंग पोर्टल पर दर्ज कराएं। उन्होंने जिले के युवाओं से आग्रह किया कि वे साइबर अपराधों के प्रति सतर्क रहें और अपने परिवार के सदस्यों को भी इसके बारे में जागरूक करें।

जीएमडीए द्वारा सेक्टर 106/109 की डिवाइडिंग रोड पर चलाया गया डेमोलेशन अभियान

गुरुग्राम। गुरुग्राम महानगर विकास प्राधिकरण (जीएमडीए) ने सेक्टर 106/109 के मास्टर डिवाइडिंग रोड पर डेमोलेशन अभियान चलाया। अतिक्रमण के विरूद्ध आगे की कार्रवाही करते हुए लगभग 50 होर्डिंग्स/विज्ञापन बोर्ड, 20 झुग्गियां, 10 ठेले, 3 मीट की दुकानें, 4 नर्सरी, 3 गैराज और 7 ढाबे ध्वस्त कर दिए गए तथा लगभग 2 किलोमीटर क्षेत्र को अतिक्रमण से मुक्त कराया गया। इस अभियान का नेतृत्व गुरुग्राम में अतिक्रमण हटाने के नोडल अधिकारी श्री आर.एस. बाठ और डीटीपी जीएमडीए ने जीएमडीए की इंफोर्समेंट विंग के अधिकारियों के साथ किया आज के अभियान में पुलिस कर्मी भी मौजूद थे। इन सेक्टरों में अतिक्रमण के बारे में निवासियों से कई शिकायतें प्राप्त हुई थीं।

जीएमडीए की इंफोर्समेंट विंग ने गुरुग्राम में अतिक्रमण के खिलाफ सख्त कार्रवाई कर रही है और नए गुरुग्राम सेक्टरों में भी इस तरह के उल्लंघन पर कार्रवाई की जा रही है। डीटीपी आरएस बाठ ने कहा कि हमने इस प्रमुख मास्टर रोड के किनारे कई अवैध अस्थायी निर्माणों को ध्वस्त कर दिया है, जो सरकारी भूमि पर अतिक्रमण कर रहे थे। सभी उल्लंघनकर्ताओं को चेतावनी दी गई है कि वे मास्टर रोड और ग्रीन बेल्ट को ऐसे किसी भी अनधिकृत निर्माण से मुक्त रखें।

बिना नम्बर प्लेट वाले वाहन चालकों पर गुरुग्राम पुलिस ने कसा शिकंजा

गुरुग्राम। एनएचएआई पुलिस आयुक्त विकास अरोड़ा के कुशल निर्देशन में यातायात पुलिस गुरुग्राम द्वारा बिना बिना नम्बर प्लेट वाले वाहन चालकों के खिलाफ प्रभावी कार्यवाही करते हुए एक मार्च से 27 मार्च तक बिना नम्बर प्लेट के 2502 चालान जिनकी कुल जुर्माना राशि 17 लाख 09 हजार रुपए है। गुरुग्राम पुलिस द्वारा यातायात का संचालन सुगम, व्यवस्थित व सुरक्षित करने के उद्देश्य से यातायात के नियमों की अवहेलना करने वालों के खिलाफ उपरोक्त कार्यवाही की गई। सभी वाहन चालक अपने वाहनों पर एचएसआरपी नंबर प्लेट लगवाना सुनिश्चित करें, बगैर एचएसआरपी नंबर प्लेट के वाहन ना चलाए।

यदि सभी वाहन चालक एचएसआरपी नंबर प्लेट लगाकर वाहन चलाए तो पुलिस को शरारती/अपराधी तत्व को पकड़ने में सहायता होगी तथा अपराधिक, असामाजिक तत्वों को इसका फायदा नही मिल जाएगा। एचएसआरपी नम्बर प्लेट का प्रयोग करने से सुरक्षा सुनिश्चित होगी और अपराधी/शरारती तत्वों पर आसानी से नकेल कसी जा सकेगी। गुरुग्राम पुलिस आप सभी वाहन चालकों से अपील करती है कि अपने वाहनों पर एचएसआरपी नंबर प्लेट जरूर लगाए। यातायात पुलिस गुरुग्राम द्वारा इस प्रकार के चालान अभियान भविष्य में भी जारी रहेंगे।

हरियाणा के राज्यपाल ने इफ्तार पार्टी में दी रमजान और ईद की शुभकामनाएं

चंडीगढ़। रमजान के पवित्र महीने में अलविदा जुम्मे के अवसर पर हरियाणा के राज्यपाल बंडारू दत्तात्रेय ने चंडीगढ़ के होटल हयात सेंट्रिक में हरियाणा राज्य हज समिति के अध्यक्ष चौधरी मोसिन रज्जा द्वारा आयोजित इफ्तार पार्टी में भाग लिया। इस कार्यक्रम में कई प्रमुख हस्तियों और मुस्लिम समुदाय के सदस्यों ने भाग लिया, जो एकता और सौहार्द का प्रतीक था। राज्यपाल ने मुस्लिम समुदाय को रमजान और आगामी ईद-उल-फितर की शुभकामनाएं दीं। उन्होंने इन अवसरों के आध्यात्मिक विकास और सामुदायिक संबंधों को मजबूत करने के महत्व पर जोर दिया। राज्यपाल दत्तात्रेय ने कहा कि रमजान इस्लाम में एक विशेष स्थान रखता है और यह श्रद्धा और भक्ति का महीना है। उन्होंने कहा कि यह वह समय है जब दुनिया भर के मुसलमान रोजा रखते हैं, नमाज अदा करते हैं और अल्लाह को याद करके अपने मन और शरीर को शुद्ध करते हैं। उन्होंने कहा कि रमजान केवल भोजन से परहेज करने का समय नहीं है।

विनेश को सम्मान देने पर महावीर फोगाट गदगद

बोले- सीएम सैनी ने सराहनीय काम किया

एजेंसी

चंडीगढ़। हरियाणा सरकार द्वारा विनेश फोगाट के लिए इनाम की घोषणा पर महावीर सिंह फोगाट की प्रतिक्रिया सामने आई है। महावीर फोगाट ने कांग्रेस पर हमला करते हुए भाजपा की तारीफ की है। हरियाणा सरकार ने जुलाना की कांग्रेस विधायक और पहलवान विनेश फोगाट के लिए घोषणाएं की हैं। सरकार ने विनेश फोगाट को ओलंपिक रजत पदक विजेता के बराबर लाभ देने का फैसला लिया है। इसकी घोषणा सीएम नायब सिंह सैनी ने पिछले साल की थी। अपने वादे के मुताबिक बीते दिन मंगलवार यानी 25 मार्च को कैबिनेट बैठक में

सीएम सैनी ने विनेश के लिए इनाम के तीन ऑप्शन रखे हैं। सरकार के इस फैसले पर विनेश के ताऊ महावीर सिंह फोगाट का बयान सामने आया है।

कांग्रेस की सरकार में खिलाड़ियों को नहीं मिली मैट- महावीर फोगाट

मीडिया से बात करते हुए हरियाणा सरकार के फैसले पर द्रोणाचार्य पुरस्कार विजेता महावीर सिंह फोगाट ने कहा कि, सीएम नायब सिंह सैनी ने सराहनीय काम किया है। उन्होंने जो वादे किए थे, उन्हें वो आज पूरा कर रहे हैं। यह बड़ी खुशी की बात है। उन्होंने कहा कि जब कांग्रेस की सरकार थी तब उन्होंने खिलाड़ियों को कभी मैट तक नहीं दी। कांग्रेस से घटिया कोई सरकार नहीं थी। हुड्डा की 10 साल तक राज्य में सरकार रहीं मगर खिलाड़ियों को कभी सम्मान नहीं दिया। गीता-बबीता को भी जो वादे किए थे वो कांग्रेस सरकार ने पूरा नहीं किया।

हुड्डा सरकार से घटिया कोई सरकार नहीं- महावीर फोगाट

महावीर फोगाट ने कांग्रेस पर हमला करते हुए कहा कि %हुड्डा सरकार से घटिया तो राज्य में कोई सरकार नहीं थी। मैंने गीता-बबीता के लिए कोर्ट में लड़ाई लड़ी तब उन्हें इनाम मिला। मैं तो कहूंगा सौभाग्यशाली हैं हरियाणा की जनता जो हुड्डा सरकार से पिछा छूटा। वहीं, सीएम सैनी की तारीफ करते हुए महावीर फोगाट ने कहा कि उनका फैसला स्वागत योग्य है। जनता के लिए इससे अच्छी क्या बात होगी कि जो वादा किया वो निभा रहे हैं।

रोहतक की सुपवा यूनिवर्सिटी में अफीम की खेती

फूलों के बीच लगाए गए 140 पौधे, पुलिस और बागवानी विभाग की टीम कर रही जांच

एजेंसी

रोहतक। हरियाणा की एकमात्र विसुअल आर्ट यूनिवर्सिटी (सुपवा) में अफीम की खेती की खबर से हड़कंप मच गया है। सूचना पाकर पुलिस यूनिवर्सिटी में पहुंची. पुलिस के मुताबिक अफीम के एक या दो पौधे नहीं बल्कि सैकड़ों की संख्या में पौधे पाए गए हैं यही नहीं अफीम के पौधे पर डोडे में कट भी लगाया गया है और इसे इस्तेमाल करने की कोशिश की गई है। वहीं यह भी बताया गया है कि यूनिवर्सिटी प्रशासन द्वारा मामले को लेकर एक कमेटी का भी गठन किया गया है। यूनिवर्सिटी प्रशासन को भनक तक नहीं लगी, मीडिया में खबर आने के बाद चारों तरफ अफरा तफरी मच गई। यूनिवर्सिटी में अफीम उगाने की शिकायत हरियाणा के गवर्नर को छात्रों ने दी है। यूनिवर्सिटी की नर्सरी में एक दो नहीं बल्कि 100 से ज्यादा पौधे पाए गए हैं, यही नहीं लगभग चार महीने में आने वाले फल में कट लगाकर इसे इस्तेमाल करने की कोशिश की गई है। 4 महीने के बाद पौधे तैयार भी हो गए और उसके ऊपर फल भी लग गया। ऐसे में इसकी शिकायत किसी छात्र ने हरियाणा के मुख्यमंत्री और राज्यपाल को दी है। यूनिवर्सिटी प्रशासन में हड़कंप मच गया हालांकि यूनिवर्सिटी प्रशासन इस मामले में कुछ भी बोलने से बचता दिख रहा है। यूनिवर्सिटी का बयान सामने नहीं आया है।

कपास खरीफ सीजन की एक महत्वपूर्ण एवं नकदी फसल हैः उपायुक्त

● कपास की फसल के लिए गुलाबी सुंडी की रोकथाम जरूरी

● 15 अप्रैल से जून के पहले सप्ताह तक की जा सकती है बिजाई

एजेंसी

नारनौल। कपास खरीफ सीजन की एक बहुत ही महत्वपूर्ण एवं नकदी फसल है। जिला में लगभग 50 हजार एकड़ में कपास फसल की बिजाई की जाती है। कुछ वर्षों से विभिन्न क्षेत्रों में गुलाबी सुंडी का प्रकोप देखा गया है। इससे फसल को काफी नुकसान होता है। इसलिए इसकी रोकथाम बहुत जरूरी है। उपायुक्त डा. विवेक भारती ने बताया कि गुलाबी सुंडी की रोकथाम के लिए जरूरी है कि हम इसके जीवन चक्र को समझें और इसके जीवन चक्कर में आने वाले इसकी अनुकूल क्रियाओं को अवरुद्ध करें ताकि इस किट के आने से पहले ही रोकथाम की जा सके। उन्होंने बताया कि गुलाबी सुंडी सिर्फ कपास फसल को ही खाती है इसको मोनोफैगस भी कहते हैं। उप कृषि निदेशक डा. देवेंद्र सिंह ने बताया कि कपास की बिजाई 15 अप्रैल से जून के पहले सप्ताह तक की जा सकती है परंतु मई का महीना कपास की बिजाई के लिए सर्वोत्तम है। उन्होंने बताया कि महेंद्रगढ़, भिवानी तथा डबवाली (सिरसा) जिलों में जहां मिट्टी रेतीली है और तेज हवाओं से पौधे जलने तथा रेत में दबने की संभावना होती है। इसलिए इन जिलों में अप्रैल के पहले पखवाड़े में बिजाई कर लेनी चाहिए। बीटी कपास की बिजाई का सर्वोत्तम समय अप्रैल के तीसरे सप्ताह से लेकर मई के अंत तक है। उन्होंने बताया कि गुलाबी सूंडी के लार्वा गत वर्ष की कपास फसल के अवशेष, अनखिले, अधखिले टिण्डों एवं खोखडियों में छिपे रह जाते हैं इसलिए किसान कपास की फसल लेने के बाद खेतों में भेड़ बकरियों व पशु चराएं ताकि पौधों पर लगे अधखिले तथा अनखिले टिण्डों, अन्य फलीय भागों एवं कचरे को ये जानवर खाकर नष्ट कर दें। कपास की छंटियों को खेत में न रखकर गांव में रखें । मार्च माह तक सभी छंटियों को अच्छी तरह झाड़ लें और टिंडें, खोखड़ी तथा उन कचरे को इकट्ठा करके नष्ट कर दें। अप्रैल माह तक भंडारों व कारखानों में रखी कपास की बिलाई कर लें तथा बिजाई के लिए रखें बीज को एल्यूमीनियम फास्फाइड से पहले बताए गए ढंग से धूम्रित करें बाकी बचे बिनौलों का तेल निकलवा लें क्योंकि इनमें भी गुलाबी सुण्डीं का प्रकोप अगली फसल में जल्दी बढ़ने लगता है। उन्होंने बताया कि कारखानों में बिनौले निकालने के बाद बचे कचरे को इकट्ठा करके नष्ट कर दें ताकि जुड़े हुए बीजों में निकली गुलाबी सुंडी नष्ट हो जाए और पशुओं को बिनौलों के स्थान पर खली खिलाएं।

उपायुक्त डा. विवेक भारती ने बताया कि गुलाबी सुंडी की रोकथाम के लिए जरूरी है कि हम इसके जीवन चक्र को समझें और इसके जीवन चक्कर में आने वाले इसकी अनुकूल क्रियाओं को अवरुद्ध करें ताकि इस किट के आने से पहले ही रोकथाम की जा सके।

डीएमसी ने ली पार्षदों की बैठक

● विकास कार्यों तथा स्वच्छता को लेकर हुई चर्चा ● नगर परिषद की जमीन पर अतिक्रमण की तुरंत दें जानकारी : डा. आनंद कुमार शर्मा

एजेंसी

नारनौल। जिला नगर आयुक्त एवं अतिरिक्त उपायुक्त डॉ आनंद कुमार शर्मा ने आज लघु सचिवालय में नारनौल नगर परिषद के सभी पार्षदों के साथ विकास कार्यों को लेकर बैठक की। इस दौरान नगर परिषद की चेयरपर्सन कमलेश सैनी भी मौजूद थी।

इस मौके पर डीएमसी ने कहा कि शहर के योजनाबद्ध तरीके से विकास के लिए सभी पार्षद सहयोग करें। सभी कार्यों में चुने हुए प्रतिनिधियों की सलाह बहुत ही महत्वपूर्ण होती है। उन्होंने कहा कि अगर कहीं भी नगर परिषद की जमीन पर अवैध कब्जा होता है तो पार्षद तुरंत प्रभाव से इसकी जानकारी दें। इसके अलावा उन्होंने स्वच्छता को

लेकर भी सभी पार्षदों से आह्वान किया कि स्वच्छता को लगातार जारी रखना सामूहिक जिम्मेदारी है। उन्होंने कहा कि अगर किसी भी वार्ड में डोर टू डोर कूड़ा उठाने में कोई शिकायत है तो तुरंत प्रभाव से इसकी जानकारी दें। नगर परिषद की ओर से कूड़ा उठाने वाले वाहनों के ड्राइवर तथा दरोगा के मोबाइल नंबर भी सार्वजनिक किए गए हैं। इसके अलावा स्वच्छता एप पर भी शिकायत कर सकते हैं।

सीएमओ ने ली अल्ट्रासाउंड सेंटरों के संचालकों की बैठक

एजेंसी

नारनौल। सिविल सर्जन डा. अशोक कुमार ने आज अपने कार्यालय में जिले के सभी निजी अल्ट्रासाउंड सेंटरों के संचालकों की बैठक ली तथा आवश्यक दिशा निर्देश दिए। सिविल सर्जन डॉ. अशोक कुमार ने कहा कि स्वास्थ्य विभाग ने जिले में सभी गर्भवती महिलाओं को सभी सरकारी व निजी स्वास्थ्य संस्थानों में इलाज लेने के लिए एमसीटीएस व आरसीएच पहचान नंबर अनिवार्य कर दिए गए हैं। उन्होंने बताया कि इसके लिए प्रत्येक गर्भवती महिला के पास आरसीएच नंबर होना अनिवार्य है। किसी गर्भवती महिला के पास आरसीएच नंबर उपलब्ध नहीं है तो उसका पंजीकरण सबंधित निजी अस्पताल अल्ट्रासाउंड सेंटर की ओर से आरसीएच आईडी एप पर कर दिया जाएगा तथा उस अस्पताल को इस पंजीकरण के बदले एक आईडी मिल जाएगी जिसके आधार पर संचालकों व अल्ट्रासाउंड केंद्रों को निर्देश जारी कर दिए गए है तथा सभी गर्भवती महिलाओं से अनुरोध है कि तुरंत प्रभाव से अपने नजदीकी

महिला अपनी स्वास्थ्य सेवाएं ले सकेंगी। उन्होंने कहा कि प्रत्येक गर्भवती महिला का तुरन्त प्रभाव से पंजीकरण करना विभाग का लक्ष्य है जिससे गर्भवती महिला को समय पर बेहतरीन स्वास्थ्य सेवा मिल सके। इस बारे सभी निजी अस्पताल स्वास्थ्य केन्द्र से आरसीएच नंबर प्राप्त कर लें, ताकि स्वास्थ्य सेवाओं के सभी लाभ समय पर ले सकें। इस अवसर पर उप सिविल सर्जन डा. विजय कुमार (पीएनडीटी) व डीएमईओ दिलबाग सिंह के अलावा अल्ट्रासाउंड सेंटर संचालक मौजूद थे।

पंचायती राज संस्थाओं के उप-चुनाव के दृष्टिगत मतदाता सूची की जांएगी अपडेट - उपायुक्त

एजेंसी

नूंह। जिला निर्वाचन अधिकारी (पंचायत) एवं उपायुक्त विश्राम कुमार मीणा ने बताया कि हरियाणा राज्य निर्वाचन आयोग ने हरियाणा पंचायत राज निर्वाचन नियम 1994 के तहत पंचायती राज संस्थाओं के पंच व सरपंच के प्रस्तावित उप चुनाव 2025 के मद्देनजर मतदाता सूची को अपडेट करने का निर्णय लिया है। उन्होंने बताया कि राज्य चुनाव आयोग की ओर से 12 सितंबर 2024 को प्रकाशित अंतिम मतदाता सूची अनुसार अपडेट मतदाता सूची तैयार की जाएगी। उन्होंने बताया कि राज्य निर्वाचन आयोग के निर्देश अनुसार मंगलवार 25 मार्च से शनिवार आगामी 5 अप्रैल तक विधानसभा की वर्तमान वोटर लिस्ट को प्रत्येक गांव के वार्ड अनुसार भिजवाया जाएगा। उन्होंने बताया कि अवलोकन के लिए मतदाता सूची का ड्राफ्ट प्रकाशन शुक्रवार 11 अप्रैल को किया जाएगा। यदि किसी व्यक्ति को मतदाता सूची से संबंधित कोई दावा या आपत्ति है तो वह शुक्रवार 18 अप्रैल 2025 तक अपना दावा या आपत्ति जमा करा सकता है। इसके उपरांत प्राप्त होने वाले दावे एवं आपत्तियों पर कोई विचार नहीं किया जाएगा। उन्होंने बताया कि मंगलवार 22 अप्रैल 2025 तक दावों एवं आपत्तियों का निपटारा जिला निर्वाचन अधिकारी (पंचायत) द्वारा किया जाएगा। उन्होंने बताया कि शुक्रवार 25 अप्रैल 2025 तक जिला निर्वाचन अधिकारी (पंचायत) के निर्णय के विरुद्ध उपायुक्त एवं जिला निर्वाचन अधिकारी (पंचायत) के समक्ष अपील दायर की जा सकती है।

प्रमाण पत्र वितरण कार्यक्रम का हुआ आयोजन

गुरुग्राम। इताशा सोसायटी द्वारा सेंटर परिसर में प्रमाण पत्र वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें 47 प्रशिक्षणार्थियों को बी-स्मार्ट प्रोग्राम और ग्राफिक डिजाइनिंग प्रोग्राम के क्षेत्रों में उपलब्धि हासिल करने पर प्रमाण पत्र दिए गए। पारुल मेहरा ने बताया कि अब तक इताशा सोसायटी ने 20 हजार 60 युवाओं को प्रशिक्षण दिया है, जो आज विभिन्न क्षेत्रों में रोजगार कर रहे हैं। राजकीय उच्च विद्यालय के मुख्याध्यापक हरीश यादव, लोविना गुजराल, स्वाति रौतेला ने युवाओं का उत्साहवर्धन किया। आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं को समुदाय में इताशा के प्रचार में सहयोग करने के लिए सम्मानित किया गया। बेस्ट ट्रेनी और बेस्ट एफर्ट ट्रेनी को बैजेस देकर सम्मानित किया गया।

शिक्षा के मंदिर में अफीम की खेती

रोहतक के बाद सोनीपत की यूनिवर्सिटी में भी मिले अफीम के पौधे

एजेंसी

सोनीपत। हरियाणा में शिक्षा के मंदिर विश्वविद्यालय नशा तस्करों के निशाने पर हैं। रोहतक के बाद अब सोनीपत की यूनिवर्सिटी में अफीम की खेती का खुलासा हुआ है। भारी संख्या में यहां से अफीम के पौधे बरामद हुए हैं, लेकिन इनसे अफीम निकाली जा चुकी थी। यह बेहद चिंता का विषय है कि यूनिवर्सिटी प्रशासन की नाक के नीचे कैसे अफीम की खेती की जा रही थी। अफीम की खेती केवल लाइसेंस लेकर सीमित जगह पर ही की जा सकती है। शिक्षा के मंदिर में अफीम की खेती : हरियाणा के रोहतक के बाद अब सोनीपत की एक यूनिवर्सिटी में अफीम की खेती का खुलासा हुआ है। पुलिस ने यूनिवर्सिटी कैंप से अफीम के 400 पौधे बरामद किए हैं और एक माली को गिरफ्तार किया है। वहीं, आशंका जताई जा रही है कि इस काम में और भी शामिल हो सकते हैं। पौधे से अफीम निकाली जा चुकी है। इससे पहले रोहतक की दादा लख्मीचंद यूनिवर्सिटी में अफीम के पौधे मिल चुके हैं।

1000 वर्ग फीट में लगाए थे अफीम के पौधे

राई एजुकेशन सिटी में वर्ल्ड यूनिवर्सिटी में अफीम की खेती की सोनीपत क्राइम ब्रांच यूनिट-1 को गुप्त सूचना मिली। पुलिस टीम ने छापेमारी कर लगभग 1000 वर्गफीट में फैली अफीम की खेती पकड़ी। पुलिस ने 9 साल से यूनिवर्सिटी में काम कर रहे माली संत लाल को वहां से गिरफ्तार किया। पुलिस को आशंका है कि इस काम में कई और लोग भी शामिल हैं। पुलिस जांच के बाद ही खुलासा होगा कि इस पूरे मामले में कौन-कौन शामिल हैं। इस बात का भी पता लगाया जाएगा कि यूनिवर्सिटी प्रशासन को इसकी भनक क्यों नहीं लगी या फिर प्रशासन में से भी कोई शामिल है।

रोहतक में भी हो चुका है खुलासाः रोहतक की दादा लख्मीचंद यूनिवर्सिटी में भी दो दिन पहले कैंपस से अफीम के पौधे मिले हैं। अफीम के डोडे निकल चुके हैं और यह तीन-चार महीने पुराने हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुरूप पाठ्यक्रम की समीक्षा करने के लिए उन्मुखीकरण के लिये कार्यशाला का हुआ आयोजन- बोर्ड सचिव

एजेंसी

भिवानी। हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड के सचिव डॉ0 मुनीश नागपाल ने आज यहां जारी एक प्रेस वक्तव्य में बताया कि शैक्षिक सत्र 2025-26 के लिए कक्षा 9वीं से 12वीं के पाठ्यक्रम में गुणात्मक सुधार हेतु बोर्ड परिसर में बैठक आयोजन किया गया। इस सम्बन्ध में आज शिक्षा बोर्ड में शिक्षा जगत से जुड़े हिन्दी व अंग्रेजी के विषय विशेषज्ञों ने कार्यशाला में अपने-अपने विचार सांझा किए। इस दौरान पाठ्यक्रम को राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अनुरूप ढ़ालने एवं विद्यार्थियों के लिए पठन-पाठन विधि को ओर अधिक सरल व आत्मसात बनाने के लिए मंथन किया गया। बोर्ड सचिव ने बताया गया कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए शिक्षा बोर्ड पूर्व में अपनाए जा रहे पाठ्यक्रम में सकारात्मक सुधार कर रहा है ताकि बच्चें भविष्य में गुणात्मक शिक्षा पा सकें। इसके अतिरिक्त उन द्वारा आज की कक्षा कक्ष में अध्यापन प्रक्रिया को अध्यापक के माध्यम से और अधिक सरल एवं तर्कशील बनाने की दिशा में अहम कदम उठाने पर जोर देने को कहा गया।इस अवसर

पर बोर्ड सचिव ने शिक्षा जगत मे अहम योगदान देने पर शिक्षाविद् श्री बन्ता सिंह, सेवानिवृत प्राचार्य, रा.व.मा.वि.,चिन्दड़(फतेहाबाद)को श्रीमद्भगवत गीता व स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। उन्होंने बताया कि श्री बन्ता सिंह सेवानिवृति के उपरान्त भी लगभग 15 वर्षो से शिक्षा क्षेत्र से जुड़े हुए है व अपने अनुभव साझा कर रहे हैं ।

नूंह शिक्षा विभाग द्वारा स्कूल के छात्र-छात्राओं को कबाड़ा बीनने के दिए आदेश

पत्र जारी होते ही विभाग में मचा हड़कंप

एजेंसी

नूंह।हरियाणा के नूंह जिले में शिक्षा विभाग के अधिकारियों की एक बड़ी लापरवाही सामने आई है। नूंह में पढ़ा-लिखाकर अपने बच्चों को डॉक्टर, इंजीनियर या कोई बड़ा अफसर बनाने का सपना देखने वाले अभिभावकों के सपनों को शिक्षा अधिकारी ही पलीता लगा रहे हैं। अधिकारी विद्यार्थियों को कूड़ा-कचरा बीनने का मार्ग दिखा रहे हैं। डीईओ ने खंड शिक्षा अधिकारियों को एक पत्र जारी कर विद्यार्थियों को गलियों से प्लास्टिक और कूड़ा एकत्रित कर इसे कबाड़ी के पास बेचने के लिए कहा है।

बीईओ को 26 मार्च को चिट्ठी लिखकर दिए थे आदेश

डीईओ अजीत श्योराण की ओर से नूंह, तावडू, पुन्हाना, फिरोजपुर झिरका और नगीना के खंड शिक्षा अधिकारियों (बीईओ) को 26 मार्च को चिट्ठी लिखकर आदेश दिए हैं कि जिले के सभी हाई और सीनियर सैकेंडरी स्कूलों के विद्यार्थी अपने घरों व आसपास से प्लास्टिक और कचरा एकत्रित करें। इस कबाड़ को कबाड़ी के पास बेचें और कबाड़ बेचने से मिले पैसों से मिठाई खरीदकर स्कूल के विद्यार्थियों में बांटी जाए। पत्र में यह भी कहा गया कि प्लास्टिक और कबाड़ बीनते और इसे कबाड़ी के पास बेचते हुए फोटो क्लिक कर कार्यालय को भेजी जानी सुनिश्चित करें।

डीसी ने दिए जांच के आदेश

शिक्षा विभाग द्वारा जारी किये गए पत्र में सीजेएम कम डालसा सचिव के 25 फरवरी के पत्र का भी हवाला दिया गया। डीईओ के पत्र पर हंगामा हुआ तो डीसी विश्राम कुमार मीणा ने पूरे मामले की जांच करने के आदेश दिए। शिक्षा विभाग के एक अधिकारी की मानें तो अंग्रेजी भाषा में लिखे इस पत्र का अनुवाद करने में हुई चूक के कारण बीईओ को भेजे पत्र में गैर अनुचित बात लिख दी गई। मामला डीसी के संज्ञान में आने के बाद अब पत्र को वापस ले लिए गया और उसमे करेक्शन कर दोबारा जारी करने की बात कही गई है।

जिला नूंह में पहली बार बड़े स्तर आयोजित होंगी खेलो मेवात प्रतियोगिताएं- उपायुक्त मीणा

एजेंसी

नूंह। उपायुक्त विश्राम कुमार मीणा ने कहा कि जिला नूंह के युवाओं को खेलों से जोड़ने व उन्हें नशे जैसी बुराई से बचाने के लिए बड़े स्तर पर खंड व जिला स्तर पर खेलो मेवात प्रतियोगिताएं करवाई जाएंगी, जिसमें जिला की सभी 384 ग्राम पंचायतों व शहरी क्षेत्रों के सभी 59 वार्डों से खिलाड़ियों व टीमों की भागीदारी सुनिश्चत कर खेल करवाए जाएंगे। खेलो मेवात प्रतियोगिता के तहत पांच तरह के खेल होंगे, जिसमें क्रिकेट, वॉलीबाल, कुश्ती, रस्साकशी व एथलेटिक्स शामिल होंगे। खेलो मेवात स्पार्धा का शुभारंभ खंड तावडू से 9 अप्रैल को होगा। उपायुक्त लघु सचिवालय के सभागार में आयोजित बैठक में खेलो मेवात स्पर्धाओं के आयोजन के संबंध में जिला के सभी उपमंडलों के एसडीएम व अन्य प्रशासनिक अधिकारियों को जरूरी दिशा-निर्देश दे रहे थे। उन्होंने कहा कि खेलो मेवात प्रतियोगिता का मुख्य उद्देश्य जिला नूंह के युवाओं को खेलो के साथ जोड़ना है, ताकि युवाओं की ऊर्जा का सकारात्मक दिशा में उपयोग करना संभव हो। युवाओं में खेलों के प्रति रुचि बढ़े। खेलों से हमें मिलकर काम करने व आगे बढ़ने की प्रेरणा मिलती है। इन प्रतियोगिताओं में सभी गांवों के खिलाड़ियों को खंड स्तर पर आयोजित खेलों में मौका दिया जाएगा। खंड स्तर पर प्रथम व द्वितीय विजेता रहने वाली टीमों व खिलाड़ियों को जिला स्तर पर आयोजित प्रतियोगिताओं में भाग लेने का अवसर दिया जाएगा। जिला स्तर पर विजेता टीमों को नगद इनाम व ट्राफी दी जाएंगी। इन खेलो में भाग लेने के लिए सभी ग्राम पंचायतों को अपने गांव के खिलाड़ियों व टीमों की एंट्री करवानी होगी, जिसके लिए पोर्टल भी बनाया गया है। उन्होंने बताया कि ग्राम पंचायतों द्वारा टीमों की एंट्री के लिए पंजीकरण 15 अप्रैल तक करना जरूरी होगा। अतिरिक्त उपायुक्त प्रदीप ड्क्षसह मलिक ने कहा कि उपायुक्त के प्रयास से पहली बार जिला नूंह में युवाओं के लिए इतने बड़े स्तर पर खेलों का आयोजन किया जा रहा है। इन खेलों में सभी गांवों व शहरी क्षेत्र के वार्डो से खिलाड़ियों को अवसर दिया जा रहा है।

अपर्णा संस्थान विधेयक : स्वामी धीरेन्द्र ब्रह्मचारी के जन कल्याण कार्यों को आगे बढ़ाएगी सरकार-मुख्यमंत्री

एजेंसी

चंडीगढ़। हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने कहा है कि उनकी सरकार द्वारा विधानसभा में लाए गए अपर्णा संस्थान विधेयक का उद्देश्य स्वामी धीरेन्द्र ब्रह्मचारी के जन कल्याण के विचारों को आगे बढ़ाना है। उन्होंने कहा कि इस संस्थान की भूमि पर पहले से ही एक योगा आश्रम बना हुआ है और स्वामी धीरेन्द्र ब्रह्मचारी यहाँ लोगों को स्वास्थ्य सुविधाएं भी उपलब्ध कराना चाहते थे। इसलिए सरकार ने इस आश्रम का नियंत्रण अपने हाथ में लेकर उनके जन कल्याण के सपने को साकार करने का निर्णय लिया है। मुख्यमंत्री सैनी ने हरियाणा विधानसभा के बजट सत्र के दौरान विधेयक पर चर्चा करते हुए कहा कि सरकार केंद्र सरकार के किसी भी कानून का उल्लंघन नहीं कर रही है, बल्कि सभी प्रक्रियाएं उनके अधीन रहकर ही पूरी की जा रही हैं। उन्होंने बताया कि स्वामी धीरेन्द्र ब्रह्मचारी के निधन के बाद यह संस्थान दो गुटों में बंट गया था और पिछले तीन दशकों से मुकदमेबाजी चल रही थी, जिसके

कारण संस्थान निष्क्रिय हो गया था। विधेयक लाने का मुख्य उद्देश्य संस्थान की भूमि को गलत हाथों में जाने से रोकना और लोगों को इसका लाभ सुनिश्चित करना है।

उन्होंने कहा कि विधेयक का उद्देश्य स्वामी धीरेन्द्र ब्रह्मचारी के जन कल्याण के विचारों को आगे बढ़ाना। संस्थान की भूमि को सुरक्षित रखना और उसका सदुपयोग करना। लोगों को स्वास्थ्य और योग से संबंधित सुविधाएं प्रदान करना और संस्थान में चल रहे विवादों को समाप्त करना और उसे सक्रिय करना है। सरकार का मानना है कि इस विधेयक के माध्यम से अपर्णा संस्थान को एक जन कल्याण केंद्र के रूप में विकसित किया जा सकता है, जिससे लोगों को लाभ होगा और स्वामी धीरेन्द्र ब्रह्मचारी के सपनों को साकार किया जा सकेगा।

एमसीए ने पीएम इंटर्नशिप योजना के लिए तीसरे 'उम्मीदवार ओपन हाउस' कार्यक्रम का किया आयोजन

एजेंसी

नई दिल्ली। कॉर्पोरेट कार्य मंत्रालय (एमसीए) ने प्रधानमंत्री इंटर्नशिप योजना (पीएमआईएस) के लिए तीसरे उम्मीदवार ओपन हाउस आयोजित किया, जिसमें विशेषज्ञों के साथ बातचीत करने और कार्यक्रम में मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्राप्त करने के लिए उम्मीदवारों को एक मंच प्रदान किया गया। यह पहल उम्मीदवारों के सवालों और चिंताओं को दूर करने की मंत्रालय की प्रतिबद्धता का हिस्सा है। कॉरपोरेट कार्य मंत्रालय ने बयान में बताया कि पिछले सत्रों की सफलता को आगे बढ़ाते हुए 27 मार्च को दोपहर 3 बजे से शाम 4:45 बजे तक पीएम इंटर्नशिप योजना के लिए एक और महत्वपूर्ण कैंडिडेट ओपन हाउस की मेजबानी की गई। इसमें 684 से अधिक लाइव उपस्थित और 1,765 पूर्व-प्रस्तुत प्रश्नों के साथ बड़ी भागीदारी देखी गई। सभी उम्मीदवारों के सवालों के जवाब दिए गए। इससे मॉडरेटर सबसे आम चिंताओं को दूर कर सकते हैं और यह भी सुनिश्चित कर सकते हैं कि सत्र के दौरान पोस्ट किए गए लाइव सवालों का जवाब दिया जाए। मंत्रालय ने बताया कि यह ओपन हाउस विशेष रूप से प्रभावशाली रहा। इसमें महिंद्रा एंड महिंद्रा के फार्म डिवीजन में कौशल विकास और शिक्षा के प्रमुख, उद्योग विशेषज्ञ डॉन लुईस शामिल थे।

बैंकों में 31 मार्च को रहेगी चेक की विशेष क्लियरिंग व्यवस्था

नई दिल्ली/मुंबई। रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया (आरबीआई) ने सभी बैंकों से वित्त वर्ष 2024-25 के लिए सभी सरकारी लेन-देन के लेखांकन की सुविधा को लेकर 31 मार्च को विशेष क्लियरिंग व्यवस्था (विशेष समाशोधन) में अनिवार्य रूप से शामिल होने को कहा है। मौजूदा वित्त वर्ष 2024-25 (अप्रैल-मार्च) 31 मार्च को समाप्त हो रहा है। आरबीआई ने एक परिपत्र में कहा कि चेक ट्रंकेशन सिस्टम (सीटीएस) के तहत सामान्य समाशोधन का समय 31 मार्च, 2025 को वही होगा जो अन्य कामकाजी सोमवार को होता है। केंद्रीय बैंक ने जारी परिपत्र में कहा, ''इसके अलावा चालू वित्त वर्ष 2024-25 के लिए 31 मार्च, 2025 तक सभी सरकारी लेन-देन का लेखा-जोखा करने की सुविधा के लिए 31 मार्च को विशेष रूप से सरकारी चेक के लिए सीटीएस के तहत विशेष समाशोधन करने का निर्णय लिया गया है।'' आरबीआई के परिपत्र में कहा गया कि सभी बैंकों के लिए 31 मार्च 2025 को विशेष समाशोधन परिचालन में हिस्सा लेना अनिवार्य है। सीटीएस के तहत विशेष समाशोधन परिचालन के तहत प्रस्तुति समाशोधन समय शाम 5 से 7 पांच बजे तक और वापसी समाशोधन का समय शाम 7 से साढ़े सात बजे तक होगा। दरअसल सीटीएस के तहत समाशोधन के लिए चेक को भौतिक रूप से भेजे जाने की जगह इलेक्ट्रॉनिक रूप से उसकी तस्वीर और आंकड़ें भेजे जाते हैं। इससे लागत और समय में कमी आती है तथा चेक प्रसंस्करण में सुरक्षा और दक्षता बढ़ती है।

सरकार ने 1 अप्रैल से देसी चने पर 10 फीसदी आयात शुल्क लगाया

नई दिल्ली। केंद्र सरकार ने 1 अप्रैल से देसी चना पर 10 फीसदी आयात शुल्क लगा दिया है। इस निर्णय से घरेलू आपूर्ति बढ़ाने और कीमतों को नियंत्रित करने के लिए पिछले साल मई से लागू शुल्क मुक्त आयात नीति समाप्त हो गई है। वित्त मंत्रालय की ओर से 27 मार्च को जारी अधिसूचना के मुताबिक 1 अप्रैल से चने के आयात पर 10 फीसदी शुल्क लगेगा। सरकार ने घरेलू उपलब्धता बढ़ाने और कीमतों पर अंकुश लगाने के लिए पिछले साल मई में चने के शुल्क मुक्त आयात की अनुमति दी थी। यह शुल्क छूट 31 मार्च 2025 तक लागू थी। उल्लेखनीय है कि सरकारी आंकड़ों के अनुसार चालू वित्?त वर्ष 2024-25 में चना उत्पादन 11.5 मिलियन टन होने का अनुमान है, जबकि पिछले वित्?त वर्ष में यह 11 मिलियन टन रहा था।

केंद्रीय जीएसटी कार्यालय 29, 30 व 31 मार्च को खुले रहेंगे

नई दिल्ली। केंद्रीय अप्रत्यक्ष कर एवं सीमा शुल्क बोर्ड (सीबीआईसी) ने हा कि केंद्रीय जीएसटी (सीजीएसटी) के क्षेत्रीय कार्यालय 29, 30 एवं 31 मार्च को भी खुले रहेंगे। मौजूदा वित्त वर्ष 31 मार्च को समाप्त हो रहा है। सीबीआईसी की ओर से जारी यह निर्देश केंद्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड (सीबीडीटी) द्वारा आयकर विभाग के कार्यालयों के संबंध में इसी तरह के जारी निर्देश के बाद आया है, ताकि लंबित विभागीय कार्यों को पूरा करने में सुविधा हो। सीबीआईसी की ओर से मुख्य आयुक्तों को दिए गए निर्देश में कहा गया है

कि सीजीएसटी के सभी क्षेत्रीय कार्यालय 29, 30 एवं 31 मार्च को भी खुले रहेंगे और इन्हें कार्य दिवस माना जाएगा। उल्लेखनीय है कि 31 मार्च चालू वित्त वर्ष का अंतिम दिन है। इसलिए इस वित्त वर्ष से संबंधित सभी सरकारी भुगतान और निपटान उसी दिन तक पूरे करने होंगे। इसके अलावा 31 मार्च आकलन वर्ष 2023-24 के लिए अपडेटेड आयकर रिटर्न दाखिल करने की अंतिम तिथि भी है। ऐसे में देशभर में आयकर और सीजीएसटी कार्यालय सप्ताहांत और ईद-उल-फितर के बावजूद खुले रहेंगे, जो सोमवार को पड़ सकता है।

भारत और जापान ने 6 परियोजनाओं के लिए 191.736 अरब जापानी येन ऋण समझौतों पर किए हस्ताक्षर

एजेंसी

नई दिल्ली। भारत और जापान ने आधिकारिक विकास सहायता के तहत छह परियोजनाओं के लिए 191.736 अरब जापानी येन के ऋण समझौतों पर हस्ताक्षर किए। ये परियोजनाएं वन प्रबंधन, जल आपूर्ति, शहरी परिवहन, जलीय कृषि, जैव विविधता संरक्षण और निवेश संवर्धन के क्षेत्रों से संबंधित हैं। वित्त मंत्रालय ने एक बयान में कहा कि भारत और जापान ने गुरुवार को वन प्रबंधन, जल आपूर्ति, शहरी परिवहन, जलकृषि, जैव विविधता संरक्षण और निवेश संवर्धन के क्षेत्रों में जापान की आधिकारिक विकास सहायता (ओडीए) के अंतर्गत छह परियोजनाओं के लिए 191.736 बिलियन जापानी येन के ऋण समझौतों पर हस्ताक्षर किए। मंत्रालय के मुताबिक भारत सरकार और जापान अंतरराष्ट्रीय सहयोग एजेंसी (जेआईसीए) के बीच नई दिल्ली में इन छह ऋण समझौतों पर

हस्ताक्षर किए गए। इनमें तमिलनाडु निवेश संवर्धन कार्यक्रम (चरण 3) (टीएनआईपीपी-III) (36.114 बिलियन जेपीवाई), प्रभावी वन प्रबंधन के लिए क्षमता वृद्धि के लिए परियोजना (8.280 बिलियन जेपीवाई), चेन्नई समुद्री जल विलवणीकरण संयंत्र (II) के निर्माण के लिए परियोजना (52.556 बिलियन जेपीवाई), दिल्ली जन सामूहिक तीव्र परिवहन प्रणाली परियोजना (चरण 4 अतिरिक्त गलियारे) (I) (79.726 बिलियन जेपीवाई), असम राज्य जलीय कृषि संवर्धन और आजीविका सुधार परियोजना (3.580 बिलियन जेपीवाई) और पंजाब जैव विविधता और प्राकृतिक संसाधन संरक्षण परियोजना (11.480 बिलियन जेपीवाई) है।

उल्लेखनीय है कि भारत और जापान का वर्ष 1958 से द्विपक्षीय विकास सहयोग का एक लंबा और फलीभूत इतिहास रहा है। भारत-जापान संबंधों का एक प्रमुख स्तंभ के रूप में आर्थिक सहयोग में पिछले कुछ वर्षों में लगातार प्रगति हो रही है। यह भारत और जापान के बीच रणनीतिक और वैश्विक साझेदारी को और मजबूत तथा सुदृण करता है।

पॉलिसीधारकों की सहायता के लिए सप्ताहांत और ईद पर खुले रहेंगे एलआईसी कार्यालय

एजेंसी

नई दिल्ली/मुंबई। सार्वजनिक क्षेत्र की बीमा कंपनी भारतीय जीवन बीमा निगम (एलआईसी) ने कहा कि विभिन्न क्षेत्रों और प्रभागों में उसके कार्यालय 29, 30 और 31 मार्च, 2025 को खुले रहेंगे। एलआईसी ने जारी एक बयान में कहा, पॉलिसीधारकों को किसी भी तरह की परेशानी से बचाने के लिए 29, 30 और 31 मार्च को जोनल और डिवीजनों के अधिकार क्षेत्र के तहत भारतीय जीवन बीमा निगम के कार्यालय आधिकारिक कार्य समय के अनुसार सामान्य परिचालन के लिए खुले रहेंगे। कंपनी ने बताया कि इस निर्णय का उद्देश्य सुचारू संचालन सुनिश्चित करना और पॉलिसीधारकों को असुविधा से बचाना है। कंपनी ने यह कदम भारतीय बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण (आईआरडीएआई) द्वारा 12 मार्च को जारी की गई सलाह के बाद उठाया है। दरअसल एलआईसी देश के हर बीमा योग्य व्यक्ति को वित्तीय सुरक्षा प्रदान करने की अपनी प्रतिबद्धता पर जोर दे रही है। एलआईसी के प्रबंध निदेशक और मुख्य कार्यपालक अधिकारी सीईओ सिद्धार्थ मोहंती ने हाल ही में दोहराया कि कंपनी का फोकस ग्रामीण और खासकर समाज के आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों को किफायती बीमा उपलब्ध कराने पर है।

देश का विदेशी मुद्रा भंडार 4.53 अरब डॉलर बढ़कर 658.8 अरब डॉलर पर

एजेंसी

नई दिल्ली/मुंबई। अर्थव्यवस्था के मोर्चे पर अच्छी खबर आई है। लगातार तीसरे हफ्ते विदेशी मुद्रा भंडार में इजाफा दर्ज हुआ है। देश का विदेशी मुद्रा भंडार 21 मार्च को समाप्त हफ्ते में 4.53 अरब डॉलर बढ़कर 658.8 अरब डॉलर पर पहुंच गया है। इससे पिछले हफ्ते विदेशी मुद्रा भंडार 30.5 करोड़ डॉलर बढ़कर 654.27 अरब डॉलर हो गया था। आरबीआई ने आंकड़ों में बताया कि 21 मार्च को समाप्त हफ्ते में देश का विदेशी मुद्रा भंडार 4.53 अरब डॉलर बढ़कर 658.8 अरब डॉलर रहा है।

इससे पिछले हफ्ते विदेशी मुद्रा भंडार 30.5 करोड़ डॉलर बढ़कर 654.27 अरब डॉलर हो गया था। आंकड़ों के अनुसार इस दौरान विदेशी मुद्रा भंडार का अहम घटक विदेशी मुद्रा आस्तियां 1.67 अरब डॉलर बढ़कर 558.86 अरब डॉलर हो गईं। आंकड़ों के मुताबिक 21 मार्च को समाप्त हफ्ते स्वर्ण भंडार का मूल्य 2.88 अरब डॉलर बढ़कर 77.28 अरब डॉलर पर पहुंच गया।

हालांकि, इस दौरान विशेष आहरण अधिकार (एसडीआर) 2.2 करोड़ डॉलर घटकर 18.24 अरब डॉलर रहा। इसके अलावा अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) के पास भारत का आरक्षित भंडार भी 20 लाख डॉलर घटकर 4.43 अरब डॉलर रह गया। उल्लेखनीय है कि सितंबर 2024 में देश का विदेशी मुद्रा भंडार बढ़कर 704.885 अरब डॉलर के सर्वकालिक उच्चतम स्तर पर पहुंच गया था।

आठ प्रमुख बुनियादी उद्योगों की वृद्धि दर फरवरी में घटकर 2.9 फीसदी पर

एजेंसी

नई दिल्ली। देश के आठ प्रमुख बुनियादी उद्योगों की वृद्धि दर फरवरी में घटकर पांच महीने के निचले स्तर 2.9 फीसदी पर आ गई है। पिछले साल इसी महीने में बुनियादी उद्योगों की वृद्धि दर 7.1 फीसदी रही थी। जनवरी, 2025 में इसकी वृद्धि दर 4.1 फीसदी थी।

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय ने जारी आंकड़ों में बताया कि देश के आठ प्रमुख बुनियादी ढांचा क्षेत्रों की वृद्धि दर फरवरी महीने में घटकर पांच महीने के निचले स्तर 2.9 फीसदी पर आ गई है, जबकि एक साल पहले इसी अवधि में 7.1 फीसदी की वृद्धि दर्ज की गई थी। इससे पहले इन क्षेत्रों की वृद्धि दर 2.4 फीसदी सितंबर में दर्ज की गई थी। आंकड़ों के मुताबिक फरवरी में कच्चे तेल और प्राकृतिक गैस के उत्पादन में नकारात्मक वृद्धि दर्ज की गई है। मंत्रालय के मुताबिक कोयला, रिफाइनरी उत्पाद, इस्पात और बिजली क्षेत्र की उत्पादन वृद्धि क्रमशः 1.7 फीसदी, 0.8 फीसदी, 5.6 फीसदी और 2.8 फीसदी रही है, जबकि पिछले

वर्ष फरवरी में यह दर 11.6 फीसदी, 2.6 फीसदी, 9.4 फीसदी और 7.6 फीसदी रही थी। हालांकि, इस दौरान उर्वरक तथा सीमेंट क्षेत्र के उत्पादन में क्रमश- 10.2 फीसदी और 10.5 फीसदी की वृद्धि दर्ज हुई है। मंत्रालय की ओर से जारी आंकड़ों के मुताबिक चालू वित्त वर्ष 2024-25 की अप्रैल-फरवरी अवधि के दौरान कोयला, कच्चा तेल, प्राकृतिक गैस, रिफाइनरी उत्पाद, उर्वरक, इस्पात, सीमेंट और बिजली क्षेत्र की वृद्धि दर 4.4 फीसदी रही। इससे पिछले वित्त वर्ष 2023-24 की समान अवधि में यह 7.8 फीसदी थी। उल्लेखनीय है कि देश के आठ प्रमुख बुनियादी ढांचा क्षेत्रों का औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (आईआईपी) में 40.27 फीसदी योगदान होता है। आईआईपी समग्र औद्योगिक विकास को मापता है।

एटीएम से अतिरिक्त निकासी पर 01 मई से लगेगा और ज्यादा शुल्क

एजेंसी

नई दिल्ली/मुंबई। रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया (आरबीआई) ने बैंकों को एटीएम से पैसा निकालने पर शुल्क बढ़ाने की अनुमति दे दी है। ग्राहकों को अब एटीएम से निऱ्शुल्क निकासी सीमा खत्म होने के बाद पैसे निकालने पर प्रति लेन-देन 23 रुपये देने होंगे। पहले इसके लिए 21 रुपये देना पड़ता था। नए नियम 01 मई से लागू होंगे।

आरबीआई की तरफ से जारी की गई जानकारी में बताया गया है कि बैंकों को 01 मई से एटीएम से पैसा निकालने पर शुल्क दो रुपये बढ़ाकर 23 रुपये प्रति लेन-देन करने की अनुमति दे दी गई है। नए नियमों के अनुसार तय सीमा से ज्?यादा बार पैसे निकालने की स्थिति में एटीएम ट्रांजेक्शन पर शुल्?क दो रुपये

बढ़ाया गया है। पहले इसके लिए 21 रुपये प्रति ट्रांजेक्शन देना पड़ता था, लेकिन अब ग्राहकों को प्रति ट्रांजेक्शन 23 रुपये देना होगा। यह शुल्क माह में निऱ्शुल्क निकासी की संख्या समाप्त होने के बाद एटीएम से पैसा निकालने पर लगेगा। रिजर्व बैंक ने कहा है कि 1 मई, 2025 से एटीएम बैंकिंग सेवाओं का उपयोग करने वाले ग्राहकों को प्रति लेन-देन 23 रुपये का शुल्क देना होगा, जो पिछली राशि 21 रुपये प्रति लेन-देन से 2 रुपये ज्?यादा है। केंद्रीय बैंक के अनुसार ग्राहक अभी भी अपने बैंक के एटीएम पर प्रति माह पांच लेन-देन (वित्तीय और गैर-वित्तीय दोनों) के लिए पात्र होंगे। आरबीआई के अपडेट दिशा-निर्देशों के आधार पर ग्राहकों को अपने बैंक द्वारा संचालित एटीएम पर प्रति माह पांच मुफ्त लेन-देन (वित्तीय और गैर-वित्तीय दोनों गतिविधियों सहित) करने का विशेषाधिकार है। इसके अलावा वे महानगरीय क्षेत्रों में अन्य बैंकों के एटीएम पर तीन और गैर-मेट्रो क्षेत्रों में पांच मानार्थ लेन-देन के हकदार हैं। इन सीमाओं से अधिक किसी भी लेन-देन पर प्रति लेनदेन 23 रुपये तक का शुल्क लग सकता है।

विदेशी मुद्रा की आवक बढ़ने से रुपये में मजबूती, डॉलर के मुकाबले 32 पैसे की मजबूती के साथ हुआ बंद

नई दिल्ली। डॉलर की आवक जारी रहने के कारण आज रुपया, डॉलर की तुलना में 32 पैसे की मजबूती के साथ 85.47 (अस्थायी) के स्तर पर बंद हुआ। मुद्रा बाजार में भारतीय मुद्रा आज डॉलर की तुलना में 11 पैसे फिसल गई। इसके पहले पिछले कारोबारी दिन भारतीय मुद्रा 85.79 रुपये प्रति डॉलर के स्तर पर बंद हुई थी। रुपये ने आज के कारोबार की शुरुआत भी मजबूती के साथ की थी। पूरे दिन उतार-चढ़ाव का सामना करने के बावजूद रुपया लगातार डॉलर की तुलना में मजबूत बना रहा। भारतीय मुद्रा ने आज सुबह डॉलर के मुकाबले 15 पैसे की तेजी के साथ 85.64 रुपये के स्तर से कारोबार की शुरुआत की थी। दिन के कारोबार के दौरान कुछ समय के लिए डॉलर की मांग बढ़ने पर रुपया 6 पैसे फिसल कर 85.70 के स्तर तक भी आ गया था, लेकिन इसके बाद डॉलर की आवक बढ़ने पर रुपया 39 पैसा मजबूत होकर 85.40 के स्तर तक पहुंच गया।

हालांकि बाद में शेयर बाजार में विदेशी निवेशकों की बिकवाली के कारण बढ़ी डॉलर की मांग के कारण रुपया गिरकर 85.47 के स्तर पर बंद हुआ। भारतीय मुद्रा रुपये ने डॉलर के साथ ही ज्यादातर दूसरी प्रमुख अंतरराष्ट्रीय मुद्राओं के मुकाबले भी मजबूती दिखाई।

एक्टिव इंफ्रास्ट्रक्चर्स ने आईपीओ निवेशकों को किया निराश, पहले दिन ही 2.98 प्रतिशत का नुकसान

एजेंसी

नई दिल्ली। । सड़क, पुल, वाटर सप्लाई सिस्टम और सिंचाई से जुड़े प्रोजेक्ट्स बनाने वाली कंपनी एक्टिव इंफ्रास्ट्रक्चर्स के शेयरों ने आज स्टॉक मार्केट में अपनी एंट्री के पहले दिन ही आईपीओ निवेशकों को काफी निराश किया। आईपीओ के तहत कंपनी के शेयर 181 रुपये के भाव पर जारी किए गए थे। आज स्टॉक एक्सचेंज में इसकी लिस्टिंग भी बिना किसी उतार-चढ़ाव के 181 रुपये के भाव पर ही हुई। लिस्टिंग के बाद खरीदारी के सपोर्ट से ये शेयर उछल कर कुछ देर के लिए 181.40 रुपये के स्तर तक जरूर पहुंचा, लेकिन उसके बाद बिकवाली का दबाव बन जाने के कारण ये टूट कर 171.95 रुपये के स्तर पर गिर गया। पूरे दिन के कारोबार के बाद कंपनी के शेयर 175.60 रुपये के स्तर पर बंद हुए। इस तरह पहले कारोबारी दिन ही कंपनी के आईपीओ निवेशकों को 2.98 प्रतिशत का नुकसान हो गया। एक्टिव इंफ्रास्ट्रक्चर्स का 77.83 करोड़ रुपये का आईपीओ 21 से 25 मार्च के बीच सब्सक्रिप्शन के लिए खुला था। इस आईपीओ को निवेशकों की ओर से फीका रिस्पॉन्स मिला था, जिसके कारण

ये ओवरऑल 1.05 गुना सब्सक्राइब हुआ था। इनमें क्वालिफाइड इंस्टीट्यूशनल बायर्स (क्यूआईबी) के लिए रिजर्व पोर्शन 1 गुना सब्सक्राइब हुआ था। इसी तरह नॉन इंस्टीट्यूशनल इन्वेस्टर्स (एनआईआई) के लिए रिजर्व पोर्शन में 1.66 गुना सब्सक्रिप्शन आया था। इसके अलावा रिटेल इन्वेस्टर्स के लिए रिजर्व पोर्शन 0.57 गुना सब्सक्राइब हुआ था। इस आईपीओ के तहत 10 रुपये फेस वैल्यू वाले 43,00,200 नए शेयर जारी किए गए हैं। आईपीओ के जरिए जुटाए गए पैसे का इस्तेमाल कंपनी अपने पुराने कर्जों को अदा करने, कंस्ट्रक्शन इक्विपमेंट्स की खरीदारी करने, वर्किंग कैपिटल की जरूरतों को पूरा करने और आम कॉर्पोरेट उद्देश्यों में करेगी। कंपनी की वित्तीय स्थिति की बात करें तो प्रॉस्पेक्टस में किए गए दावे के मुताबिक इसकी वित्तीय सेहत लगातार मजबूत हुई है। वित्त वर्ष 2022-23 में कंपनी को 9.87 करोड़ रुपये का शुद्ध लाभ हुआ था, जो अगले वित्त वर्ष 2023-24 में बढ़कर 10.45 करोड़ रुपये के स्तर पर पहुंच गया। इस दौरान कंपनी का राजस्व 836 प्रतिशत से अधिक की चक्रवृद्धि दर से बढ़कर 97.43 करोड़ रुपये के स्तर पर पहुंच गया। मौजूदा वित्त वर्ष की पहली छमाही यानी अप्रैल से सितंबर 2024 के बीच कंपनी को 5.55 करोड़ रुपये का शुद्ध लाभ हो चुका है। इसी तरह इस अवधि में कंपनी 33.90 करोड़ रुपये का रेवेन्यू हासिल कर चुकी है।

स्टेट बैंक के प्रमुख शेट्टी भारतीय बैंक संघ के चेयरमैन नियुक्त

एजेंसी

नई दिल्ली। भारतीय स्टेट बैंक के चेयरमैन सीएस शेट्टी को भारतीय बैंक संघ (आईबीए) के नए अध्?यक्ष के रूप में चुना गया है। सेट्टी अगली वार्षिक आम बैठक (एजीएम) तक आईबीए प्रमुख के तौर पर काम करेंगे। एक आधिकारिक बयान के मुताबिक बैंकों के समूह की प्रबंध समिति ने स्टेट बैंक के प्रमुख सीएस शेट्टी को अगली वार्षिक आम बैठक तक आईबीए का चेयरमैन चुना है। यह निर्णय प्रबंध समिति की बैठक के दौरान लिया गया। सेट्टी अगली वार्षिक आम बैठक तक आईबीए अध्यक्ष के रूप में काम करेंगे, जो कि बैंकिंग क्षेत्र के हितों का प्रतिनिधित्व करने वाले समूहीकरण का नेतृत्व करेगा। यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी ए. मणिमेखलाई, पंजाब

एंड सिंध बैंक के प्रबंध निदेशक स्वरूप कुमार साहा और बैंक ऑफ बहरीन एंड कुवैत के क्षेत्रीय प्रमुख एवं मुख्य कार्यपाल अधिकारी (भारत) माधव नायर डिप्टी चेयरमैन चुने गए हैं। इसके अलावा निजी क्षेत्र के करूर वैश्य बैंक के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी बी. रमेश बाबू को आईबीए का मानद सचिव नियुक्त किया गया है। आईबीए की पिछली वार्षिक आम बैठक इस महीने की शुरुआत में मुंबई में आयोजित की गई थी। इसमें वित्तीय सेवा विभाग के सचिव एम. नागराजू भी शामिल हुए थे।

एलन मस्क ने 33 अरब डॉलर में एक्स को एक्सएआई को बेचा

वाशिंगटन। अमेरिकी उद्योग पति एलन मस्क ने घोषणा की कि उन्होंने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स (पूर्व में ट्विटर) को अपनी खुद की एआई कंपनी एक्सएआई को 33 अरब डॉलर के ऑल-स्टॉक सौदे में बेच दिया है।दोनों कंपनियाँ निजी स्वामित्व वाली हैं, इसलिए उन्हें अपने वित्तीय विवरणों को सार्वजनिक करने की जरूरत नहीं है। श्री मस्क ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा कि अधिग्रहण एक्सएआई की उन्नत एआई क्षमताओं को एक्स की विशाल वैश्विक पहुंच के साथ मिलाकर अपार संभावनाओं को अनलॉक करेगा। इस सौदे में एक्सएआई का मूल्य 80 अरब डॉलर और एक्स का 33 अरब डॉलर है। श्री मस्क, जो टेस्ला और स्पेसएक्स के सीईओ भी हैं और अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के सलाहकार हैं, ने 2022 में ट्विटर के नाम से मशहूर इस प्लेटफॉर्म को 44 अरब डॉलर में खरीदा था। इसके बाद उन्होंने कर्मचारियों की संख्या में कमी की, अभद्र भाषा, गलत सूचना और उपयोगकर्ता सत्यापन पर नीतियों में बदलाव किया और प्लेटफॉर्म को एक्स के रूप में पुनः ब्रांड किया। एक्स को खरीदने के एक साल बाद श्री मस्क ने एक्सएआई की स्थापना की, जो कृत्रिम बुद्धिमत्ता के क्षेत्र में उनका अगला प्रमुख उद्यम था। उन्होंने एक्स पर लिखा ÷ एक्सएआई और एक्स का भविष्य आपस में जुड़ा हुआ है। आज, हम आधिकारिक तौर पर डेटा, मॉडल, कंप्यूट, वितरण और प्रतिभा को मिलाने का कदम उठाते हैं।

गिरावट वाले माहौल में भी रैपिड फ्लीट ने निवेशकों को कराया मुनाफा

एजेंसी

नई दिल्ली। लॉजिस्टिक्स और रोड ट्रांसपोर्टेशन सर्विसेज मुहैया कराने वाली कंपनी रैपिड फ्लीट मैनेजमेंट के शेयर आज गिरावट वाले माहौल में लिस्टिंग होने के बावजूद अपने पहले दिन के कारोबार में आईपीओ निवेशकों को करीब साढ़े चार प्रतिशत का मुनाफा कराने में सफल रहे। आईपीओ के तहत कंपनी के शेयर 192 रुपये के भाव पर जारी किए गए थे। आज नेशनल स्टॉक एक्सचेंज के एसएमई प्लेटफॉर्म पर इनकी लिस्टिंग 1.56 प्रतिशत प्रीमियम के साथ 195 रुपये के भाव पर हुई। लिस्टिंग के बाद खरीदारी के सपोर्ट से ये शेयर उछल कर 203.75 रुपये के स्तर पर पहुंचा। हालांकि बाद में मुनाफा वसूली शुरू हो जाने के कारण कंपनी के शेयर 4.43 प्रतिशत के मुनाफे के साथ 200.50 रुपये के स्तर पर बंद हुए। रैपिड फ्लीट मैनेजमेंट का 43.87 करोड़ रुपये का आईपीओ 21 से 25 मार्च के बीच सब्सक्रिप्शन के लिए खुला था। इस

आईपीओ को निवेशकों की ओर से एवरेज रिस्पॉन्स मिला था, जिसके कारण ये ओवरऑल 1.65 गुना सब्सक्राइब हुआ था। इनमें क्वालिफाइड इंस्टीट्यूशनल बायर्स (क्यूआईबी) के लिए रिजर्व पोर्शन 1.07 गुना सब्सक्राइब हुआ था। इसी तरह नॉन इंस्टीट्यूशनल इन्वेस्टर्स (एनआईआई) के लिए रिजर्व पोर्शन में 4.38 गुना सब्सक्रिप्शन आया था। इसके अलावा रिटेल इन्वेस्टर्स के लिए रिजर्व पोर्शन 0.81 गुना सब्सक्राइब हुआ था। इस आईपीओ के तहत 10 रुपये फेस वैल्यू वाले 22,84,800 नए शेयर जारी किए गए हैं। आईपीओ के जरिए जुटाए गए पैसे का इस्तेमाल कंपनी नई गाड़ियों की खरीदारी करने, वर्किंग कैपिटल की जरूरतों को पूरा करने, और आम कॉर्पोरेट उद्देश्यों में करेगी। कंपनी की वित्तीय स्थिति की बात करें तो प्रॉस्पेक्टस में किए गए दावे के मुताबिक इसकी वित्तीय सेहत लगातार मजबूत हुई है। वित्त वर्ष 2021-22 में कंपनी को 3.4 करोड़ रुपये का शुद्ध लाभ हुआ था, जो अगले वित्त वर्ष 2022-23 में बढ़कर 4.71 करोड़ और 2023-24 में 8.07 करोड़ रुपये के स्तर पर पहुंच गया। इस दौरान कंपनी का राजस्व 116.32 करोड़ रुपये के स्तर पर पहुंच गया। मौजूदा वित्त वर्ष की पहली छमाही यानी अप्रैल से सितंबर 2024 के बीच कंपनी को 7.01 करोड़ रुपये का शुद्ध लाभ हो चुका है। इसी तरह इस अवधि में कंपनी 87.39 करोड़ रुपये का रेवेन्यू हासिल कर चुकी है।

लाल से लेकर नारंगी तकज किस रंग का फूड खाने से क्या होता है सेहत पर असर

सब्जियां और फल कई न्यूट्रिशन से भरपूर होते हैं और हर रंग की सब्जी और फलों की अपनी एक अलग खासियत है. जान लेते हैं लाल से लेकर हरी और नारंगी तक किस रंग की सब्जी या फल खाने से क्या होता है.

हेल्दी और फिट रहने के लिए अच्छी मात्रा में सब्जियों और फलों को डाइट में जगह देनी चाहिए, क्योंकि हर सब्जी और फल की अपनी खासियत होती है और इसलिए सेहत को कई फायदे मिलते हैं. हेल्दी रहने के लिए न्यूट्रिशन की जरूरत होती है. सब्जियां और फल मिनरल्स से लेकर विटामिन्स का भी बेहतरीन सोर्स हैं. इसलिए डाइट में हरी के साथ ही रंग-बिरंगी मौसमी सब्जियां और अलग-अलग फ्रूट्स को शामिल करने की सलाह दी जाती है. वेट कंट्रोल करने की बात हो तब भी सब्जियों और फलों का ज्यादा सेवन करना काफी फायदेमंद रहता है, लेकिन क्या आपको पता है कि किस रंग की सब्जी या फल खाने से आपकी सेहत पर क्या असर होता है?

डाइट में ज्यादातर लोग हरी पत्तेदार सब्जियां शामिल करने पर जोर देते हैं, क्योंकि फिटनेस के मामले में भी आप इन सब्जियों को गिल्ट फ्री होकर खा सकते हैं. हालांकि इसके अलावा हर रंग की सब्जी और फलों की अलग न्यूट्रिशन वैल्यू होती है. आज जानेंगे लाल, हरी, नारंगी और पर्पल कलर की सब्जियां और फल खाने से क्या होता है.

लाल रंग के फल और सब्जियां

अगर आप अपनी डाइट में टमाटर, अनार, चुकंदर, स्ट्रॉबेरी, तरबूज, सेब, लाल शिमला मिर्च, चैरी जैसी चीजें शामिल करते हैं तो इससे आपकी स्किन का सन डैमेज से बचाव होता है. इसके अलावा दिल की हेल्थ अच्छी रहती है साथ ही इसमें मौजूद एंटीऑक्सीडेंट्स इम्यून सिस्टम को मजबूत बनाए रखने में सहायक होते हैं.

हरे रंग के फूड्स खाने के फायदे

डाइट में हरे रंग की सब्जियां और फ्रूट्स को शामिल करने से दिल की बीमारियों का जोखिम कम होता है. इनमें एंटी कैंसर कंपाउंड्स पाए जाते हैं. इन फूड्स के एंटी इंफ्लामेटरी गुण सूजन आदि सो बचाव करते हैं साथ ही त्वचा भी नेचुरली चमकदार और यंग बनती है. हरे फूड्स शरीर को नेचुरल तरीके से डिटॉक्सीफाई करने में मददगार होते हैं.

ऑरेंज कलर के फूड्स खाने से फायदे

डाइट में पंपकिन यानी कद्दू, ऑरेंज फ्रूट्स, पका हुआ पपीता, शकरकंद शामिल करने से रिप्रोडक्टिव डिजीज से बचाव होता है. ये सब्जियां बीटा-कैरोटीन से भरपूर होती हैं, इसलिए आंखों को फायदा होता है. इसके साथ ही इनमें रिच एंटीऑक्सीडेंट्स होते हैं जो कोलेजन बूस्ट करने में हेल्फुल हैं.

पर्पल कलर के फूड्स से क्या हैं फायदे

बैंगनी रंग के फूड्स में पॉलीफेनॉल होते हैं जो कई हेल्थ प्रॉब्लम से बचाव करते हैं. इसके साथ ही इनमें एंटी कैंसर कंपाउंड्स भी पाए जाते हैं. ये फूड्स बढ़ती उम्र में हेल्दी रखने, स्किन को यंग बनाए रखने, हार्ट को हेल्दी रखने, डैमेड सेल्स को रिपेयर करने के साथ ही मेटाबॉलिज्म को भी बूस्ट करते हैं. इसके अलावा पर्पल कलर के फूड्स जैसे बैंगन, बेरीज, अंगूर, आदि खाने से कॉग्नि नेगेटिव हेल्थ (सोचने-समझने और सीखने की क्षमता) भी दुरुस्त रहती है.

ओईसीडी ऋण रिपोर्ट 2025 में दिखा अमीर देशों का बढ़ता जोखिम

संयुक्त राज्य अमेरिका में आर्थिक मंदी की भविष्यवाणी की गयी है और यहाँ तक कि ट्रम्प ने भी ऐसी संभावना को स्वीकार किया है। मंदी की कोई भी चर्चा और निवेशकों का पैसा शेयरों से बॉन्ड की ओर जाने से ब्याज दरों में गिरावट आती है। अफ़वाहें चल रही हैं कि अमेरिका को 7 ट्रिलियन के ऋण का सामना करना पड़ेगा। यह कोई छोटा बदलाव नहीं है।

विश्व आर्थिक सहयोग और विकास संगठन (ओईसीडी) की ऋण रिपोर्ट 2025 विकास और आय पर विभिन्न देशों की समग्र ऋणग्रस्तता की एक गंभीर तस्वीर पेश करती है। यह कई सच्चाइयों को उजागर करता है, जिनमें वे लोग भी शामिल हैं जो राजकोषीय विवेक और ऋण उत्तरजीविता के पारंपरिक उच्च पुजारी थे।अमीरों के क्लब के रूप में जाने जाने वाले ओईसीडी ने खुलासा किया है कि यूरोप के अत्यधिक विकसित देशों ने अपने वार्षिक रक्षा बजट की तुलना में अपने बकाया ऋणों पर ब्याज का भुगतान करने में अधिक खर्च करने की लगातार प्रवृत्ति दिखायी है। यह इस बात को स्पष्ट रूप से रेखांकित करता है कि अमेरिकियों ने यूरोप को स्पष्ट तौर पर बताया था कि वे शत्रुतापूर्ण आक्रमण के खिलाफ खुद की रक्षा करने में असमर्थ हे तथा इसके लिए अमेरिका पर ही भरोसा करते हैं।

यह आर्थिक संकेतक अकेले ही स्पष्ट करता है कि यूरोप के लोग अपने दरवाजे पर एक आक्रामक रूस के सामने कितने असहाय हैं, जब अमेरिका ने खुद की रक्षा के लिए उनके बिलों का भुगतान करने से इनकार कर दिया है।फिर भी, दूसरों को उपदेश पढ़ने की आदत जल्दी खत्म नहीं होती। ओईसीडी रिपोर्ट विकसित देशों के साथ-साथ तथाकथित उभरती अर्थव्यवस्थाओं और विकासशील देशों के ऋण प्रोफाइल की भी जांच करती है। विकसित देश महामारी और अपनी अर्थव्यवस्थाओं को मजबूत करने के लिए आयोजित कृत्रिम प्रोत्साहनों के बाद सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) अनुपात में बहुत अधिक ऋण दिखा रहे हैं।ओईसीडी रिपोर्ट अपनी सिफारिशों में जोरदार है कि विकसित देशों के बाद के समूह, अर्थात उभरती अर्थव्यवस्थाओं और विकासशील देशों को राजकोषीय विवेक और कम ऋण जीडीपी अनुपात बनाये रखने के बारे में विशेष रूप से सावधान रहना चाहिए।

वैसे भी, विभिन्न देशों के इन दो समूहों के सार्वजनिक ऋण प्रोफाइल का जायजा लेने से उभरते बाजारों और विकासशील अर्थव्यवस्थाओं और विकसित देशों के ऋण प्रोफाइल में बड़े अंतर का पता चलता है।ओईसीडी देशों में जारी किये गये सम्प्रभु ऋणों के अध्ययन में रिकॉर्ड 17 ट्रिलियन तक पहुंचने का अनुमान है, जो 2023 में 14 ट्रिलियन से अधिक है। उभरते बाजारों और विकासशील अर्थव्यवस्थाओं (ईएमडीई) के ऋण बाजारों के आंकड़े भी काफी हद तक बढ़े हैं, लेकिन अमीर देशों की तुलना में बहुत कम हैं, जो 2007 में लगभग 1 ट्रिलियन से बढ़कर 2024 में 3 ट्रिलियन से अधिक हो गये हैं।

सरकारी ऋण का एक पहलू आम तौर पर बहुत कम सराहा जाता है। वह यह है कि सरकारी ऋणों को पुनर्भुगतान के माध्यम से शायद ही मिटाया जाता है। ये केवल पुनर्चक्रण हैं, यानी पुराने परिपक्व ऋणों को नये सिरे से उधार लेकर चुकाया जाता है। इसलिए जो मायने रखता है वह यह कि आप पुराने ऋणों को कैसे बदल रहे हैं।यदि ब्याज दरें बढ़ रही हैं, तो नये ऋण उच्च ब्याज दरों पर लिए जाएंगे और इस प्रकार, सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि उच्च ब्याज भार के कारण उधार की कुल लागत बढ़ जाती है। ब्याज दरों में गिरावट होने पर, ये पुनर्वित्त लागतें कम हो जाती हैं। वैश्विक वित्तीय बाजार वर्तमान में ट्रम्प के गुस्से से परेशान हैं। व्यापार और आर्थिक नीतियों पर अमेरिकी नीतियों में बेतहाशा बयान और उतार-चढ़ाव भ्रामक संकेत दे रहे हैं। शेयर बाजारों में व्यापक उतार-चढ़ाव है और निवेशकों का पैसा शेयरों से बॉन्ड की ओर जा रहा है।संयुक्त राज्य अमेरिका में आर्थिक मंदी की भविष्यवाणी की गयी है और यहाँ तक कि ट्रम्प ने भी ऐसी संभावना को स्वीकार किया है। मंदी की कोई भी चर्चा और निवेशकों का पैसा शेयरों से बॉन्ड की ओर जाने से ब्याज दरों में गिरावट आती है। अफ़वाहें चल रही हैं कि अमेरिका को 7 ट्रिलियन के ऋण का सामना करना पड़ेगा। यह कोई छोटा बदलाव नहीं है। आने वाले दिनों में ब्याज दरों में मामूली गिरावट से अमेरिकी संघीय सरकार को अपने भारी बकाया ऋणों के पुनर्चक्रण पर ब्याज लागत बचाने में मदद मिल सकती है। इसलिए, ट्रम्प के नखरे ऋण पुनर्चक्रण पर ब्याज के बोझ को कम करने के इस लक्ष्य को प्राप्त करने में मदद करने के तरीके थे।जो भी हो, दुनिया ऋण पुनर्गठन में एक संभावित कठिन कार्य का सामना कर रही है। ओईसीडी रिपोर्ट में गणना की गयी है कि %आगे देखते हुए, कुल सम्प्रभु ऋण का 42प्रतिशत और सभी बकाया कॉर्पोरेट बॉन्ड ऋण का 38 प्रतिशत अगले तीन वर्षों में परिपक्व होने वाला है%।

रिपोर्ट बताती है कि ओईसीडी देशों के लिए पुनर्वित्त लागत 2024 में पिछले वर्ष की तुलना में सकल घरेलू उत्पाद के 0.3प्रतिशत तक बढ़ गयी है, जिससे सकल घरेलू उत्पाद के लिए निष्क्रिय भुगतान अनुपात सकल घरेलू उत्पाद के 3.3प्रतिशत से अधिक हो गया है। यह रक्षा पर उनके खर्च से कम से कम एक प्रतिशत अधिक है। अमेरिकी नये रणनीतिक रुख के साथ, इन देशों के लिए इस प्रवृत्ति को उलटना अनिवार्य होगा।ऋण स्थिरता में एक अत्यंत महत्वपूर्ण कारक विदेशी निवेशकों के लिए किसी देश के सार्वजनिक ऋण का जोखिम है। विदेशी धारकों के लिए जोखिम जितना बड़ा होगा, भेद्यता उतनी ही अधिक होगी। यहां भी रुझान परेशान करने वाले हैं।

सरकारी बॉन्ड के खरीदारों की प्रोफ़ाइल में घरेलू स्रोतों से विदेशी संस्थागत निवेशकों और अन्य की ओर समग्र बदलाव से भुगतान संबंधी समस्याओं का जोखिम बढ़ गया है।ओईसीडी देशों में, घरेलू सॉवरेन बॉन्ड की केंद्रीय बैंक होल्डिंग्स में गिरावट आई है। ओईसीडी रिपोर्ट से पता चलता है कि 2021 में कुल बकाया ऋण का 29प्रतिशत से 2024 में 19प्रतिशत हो गया, जबकि घरेलू परिवारों की हिस्सेदारी 5 से बढ़कर 11प्रतिशत हो गयी, और विदेशी निवेशकों की हिस्सेदारी 29 से बढ़कर 34प्रतिशत हो गयी।

आइए, हम भारत के ऋण प्रोफाइल और बाहरी झटकों के प्रति हमारी भेद्यता पर एक नज़र डालें। भारतीय अर्थव्यवस्था के अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष की नवीनतम सलाह रिपोर्ट कुछ संबंधित पहलुओं पर अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। सकल घरेलू उत्पाद के प्रतिशत के रूप में बाहरी ऋण 18.9 प्रतिशत पर बना हुआ है और 2025-26 में यह घटकर 18.6प्रतिशत हो जायेगा। इसमें से अल्पकालिक ऋण केवल 8.3प्रतिशत है जिसे भेद्यता के उपाय के रूप में लिया जाता है क्योंकि यह तत्काल पुनर्भुगतान बोझ को इंगित करता है।कुल मिलाकर, भारतीय राजकोषीय समेकन पर निरंतर जोर और सरकारी वित्त में संतुलन तक पहुँचने के कारण पिछले कुछ वर्षों में ऋण प्रोफ़ाइल में सुधार हो रहा है। बेशक, अर्थव्यवस्था की उछाल भरी स्थिति - जिसका एक संकेत कर संग्रह में उछाल है - ने इन लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद की है। आखिरकार, बढ़ती हुई लहरें सभी नावों को ऊपर उठाती हैं, सरकार के साथ-साथ व्यक्ति को भी।

संपादकीय

राहुल को क्यों नहीं बोलने देते बिरला

लगातार तीन बार केन्द्र की सरकार बना लेने के बावजूद भारतीय जनता पार्टी विपक्ष के नेताओं, खासकर राहुल गांधी को न बोलने देने पर आमादा है, जो इस बार नेता प्रतिपक्ष भी हैं। पिछली लोकसभा में जब राहुल विपक्ष के नेता नहीं थे और न ही कांग्रेस की सदस्य संख्या आज के जितनी थी, तब भी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी उनसे खौफ़ खाते थे और उन्हें चुप कराने के सारे उपाय करते थे। वर्तमान लोकसभा में, जो पिछले साल के मध्य में गठित हुई थी, कांग्रेस की सदस्य संख्या दोगुनी तो है ही, राहुल विपक्ष के नेता हैं। ऐसे में मोदी का उनसे पहले से दोगुना भय खाना लाजि मी है। बुधवार को तो हद हो गयी जब राहुल अपनी कोई बात कहने के लिये उठे ही थे कि लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने कार्यवाही ही स्थगित कर दी।

पिछले लम्बे समय से मानो सदन के अध्यक्ष ने यह परिपाटी बना ली है कि राहुल को उनकी बात रखने ही नहीं दी जायेगी। राहुल के बोलने के दौरान अक्सर सत्ता पक्ष के सदस्य शोर-शराबा करते हैं या उनके भाषणों के प्रमुख हिस्से रिकॉर्ड में जाने ही नहीं दिये जाते-खासकर, जब वे मोदी और उनके कारोबारी मित्रों गौतम अदानी तथा मुकेश अम्बानी का उल्लेख करते हैं। पिछली लोकसभा के आखिरी दिनों में तो सरकार उनसे इस कदर भयभीत दिखाई दी कि उनकी सदस्यता तक छीन ली गयी थी। उनका बंगला भी आनन-फानन में खाली करा लिया गया था। उनके खिलाफ एक अवमानना केस तत्काल सुनवाई में लाकर सरकार ने यह प्रबन्ध भी कराया था। अंततः अदालती फैसले से उनकी सदस्यता बहाल हुई थी। इसके बावजूद राहुल न झुके, न मोदी तथा भाजपा सरकार पर हमले करना उन्होंने छोड़ा। वे सरकार द्वारा अदानी-अम्बानी को दिये जा रहे संरक्षण को भरपूर उजागर करते हैं और बताते हैं कि मोदी के कारण ये व्यापारी फल-फूल रहे हैं जबकि जनता बेहाल है।बुधवार को संसद भवन के बाहर उन्होंने मीडिया के समक्ष आरोप लगाया कि जब भी वे लोकसभा सदन में कुछ बोलने के लिए खड़े होते हैं, उन्हें अपनी बात कहने नहीं दी जाती। बोलने का मौका देने की बजाये ओम बिरला नेता विपक्ष को सदन के नियमों का पालन करने की नसीहत देते रहे। उल्लेखनीय है कि कांग्रेसी सांसदों द्वारा टी-शर्ट पहनकर सदन में आने पर उन्होंने सदन की मर्यादा व आचरण का पालन करने का आग्रह किया था। उनके अनुसार यह मर्यादा और शालीनता के मानदंडों तथा सदन की परंपरा के प्रतिकूल है। बिरला ने नेहरू-गांधी परिवार का नामेल्लेख किये बगैर ध्यान दिलाया कि इसी सदन में पिता-पुत्री, मां-बेटी और पति-पत्नी सदस्य रहे हैं। इस परिप्रेक्ष्य में नेता प्रतिपक्ष से उन्होंने अपेक्षा की कि लोकसभा प्रक्रिया के नियम 349 के अनुसार वे सदन में आचरण और व्यवहार करें। अध्यक्ष की इस बात से इंकार नहीं है कि मर्यादा तथा शालीनता का सभी को पालन करना चाहिये। सवाल यह है कि ऐसी सारी अपेक्षाएं बिरला साहब केवल विपक्ष से ही करते हैं।

जब भाजपा सदस्यों के बोलने की बारी आती है तो उन्हें पूरी छूट मिलती है। उनके बारे में कई बार कहा गया है कि वे दोहरा रवैया अपनाते हैं और भाजपा-सदस्य के रूप में बर्ताव करते हैं। वे खुद विपक्षी नेताओं के भाषण में अड़ंगा डालते हैं। यहां तक कि सरकार का बचाव भ करते हैं। अक्सर चर्चाओं के उन हिस्सों को काट दिय जाता है जिनमें सरकार की, वह भी जिनमें नरेन्द्र मोद की आलोचना होती है।बहरहाल, सवाल यह है कि आखिर राहुल से किस बात का सत्ता को खौफ है? कह जा सकता है कि राहुल की लगभग हर बात से मोदी औ उनकी सरकार को डर लगती है।

वे जब भी कोई मुद्दा उठाते हैं या किसी विषय प अपनी राय रखते हैं, तो वह सरकार को परेशान कर वाली होती है। देश के सारे संसाधनों को कु व्यवसायियों को सौंपना, भाजपा सरकारों का अन्याय भ्रष्टाचार समेत ऐसे कई मुद्दे हैं जिन्हें सामने लाकर राहु मोदी का भ्रष्टाचारी व निरंकुश चेहरा सामने ला चु हैं।लोकसभा-2024 में उनकी वायनाड व रायबरेली जीत ने उनकी ताकत को तो बढ़ाया ही, उनकी बह प्रियंका का वायनाड से जीतकर आना भाजपा के लि और भी परेशानी का सबब है।

नो अदर लैंड', तब जाएं तो जाएं कहां?

दरअसल नो अदर लैंड वेस्टलैंड के एक हिस्से मसाफिर (मुसाफ़िर)यत्ता के गांवों की कहानी है जहां बासल अद्रा पैदा हुआ है। दुनिया के नक्शे पर यह जगह मौजूद है जो सात -आठ गांवों से मिलकर बनी है। इज़राइल की सेना इस जगह को फौज के प्रशिक्षण के लिए इस्तेमाल करना चाहती है। वह इस रास्ते में आने वाले सभी घरों और स्कूलों को बुलडोज़ कर देना चाहती है।तानाशाहों को हमेशा लगता है कि कला जैसे उनके लिए काल बन कर आ रही है। इसलिये वे जब-तब कभी कलाकार पर तो कभी उसके काम पर हमला बोलते रहते हैं। पूरब से पश्चिम तक मामला एक सा ही है। तभी तो तीन सप्ताह पहले ऑस्कर से सम्मानित बेस्ट डॉक्यूमेंट्री नो अदर लैंड के चार निर्देशकों में से एक हमदान बलाल पर सोमवार को उन्हीं के गांव में इज़रायली सेना का हमला हो गया। अगले दिन जब उन्हें रिहा किया गया तब उनके सर और शरीर पर चोटों के निशान थे। नो अदर लैंड के चार निर्देशकों में से दो फ़िलीस्तीनी हैं और दो इज़राइली।

चार सह-निर्देशकों- बासल अद्रा, हमदान बलाल, युवाल अब्राहम और राहेल सोर की बनाई पहली ही डॉक्यूमेंट्री ने ऑस्कर जीता है और पूरी दुनिया में चर्चा का केंद्र बन गई है।%नो अदर लैंड डॉक्यूमेंट्री के ज़रिये इन चारों का मकसद था कि साथ में उनकी आवाज़ ज़्यादा बुलंद होगी; और ऐसा हुआ भी। ऑस्कर समारोह में जब इज़रायली पत्रकार युवाल अब्राहम ने अपने फ़िलीस्तीनी सह-निर्देशक बासल अद्रा की ओर देख कर कहा- जब मैं बासल को देखता हूं, तो मुझे अपना भाई दिखाई देता है, लेकिन हम समान नहीं हैं। हम एक ऐसे शासन में रहते हैं जहां मैं तो आज़ाद हूं, नागरिक कानून के अधीन हूं लेकिन बासल सैन्य कानूनों के अधीन है जो उसके जीवन को आए दिन नष्ट करते रहते हैं और वह कुछ नहीं कर सकता। इस बयान ने अभी एक साथ मज़बूत आवाज़ की पैरवी की ही थी कि बलाल पर हमला हो गया और वह चीखता रहा कि मैं मर रहा हूं।ज् ये ताकतें नो अदर लैंड को रिलीज़ होने भी नहीं दे रहीं और ओटीटी मंच इसे हटाने पर मजबूर कर दिए गए हैं।

दरअसल नो अदर लैंड वेस्टलैंड के एक हिस्से मसाफिर (मुसाफ़िर)यत्ता के गांवों की कहानी है जहां बासल अद्रा पैदा हुआ है। दुनिया के नक्शे पर यह जगह मौजूद है जो सात -आठ गांवों से मिलकर बनी है। इज़राइल की सेना इस जगह को फौज के प्रशिक्षण के लिए इस्तेमाल करना चाहती है। वह इस रास्ते में आने वाले सभी घरों और स्कूलों को बुलडोज़ कर देना चाहती है। पूरी डाक्यूमेंट्री में सेना के बुलडोज़र घर-स्कूल ढहाते नज़र आते हैं। घर गिरने के बाद बासल का परिवार गुफ़ाओं में रहने के लिए मजबूर हो जाता है।विरोध करने पर उसके चाचा को घायल कर दिया जाता है। वह अस्पताल में ज़िन्दगी और मौत के बीच संघर्षरत है। बासल के पास एक कैमरा है और वह सब कुछ शूट करता है। ऐसा लगता है जैसे सेना के हथियार का सामना वह अपने कैमरे से ही कर रहा है। उसका एक ही मक़सद है कि उसके इलाके की तकलीफ़ दुनिया तक पहुंचाए। आखिर यह उसकी ज़मीन है और उसके पुरखे यहां 1830 से रहते आए हैं। इजराइल के सुप्रीम कोर्ट में उन्होंने सप्रमाण जानकारी दी है कि वे उनके कब्ज़े से पहले यहां रहते आए हैं। धीरे-धीरे ही सही उनकी अवाज़ को इंटरनेट पर बल मिलता है। एक समय ब्रिटेन के प्रधानमंत्री टोनी ब्लेयर भी मसाफिर (मुसाफ़िर) यत्ता आते हैं। फिर वह सड़क नहीं टूटती, मकान खड़े रहते हैं। कुछ दिनों बाद फिर वही भय के हालात बन जाते हैं। डॉक्यूमेंट्री में बासल की मां भी हैं, जो खुद कभी एक्टिविस्ट रही हैं, लेकिन बासल की हताशा और हालात से दुखी हैं। वह दोहराती है कि हमें भी अपनी पहचान चाहिए, हमारे बच्चों को क्यों अच्छी ज़िन्दगी बसर करने का हक़ नहीं? दरअसल बासल ने क़ानून की पढ़ाई की है लेकिन आर्थिक हालात इस क़दर खस्ता हैं कि काम के कोई अवसर नहीं हैं।

ऐसे ही एक दिन उसकी मुलाकात इजराइली पत्रकार युवाल अब्राहम से होती है जो सेना के उत्पीड़न को रिपोर्ट करता है। वह फिल्म में भी उसी बात का ज़िक्र करता है जो उसने ऑस्कर के मंच से कही थी कि- %मैं आज़ाद नागरिक हूं तो मेरा भाई बासल क्यों नहीं?% युवाल से बासल पूछता है -

-आप कौन हैं?

00 मैं पत्रकार हूं।

-आप अरेबिक हैं?

00 नहीं, इजराइली हूं।

-क्या सच? आप क्या मानव अधिकार वाले हो?

00 हां कुछ ऐसा ही..

-क्या आपको लगता है कि आपका देश सही कर रहा है?

00 नहीं, मुझे लगता है यह जुर्म है।

सच कहा जाए तो %नो अदर लैंड% दुनिया के अपनी ज़मीन से बेदखल कर शरणार्थी बनाए गए तमाम लोगों की कहानी होने के साथ यह इस बात को भी प्रभावी तरीके से बताती है कि लड़ाई जिसके नाम पर लड़ी जा रही है, वे उन हुक्मरानों के साथ नहीं हैं। तभी तो सेना का नुमाइंदा जब युवाल से पूछता है कि तुम यहां क्या कर रहे हो? इनका साथ क्यों दे रहे हो? तब युवाल कहता है क्योंकि यह सब तुम मेरे नाम पर कर रहे हो, नॉट इन माय नेम। उम्मीद जगाने वाली बात तो यह भी है कि फ़िलिस्तीन की तकलीफ़ को अंतरराष्ट्रीय मंचों पर आवाज़ देने वाले कोई और नहीं बल्कि यहूदी हैं।

सभी को याद है कि एक इज़रायली फिल्म निर्देशक नदाव लैपिड साल 2022 में अंतरराष्ट्रीय गोवा फिल्म फेस्टिवल में भारत आए थे और उन्होंने द कश्मीर फाइल्स को वल्गर प्रोपेगेंडा यानी अश्लील प्रचार कहा था। इज़राइली फिल्म निर्देशक की इस टिप्पणी से भारत में तूफ़ान आ गया था क्योंकि यह आलोचना सरकारी मंत्री के सामने हुई थी और नरेंद्र मोदी सरकार ने इस फिल्म के प्रचार में कोई कसर नहीं छोड़ी थी।

लैपिड बेहद प्रतिभाशाली निर्देशक हैं जिनकी फ़िल्में बर्लिन और कान फिल्म फेस्टिवल में अवार्ड हासिल कर चुकी हैं। उनकी फिल्म सिनोनिम्स (पर्यायवाची) को प्रतिष्ठित बर्लिन फिल्म फेस्टिवल में गोल्डन बेयर अवार्ड से सम्मानित किया जा चुका है। सिनोनिम्स लैपिड की लगभग आत्मकथात्मक फिल्म है। कथानक का युवा सैनिक इज़राइल में जन्मा ज़रूर है लेकिन वह वहां से भागना चाहता है। वह फ्रांस पहुंचता है। यह दुनिया उसे खुला और उदार महसूस कराती हुई। वह कल्पना करता है कि वह जन्मा चाहे इज़राइल में हो, लेकिन फ्रांस का नागरिक बनना चाहता है। मरना भी वहीं चाहता है ताकि उसका पुनर्जन्म फ्रेंच नागरिक के रूप में हो। उसे यह भी लगता है कि इज़राइल एक ख़राब और घिनौनी परिकल्पना पर बना दिया गया देश है। एक ऐसा देश जिसकी ऊर्जा में कुछ कमी है। जिसकी ज़िंदादिली ग़ायब है।

नो अदर लैंड भी बर्लिन फिल्म से सम्मानित होकर ऑस्कर हासिल कर चुकी है लेकिन शांति का संदेश दोनों ओर के स्वार्थी तत्वों को बर्दाश्त नहीं हो रहा है। फिल्म बनाने वालों पर हमले हो रहे हैं। दुनिया के इन लोगों के लिए स्कूल और अस्पतालों से ज़्यादा ज़रूरी सैनिक अड्डे हैं तभी तो हमदान बलाल पर रमज़ान के महीने में अफ़्तार के समय हमला कर दिया जाता है। वह उस दिन मसाफ़र यत्ता में अपने परिवार के साथ था। मसाफिर यत्ता गाज़ा में नहीं है, यह वेस्टलैंड में है जहां शासन के लिए इजराइल के मातहत स्थानीय सदस्यों को चुना जाता है फिर भी वहां हिंसा और रक्तपात है। जब आधुनिक समय के महान मसखरे चार्ली चैपलिन की मूक फिल्मों को ही तमाम देशों की सरकारों ने नहीं छोड़ा तो फिर यह तो एक गंभीर डॉक्यूमेंट्री के निर्देशक हैं

और सवाल पूछते हैं कि हमारे गांव में इजराइली कारें पीले रंग की और फ़िलीस्तीनियों की हरे रंग की क्यों हैं? हरी कारें वेस्ट बैंक से बाहर नहीं जा सकती, पीली जा सकती हैं। दोनों ही रंगों पर नियंत्रण इजराइल का है। पूरी दुनिया को यूं बांटकर क्यों रखा गया है? बहरहाल, इस डॉक्यूमेंट्री का बनना हालात में बड़ा हस्तक्षेप है और नागार्जुन की कविता शासन की बन्दूक की अंतिम पंक्तियों की तरह ही उम्मीद से भर देता है-

नेचुरोपैथी में बनाएं अपना कॅरियर

एक नेचुरोपैथ यानी प्राकृतिक चिकित्सक का वेतन काफी हद तक उसकी लोकेशन, विशेषज्ञता, योग्यता और अनुभव पर निर्भर करता है। वैसे शुरूआती तौर पर एक नेचुरोपैथ दस हजार से बीस हजार रूपए आसानी से कमा सकता है। एक बार अनुभव प्राप्त करने के बाद आपको आकर्षक वेतन मिल सकता है।

आज के समय में लोगों का लाइफस्टाइल जिस तरह का है, उसके कारण हर व्यक्ति किसी न किसी समस्या से ग्रस्त रहता ही है। लेकिन हर समस्या के लिए दवाइयों का इस्तेमाल करना उचित नहीं माना जाता। अगर आप भी लोगों का इलाज प्राकृतिक तरीके से करने में विश्वास रखते हैं तो नेचुरोपैथी में अपना भविष्य बना सकते हैं। यह एक ऐसी वैकल्पिक चिकित्सा है, जिसमें प्रकृति के पांच तत्वों की सहायता से व्यक्ति का इलाज किया जाता है। यह इलाज की एक बेहद पुरानी पद्धति है।

स्किल्स

इस क्षेत्र में कॅरियर देख रहे व्यक्ति को सामान्य चिकित्सा व मानव शरीर रचना विज्ञान के बारे में भी जानकारी होनी चाहिए। इसके अतिरिक्त एक सफल नेचुरोपैथ बनने के लिए आपके भीतर धैर्य, कम्युनिकेशन और लिसनिंग स्किल्स, आत्मविश्वास, मरीज की जरूरतों को समझना, मोटिवेशनल्स स्किल्स व रोगियों के भीतर विश्वास पैदा करने का भी कौशल होना चाहिए।

क्या होता है काम

एक नेचुरोपैथ का मुख्य काम सिर्फ रोगी का इलाज करना ही नहीं होता, बल्कि वह अपने पेशेंट के खानपान और उसके लाइफस्टाइल में भी बदलाव करता है, ताकि व्यक्ति जल्द से जल्द ठीक हो सके। इतना ही नहीं, एक नेचुरोपैथ को मनोविज्ञान का भी ज्ञान होना चाहिए ताकि वह रोगी की स्थित किो समझकर उसे बेहतर उपचार दे सके।

योग्यता

इस क्षेत्र में कॅरियर देख रहे छात्रों का भौतिकी, रसायन विज्ञान और जीवविज्ञान में कम से कम 45 प्रतिशत अंक होने चाहिए। इसके बाद आप बैचलर ऑफ नेचुरोपैथी और यौगिक साइंस कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त इसमें डिप्लोमा कोर्स भी अवेलेबल हैं।

संभावनाएं

एक नेचुरोपैथ वेलनेस सेंटर्स, न्यूटिशन सेंटर, हॉस्पिटल, हेल्थ केयर सेंटर आदि में जॉब तलाश सकते हैं। इसके अतिरिक्त आप एकेडमिक्स, कम्युनिटी हेल्थ सर्विस केयर, सोशल वेलफेयर, मैन्युफैक्चरिंग और नेचुरल प्रॉडक्ट्स कंपनी आदि में भी काम कर सकते हैं। भारत में प्राकृतिक चिकित्सक सरकारी और निजी अस्पतालों और स्वास्थ्य केंद्रों में नियुक्त किए जाते हैं। वैसे लग्जरी होटल व हेल्थ रिसॉर्ट में भी नेचुरोपैथ सर्विसेज दी जाती हैं, वहां पर भी जॉब की जा सकती है। इसके अतिरिक्त आप विभिन्न अखबार, मैगजीन में लिख सकते हैं या फिर खुद का यूट्यूब चैनल चलाकर भी अच्छी खासी कमाई कर सकते हैं। एक अनुभवी प्राकृतिक चिकित्सक खुद का सेंटर भी खोल सकता है।

आमदनी

एक नेचुरोपैथ यानी प्राकृतिक चिकित्सक का वेतन काफी हद तक उसकी लोकेशन, विशेषज्ञता, योग्यता और अनुभव पर निर्भर करता है। वैसे शुरूआती तौर पर एक नेचुरोपैथ दस हजार से बीस हजार रूपए आसानी से कमा सकता है। एक बार अनुभव प्राप्त करने के बाद आपको आकर्षक वेतन मिल सकता है।

प्रमुख संस्थान

- इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ योगा एंड नेचुरोपैथी, नई दिल्ली।
- महर्षि पतंजलि इंस्टीट्यूट फॉर योगा नेचुरोपैथी एजुकेशन एंड रिसर्च, गुजरात।
- बोर्ड ऑफ नेचुरोपैथी एंड योगा सिस्टम ऑफ मेडिसिन, मेरठ।
- सीएमजे यूनिवर्सिटी, मेघालय।
- प्रज्ञान इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी, रांची।
- एसडीएम कॉलेज ऑफ नेचुरोपैथी एंड योगा सांइस, कर्नाटक।
- हिमालयन यूनिवर्सिटी, ईटानगर।
- महावीर कॉलेज ऑफ नेचुरोपैथी एंड योग, छत्तीसगढ़।

एक टैटू आर्टिस्ट का काम महज टैटू बनाना ही नहीं होता। वह सबसे पहले अपने क्लाइंट की जरूरत को समझता है और उसके अनुसार अपने क्लाइंट को कुछ बेहतरीन सुझाव देता है। अंत में वह टैटू बनाता है।

अगर आपको भी है टैटू बनाने का पैशन...

पिछले कुछ समय से टैटू बनवाने का क्रेज युवाओं में काफी बढ़ गया है। वैसे तो टैटू पुराने समय से बनाए जाते रहे हैं लेकिन कुछ सालों से इसके स्वरूप में काफी परिवर्तन आया है। वर्तमान समय में सिर्फ आम लोग ही नहीं, बड़े-बड़े स्टार्स भी बॉडी पर टैटू बनवाते हैं, फिर चाहे बात दीपिका पादुकोण की हो या प्रियंका चोपड़ा की, हर कोई टैटू बनवा चुकी है। आज के समय में बहुत से ऐसे युवा हैं जो न सिर्फ टैटू बनवाने का क्रेज रखते हैं, बल्कि वह टैटू बनाना भी सीखना चाहते हैं। अगर आपको भी टैटू बनाने का पैशन है तो आप इस क्षेत्र में करियर की संभावनाएं देख सकते हैं-

क्या होता है काम

एक टैटू आर्टिस्ट का काम महज टैटू बनाना ही नहीं होता। वह सबसे पहले अपने क्लाइंट की जरूरत को समझता है और उसके अनुसार अपने क्लाइंट को कुछ बेहतरीन सुझाव देता है। अंत में वह टैटू बनाता है। इसके अलावा टैटू बनाने के बाद शुरूआत में स्किन की सही तरह से केयर करनी भी जरूरी होती है, इसलिए एक टैटू मेकर का काम है कि वह अपने क्लाइंट को स्किन केयर के बारे में भी सारी जानकारी दे ताकि उन्हें बाद में किसी तरह की परेशानी न उठानी पड़े।

स्किल्स

इस क्षेत्र की सबसे बड़ी जरूरत है आपका क्रिएटिव माइंड। आज के समय में पहले की तरह सिंपल टैटू नहीं बनाए जाते। इसलिए एक टैटू मेकर क्लाइंट की जरूरत को समझकर और अपनी क्रिएटिविटी का प्रयोग करके शरीर के विभिन्न हिस्सों पर अलग-अलग कलर कॉम्बीनेशन और केमिकल्स के जरिए बेहतरीन आकृति को उकेरता है। इतना ही नहीं, इस क्षेत्र में आपकी सफलता आपका पैशन तय करता है। अगर आप इस काम से दिल से प्यार करते हैं, तभी आपको इस क्षेत्र में कदम रखना चाहिए। इसके अतिरिक्त एक टैटू मेकर को हमेशा अपडेट रहना चाहिए। उसे लेटेस्ट ट्रेंड की जानकारी होनी चाहिए। एक टैटू बनाना देखने में भले ही आसान लगे लेकिन यह एक कठिन काम है। इसमें आपको बेहद पेशेंस और एकाग्रता की जरूरत होती है। कई बार लोगों को टैटू से त्वचा में संक्रमण भी फैल जाता है। इसलिए यह बेहद जरूरी है कि आप इससे भी अच्छी तरह वाकिफ हों और हर तरह की सावधानी बरतते हुए ही अपना काम करें।

योग्यता

इस क्षेत्र में कॅरियर की संभावनाएं देख रहे छात्रों के लिए कोई मिनिमम योग्यता निर्धारित नहीं है। लेकिन टैटू बनाने में आजकल मशीनों का प्रयोग किया जाता है, इसके लिए आप किसी टैटू स्टूडियो या संस्थान से शॉर्ट टर्म कोर्स के जरिए टैटू मेकिंग सीख सकते हैं। यह कोर्स एक से दो महीने का होता है।

संभावनाएं

एक टैटू मेकर के लिए काम की कोई कमी नहीं है। टैटू मेकिंग का काम सीखने के बाद आप घर से ही काम की शुरूआत कर सकते हैं। अगर आप बजट अच्छा है तो अलग से टैटू मेकिंग स्टूडियो भी खोला जा सकता है। अगर आप क्लाइंट के घर जाकर काम कर सकते हैं तो ऑनलाइन काम को प्रमोट करना अच्छा रहेगा। इससे आपको कम समय में ही अच्छा काम मिलने लगेगा। इसके अतिरिक्त बड़े-बड़े मॉल्स में भी टैटू मेकिंग का काम शुरू किया जा सकता है।

आमदनी

इस क्षेत्र में कमाई अनुभव और आपके काम के अनुसार बढ़ती है। वैसे कोर्स करने के बाद शुरूआती दौर में एक टैटू मेकर प्रतिमाह 15 से 20 हजार रुपए आसानी से कमा सकता है। लेकिन कुछ सालों के अनुभव के बाद जब आप अपना नाम स्थापित कर लेते हैं तो आपकी आमदनी लाखों में भी हो सकती है।

कम्युनिकेशन डिजाइनिंग से दें कॅरियर को एक नई उड़ान

कम्युनिकेशन डिजाइन से संबंधित इस कोर्स की अवधि चार वर्ष है। इस कोर्स के दौरान छात्रों में ऐसी समझ का विकास किया जाता है, जिससे खुले और निर्मित स्थानों में संचार के लिए सही परिवेश की स्थापना हो सके। इसके साथ ही ऐसे अनुभवों का निर्माण हो सके जिनके समर्थन से दर्शकों के समक्ष विचारों की व्याख्या हो सके। देश के प्रतिष्ठित संस्थान राष्ट्रीय डिजाइन संस्थान डिजाइनिंग संबंधी कई कोर्स संचालित करता है। इन कोर्सेस में दाखिला लेकर छात्र न सिर्फ अपने सपनों को उड़ान दे सकते हैं, बल्कि सफलता की नई कहानी भी लिख सकते हैं। आज हम आपको राष्ट्रीय डिजाइन संस्थान में संचालित विभिन्न कोर्स की जानकारी दे रहे हैं

बैचलर ऑफ डिजाइन बी.डेस

यह चार वर्षीय पाठ्यक्रम है जो आठ विषयों में उपलब्ध है। 12वीं स्तर के 20 वर्षीय विद्यार्थी इन कोर्सेस में दाखिला ले सकते हैं।

एनीमेशन फिल्म डिजाइन

कम्युनिकेशन डिजाइन से संबंधित इस कोर्स की अवधि करीबन चार वर्ष की होती है और इसमें महज 15 सीटें ही एनआईडी में उपलब्ध होती हैं। इस कोर्स को करने के बाद छात्र विभिन्न टीवी चैनल में एनिमेटर, करैक्टर डिजाइनर, स्टोरी बोर्ड आर्टिस्ट, क्रिएटिव डायरेक्टर, प्रोडूसर, कंसलटेंट आदि के रूप में काम कर सकते हैं या फिर खुद का बिजनेस भी शुरू कर सकते हैं।

सिरामिक एवं ग्लास डिजाइन

सिरामिक एवं ग्लास डिजाइन कला और रचनात्मकता के क्षेत्रों में शिल्प, वास्तु, चिकित्सा, सत्कार, सज्जा उत्पादों आदि शैलियों में कार्यात्मक सम्भावनायें भी प्रदान करता है। एनआईडी का यह विभाग भारतीय कला और शिल्प से प्रेरणा लेता है और छात्रों को भविष्य में बड़े पैमाने पर उत्पादन और नयी तकनीकों की क्षमता को समझने में मदद करता है। इस कोर्स को करने के बाद छात्र एनजीओ, डिजाइन स्टूडियो, शिल्प उद्योग में भी रोजगार के अवसर ढूंढ सकते हैं या खुद का बिजनेस भी शुरू कर सकते हैं।

एक्सबिशन डिजाइन

कम्युनिकेशन डिजाइन से संबंधित इस कोर्स की अवधि चार वर्ष है। इस कोर्स के दौरान छात्रों में ऐसी समझ का विकास किया जाता है, जिससे खुले और निर्मित स्थानों में संचार के लिए सही परिवेश की स्थापना हो सके। इसके साथ ही ऐसे अनुभवों का निर्माण हो सके जिनके समर्थन से दर्शकों के समक्ष विचारों की व्याख्या हो सके।

फिल्म व वीडियो कम्युनिकेशन

फिल्म व वीडियो कम्युनिकेशन कोर्स के तहत छात्रों को छोटी एजुकेशनल, कल्चरल, सोशल, एंटरटेनिंग व मार्केट कम्युनिकेशन संबंधी शार्ट फिल्में बनाने करने के लिए तैयार किया जाता है। इस कोर्स को करने के बाद छात्र ऑडियो-विजुअल कम्युनिकेशन के क्षेत्र में अपना करियर बना सकते हैं। ऐसे छात्रों के लिए एड एजेंसी, फिल्म प्रॉडक्शन हाउस, टीवी चैनल्स व अन्य कई सरकारी क्षेत्रों व एनजीओ के रास्ते हमेशा खुले रहते हैं।

फर्नीचर डिजाइन

फर्नीचर डिजाइन भी वास्तव में एक कला है और इस कला की पूरी जानकारी एनआईडी के चार वर्षीय फर्नीचर डिजाइन कोर्स से प्राप्त होती है। कोर्स में विभिन्न प्रकार के मैटीरियल, उनके इस्तेमाल और क्रिएटिविटी का इस्तेमाल करके कुछ नया बनाने के लिए प्रेरित किया जाता है।

ग्राफिक डिजाइन

पिछले कुछ समय से ग्राफिक डिजाइनर की मांग काफी बढ़ी है। ऑनलाइन से लेकर ऑफलाइन तक लोग ग्राफिक्स का सहारा लेने लगे हैं। इसके जरिए चीजों को आसानी से समझा जा सकता है और यही कारण है कि यह कोर्स छात्रों के बीच खासा पसंद किया जाता है।

जीडीजीपी (ग्रेजुएट डिप्लोमा प्रोग्राम इन डिजाइन)

4 वर्ष का यह कोर्स विजयवाड़ा और कुरुक्षेत्र में उपलब्ध है। इसमें छात्रों का 12वीं पास होना आवश्यक है और उम्मीदवार की आयु 20 से अधिक न होनी चाहिए।

प्रॉडक्ट डिजाइन

प्रॉडक्ट डिजाइन उन वस्तुओं की रचना करना है, जो लोगों के लिए फायदेमंद है। वस्तुए बड़ी व्यवस्था का मुख्य अंश होती है। कोर्स के दौरान प्रोजेक्ट्स का मुख्य केंद्र उपयोगकर्ताओं की जरूरत, उत्पाद और आर्थिक प्रभाव के लिए प्रोडक्ट्स और सर्विसेज पर रहता है।

टेक्सटाइल डिजाइन

टेक्सटाइल डिजाइन के कोर्स के तहत छात्रों के भीतर कपड़ा अथवा टेक्सटाइल की समझ का ज्ञान विकसित किया जाता है। इस कोर्स की अवधि चार वर्ष है।

स्नातकोत्तर डिजाइन (एम.डेस)

किसी भी विषय में स्नातक की डिग्री प्राप्त छात्र इस कोर्स में दाखिले के लिए आवेदन कर सकते हैं। 25 वर्ष की अवधि का यह कोर्स अहमदाबाद, बेंगलुरु और गांधीनगर कैंपसों में उपलब्ध है। इन कोर्सेस में दाखिला लेने वाले आवेदक की आयु 30 वर्ष से अधिक नहीं होनी चाहिए। यह कोर्स लगभग 19 विषयों में उपलब्ध है, जो इस प्रकार है-

- ऐनीमेशन फिल्म डिजाइन
- अपैरल डिजाइन
- सिरामिक व ग्लास डिजाइन
- डिजाइन फॉर रिटेल एक्सपीरियंस
- डिजिटल गेम डिजाइन
- फिल्म व वीडियो कम्यूनिकेशन डिजाइन
- फर्निचर डिजाइन
- ग्राफिक डिजाइन
- इन्फोरमेशन डिजाइन
- इंटरैक्शन डिजाइन
- लाइफस्टाइल ऐक्सेसरी डिजाइन
- न्यू मीडिया डिजाइन
- फोटोग्राफी डिजाइन
- प्रोडक्ट डिजाइन
- स्ट्रैटिजिक डिजाइन प्रबंधन
- टेक्सटाइल डिजाइन
- टॉय ऐंड गेम डिजाइन
- ट्रांसपोर्टेशन व ऑटोमोबाइल डिजाइन
- यूनिवर्सल डिजाइन

पूजा-पाठ के साथ सेहत के लिए भी बहुत फायदेमंद है कपूर

आमतौर पर कपूर का इस्तेमाल पूजा-पाठ के लिए होता है, लेकिन बहुत कम लोग ये जानते होंगे कि प्राकृतिक गुणों से भरपूर कपूर का इस्तेमाल लोग कई अन्य तरीकों से भी हो सकता है। काफी लोग इसका इस्तेमाल अपने घर के कामों और सेहत के लिए करते हैं। आइए आज हम आपको बताते हैं कपूर से होने वाले फायदे के बारे में...

जोड़ों की दर्द, जलने, कटने में कपूर का इस्तेमाल किया जाता है। सेहत के साथ-साथ कपूर स्किन के लिए भी फायदेमंद होता है। अगर आप लंबे वक्त से खुजली से परेशान है तो आप एक चम्मच नारियल तेल में कपूर को मिक्स करें, फिर खुजली वाले स्थान पर लगाएं। यह नुस्खा आपको खुजली से तुरंत राहत दिलाएगा।

एक स्टडी में इस बात का खुलासा हुआ है कि कपूर ऑयली स्किन वाले लोगों के लिए बहुत फायदेमंद होता है। साथ ही कपूर चेहरे पर निकल रहे कील मुंहासे से भी छुटकारा दिलाता है।

कई बार किचन में काम करते वक्त आपकी त्वचा थोड़ी सी जल जाती है, उस स्थान पर कपूर लगाने से आपकी जली हुई त्वचा सही हो जाएगी। घाव को ठीक करने के साथ-साथ कपूर का इस्तेमाल उसके निशान को भी ठीक करता है। कपूर का इस्तेमाल बालों को झड़ने से रोकता है। साथ ही रूसी को बालों से खत्म करता है और बालों को मजबूत बनाता है। कुछ विशेषज्ञों ने इस बात का दावा किया है कि नारियल तेल में कपूर मिलाकर लगाने से आपके बाल मजबूत होते हैं।

ग्लोइंग त्वचा पाने के लिए सुबह पीने के पानी में मिलाएं ये तीन चीज

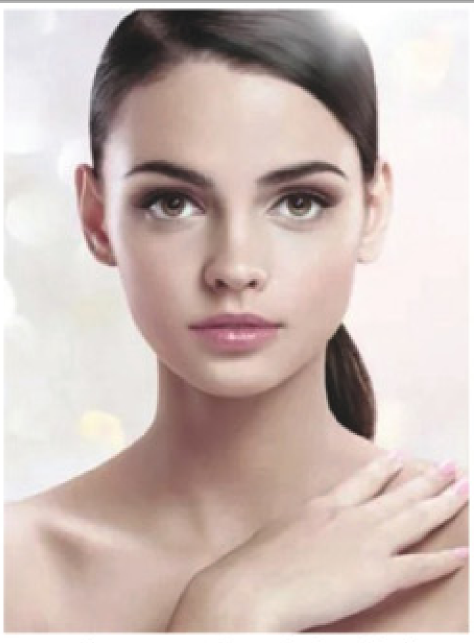

आज की इस भागदौड़ भरी जिंदगी में हम अपनी त्वचा का ख्याल नहीं रख पाते। बाहर इतना पॉल्यूशन है कि हमारी स्किन मुरझाने लगती है। कई लोगों को तो एक्ने प्रोब्लम हो जाती है। अगर आप भी इन्ही चीजों से परेशान है और बहुत कोशिश करने के बाद भी स्किन पर वो ग्लो नहीं आ पा रहा है तो परेशान होने की जरूरत नहीं है। आप घर पर ही कुछ आसान तरीको से अपने चेहरे का खास ख्याल रख सकती हैं। दिन की शुरुआत पानी से करनी चाहिए, यह बात तो हम सभी जानते हैं। सुबह हल्का गुनगुना पानी पीने से होने वाले फायदों के बारे में आपने बहुत सुना होगा। इससे आपका चेहरा हाइड्रेट रहता है। साथ ही यह शरीर की अशुद्धियों को दूर करने में मदद करता है, जिससे त्वचा पर निखार साफ दिखने लगता है। आइए जानते हैं पानी में मिलाई जाने वाली चीजों के बारे में...

दालचीनी

सबसे पहली चीज है दालचीनी। यह इम्यूनिटी बढ़ाने के साथ-साथ मोटापा घटाने में भी मददगार है। अगर सुबह के पानी को उबालते समय उसमें एक चुटकी दालचीनी को मिला लिया जाए तो यह आपकी त्वचा के लिए रामबाण है।

चिया सीड्स

हर दिन मॉर्निंग वॉटर में चिया सीड्स लेने से शरीर हेल्दी रहता है और त्वचा पर ग्लो भी आता है। इसके अलावा यह ड्रिंक रिंक्ल्स को दूर करने में मदद करता है। बहुत सारे ब्यूटी ट्रीटमेंट्स में भी चिया ऑयल का इस्तेमाल किया जाता है

स्ट्रॉबेरी

स्ट्रॉबेरी जूस को पानी में मिलाकर पीने से चेहरे के दाग धब्बे कम हो जाते हैं। इसके नियमित सेवन से दाग गायब हो जाते हैं। इसमें विटामिन सी और एंटीऑक्सिडेंट होता है जिससे चेहरे पर ग्लो आता है।

रेसिपी

अप्पम

- एक कप चावल
- दो कप कद्दूकस किया नारियल
- 3 चम्मच चीनी
- 1/2 टीस्पून खमीर (ईस्ट)
- नमक
- तेल

विधि

अप्पम बनाने के लिए सबसे पहले रात में चावल और नारियल को पानी में भिगोकर रख दें। सुबह इसमें नमक और चीनी डालकर मिक्स करें। इसके बाद इसमें ईस्ट डालकर कुछ देर के लिए रख दें। थोड़ी देर बाद सभी को पीस लें। पीसने के बाद मिक्सर को 4-5 घंटे के लिए रख दें। अब पैन में तेल गर्म करें और अप्पम को फैलाकर इसमें डालें। फिर इसे दोनों तरफ से सेंक लें और सर्व करें।

काले चने की कढ़ी

- भिगोए और उबले हुए काले चने
- दही
- बेसन
- एक छोटा चम्मच हल्दी
- एक बड़ा चम्मच गरम मसाला
- दो तेजपत्ता
- दो सूखी लाल मिर्च
- चूटकीभर हींग
- आधा चम्मच मेथी दाना
- आधा छोटा चम्मच जीरा
- दो हरी मिर्च
- आधा कप प्याज
- आधा कप टमाटर
- एक बड़ा चम्मच अदरक-लहसुन का पेस्ट
- दो बड़ा चम्मच तेल
- नमक

विधि

सबसे पहले एक कड़ाही में तेल डालें और हींग तेजपत्ता, सूखी लाल मिर्च और मेथी दाना और जीरा डालकर भूनें। इसके बाद अदरक-लहसुन का पेस्ट और प्याज डालकर सुनहरा होने तक भूनें। अब गरम मसाला, हल्दी, और काले चने डालकर तब तक पकाएं जब तक की मसाला तेल न छोड़ने लगे। दूसरी ओर एक कटोरी में दही में बेसन डालकर अच्छी तरह घोल लें। मसाले के तेल छोड़ते ही दही वाला मिश्रण डालकर धीमी आंच पर पकाएं। धनिया पत्तियों ऊपर से डालकर सर्व करें।

टाईम पास

आज का राशिफल

मेष (चू चे चो ला ली लू ले लो आ): ले देकर की जा रही काम की कोशिश ठीक नहीं। समय नकारात्मक परिणाम देने वाला बन रहा है। कार्यक्षेत्र में आगे बढ़ने में रुकावट का एहसास होगा। विरोधियों के सक्रिय होने की संभावना है। कारोबारी यात्रा को फिलहाल टालें। जो चल रहा है उसे सावधानीपूर्वक संभालें। शुभांक-1-3-6

वृष (इ उ ए ओ वा वी वू वे वो): परिश्रम प्रयास से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी। पर प्रपंच में ना पड़कर काम पर ध्यान दीजिए। कल का परिश्रम आज लाभ देगा। आलस्य का त्याग करें। कारोबारी काम में नवीन तालमेल और समन्वय बन जाएगा। यार-दोस्तों के साथ साझे में किए जा रहे काम में लाभ मिल जाएगा। शुभांक-3-4-5

मिथुन (का की कू घ ङ छ के को हा): जोखिम से दूर रहना ही बुद्धिमानी होगी। महत्वपूर्ण कार्य को समय पर बना लें तो अच्छा ही होगा। आय-व्यय की स्थिति समान रहेगी। कामकाज में आ रही बाधा दूर होगी। बाहरी और अंदरूनी सहयोग मिलता चला जाएगा। पर प्रपंच में ना पड़कर अपने काम पर ध्यान दीजिए। शुभांक-5-6-6

कर्क (ही हू हे हो डा डी डू डे डो): लेन-देन में आ रही बाधा को दूर करने के प्रयास सफल होंगे। समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा। शैक्षणिक कार्य आसानी से पूरे होते रहेंगे। परिश्रम प्रयास से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी। व्यापार व व्यवसाय में ध्यान देने से सफलता मिलेगी। नौकरी में सावधानीपूर्वक कार्य करें। शुभांक-7-8-9

सिंह (मा मी मू मे मो टा टी टू टे): अपनों का सहयोग प्राप्त होगा। पत्नी व संतान पक्ष से थोड़ी चिंता रहेगी। शारीरिक सुख के लिए व्यसनों का त्याग करें। पठन-पाठन में स्थिति कमजोर रहेगी। खान-पान में सावधानी रखें। व्यापार में प्रगति होगी। अपने अधीनस्त लोगों से कम सहयोग मिलेगा। स्त्री-संतान पक्ष का सहयोग मिलेगा। शुभांक-7-8-9

कन्या (टो पा पी पू ष ण ठ पे पो): रुका हुआ लाभ आज प्राप्त हो सकता है। पूर्व नियोजित कार्यक्रम सरलता से संपन्न हो जाएंगे। जोखिम से दूर रहना ही बुद्धिमानी होगी। शुभ कार्यों की प्रवृत्ति बनेगी और शुभ समाचार भी मिलेंगे। किसी से कहा सुनी न हो यह ध्यान रहे। लाभकारी गतिविधियों में सक्रियता रहेगी। शुभांक-7-8-9

तुला (रा री रू रे रो ता ती तू ते): ले देकर की जा रही काम की कोशिश ठीक नहीं। समय नकारात्मक परिणाम देने वाला बन रहा है। कार्यक्षेत्र में आगे बढ़ने में रुकावट का एहसास होगा। विरोधियों के सक्रिय होने की संभावना है। कारोबारी यात्रा को फिलहाल टालें। जो चल रहा है उसे सावधानीपूर्वक संभालें। शुभांक-4-7-9

वृश्चिक (तो ना नी नू ने नो य यी यू): विरोधियों के सक्रिय होने की संभावना है। ले देकर की जा रही काम की कोशिश ठीक नहीं। समय नकारात्मक परिणाम देने वाला बन रहा है। शुभ कार्यों में अड़चनें और परिवार के बुजुर्ग-जनों से मतभेद रहेगा। किसी से वाद-विवाद अथवा कहासुनी होने का भय रहेगा। कार्य भार बढ़ेगा। शुभांक-5-7-9

धनु (ये यो भा भी भू धा फा ढा भे): कुछ आर्थिक चिंताएं भी कम होंगी। नियोजित धन से लाभ होने लगेगा। घर के सदस्य मदद करेंगे और साथ ही आर्थिक बदहाली से भी मुक्ति मिलने लगेगी। बढ़ते घाटे से कुछ राहत मिलने लगेगी। समय का सदुपयोग करें। साधन और भोग-विलास के प्रचुर अवसर होंग। शुभांक-4-7-8

मकर (भो जा जी खी खू खे खो गा गी): कुछ कार्य भी सिद्ध होंगे। व्यर्थ की भाग-दौड़ से यदि बचा ही जाए तो अच्छा है। प्रियजनों से समागम का अवसर मिलेगा। अपने काम में सुविधा मिल जाने से प्रगति होगी। महत्त्वपूर्ण कार्य को समय पर बना लें तो अच्छा ही होगा। परामर्श व परिस्थिति का सहयोग मिलेगा। शुभांक-6-8-9

कुंभ (गू गे गो सा सी सू से सो दा): कल का परिश्रम आज लाभ देगा। आशा और उत्साह के कारण सक्रियता बढ़ेगी। आगे बढ़ने के अवसर लाभकारी सिद्ध हो रहे है। कुछ आर्थिक संकोच पैदा हो सकते है। कोई प्रिय वस्तु अथवा नवीन वस्त्राभूषण प्राप्त होंगे। धार्मिक आस्थाएं फलीभूत होंगी। सुख-आनंद कारक समय है। शुभांक-4-7-8

मीन (दी दू थ झ ञ दे दो चा ची): लाभदायक कार्यों की चेष्टाएं प्रबल होंगी। सक्रियता से अल्प लाभ का हर्ष होगा। कुछ महत्त्वपूर्ण कार्य बनाने के लिए भाग-दौड़ रहेगी। सुखद समय की अनुभूतियां प्रबल होंगी। मनोविनोद बढ़ेंगे। व्ययाधिक्य का अवसर आ सकता है। कार्यों का लाभदायक परिणाम होगा। आध्यात्मिक रुचि बनेगी। शुभांक-4-6-9

लॉफिंग ज़ोन

दो मित्र आपस में बात कर रहे थे। एक मित्र ने कहा- 'यार, जब मैं सूट पहनकर सब्जी लेने जाता हूँ तो दुकानदार मुझे महँगी सब्जी देता है और जब गंदे कपड़े पहनकर जाता हूँ तो सस्ती देता है।'

दूसरे मित्र ने सुझाव दिया- 'यार तुम कटोरा लेकर जाया करो, मुफ्त में ही दे देगा।'

अपनी पत्नी के चिड़चिड़े और गुस्सैल स्वभाव से परेशान रमन एक बार किसी महात्मा के दर्शन के लिए और महात्मा से पूछा- महाराज, कोई ऐसा उपाय बताइए जिससे मेरी पत्नी हर बात में क्लेश और अपना चिड़चिड़ापन छोड़ दें।

महात्मा ने बड़े इत्मीनान से जवाब दिया- बेटे! अगर इसका उपाय मुझे पता होता तो मैं संन्यास ही क्यों लेता।

पत्नी ने उलाहना देते हुए पति से कहा- 'क्योंजी, आप तो विवाह से पहले कहा करते थे कि तुम्हारी छोटी से छोटी इच्छा पूरी करूँगा।'

पति- 'हाँ, पर अब तक राह देख रहा हूँ कि तुम्हारी कौन-सी इच्छा इतनी छोटी है, जिसे मैं पूरी कर सकूँगा।'

काकुरो पहेली - 645

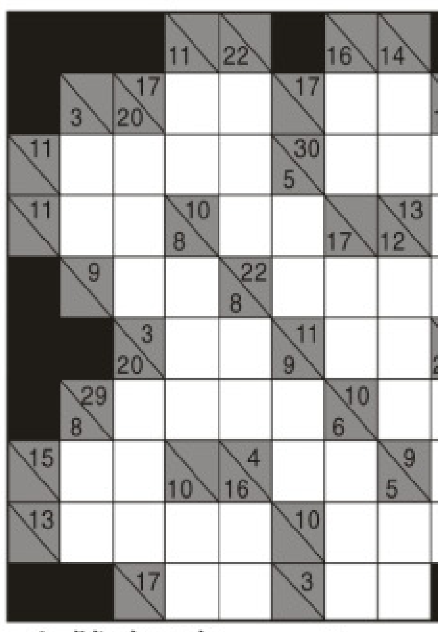

खाली वर्गों में 1 से 9 तक के अंक लिखकर नीचे से ऊपर व दाएं से बाएं की जोड़ हल्के रंग के आधे वर्ग की संख्या से मेल खानी चाहिए. किसी भी अंक का उस जोड़ में पुनः उपयोग नहीं किया जा सकता.

उदाहरणत:

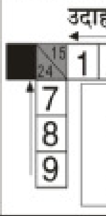

1+2=3
1+3=4
7+9=16
8+9=17

काकुरो - 644 का हल

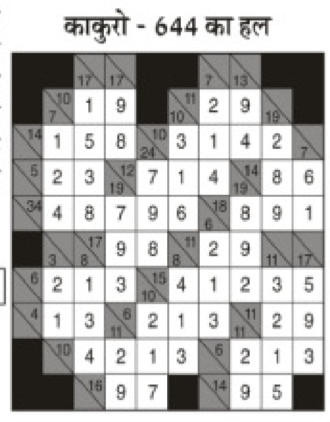

फिल्म वर्ग पहेली- 645

बायें से दायें:-

१. अमिताभ, सलमान, जॉन, हेमा, रानी की फिल्म-३
३. 'हैलो हैलो बोल के' गीत वाली सुनील शेट्टी, शिल्पा शेट्टी की फिल्म-३
५. जैकी, अनिल, शत्रुघ्न, हेमा, टीना मुनीम की फिल्म-२
६. 'मैं लव तुम से' गीत वाली फिल्म-३
७. कंवलजीत, वहीदा की फिल्म-३
९. 'झूठी मूठी मितवा सांवन' गीत वाली फिल्म-३
११. नवीन निश्चल, प्राण, रेखा की 'ना सतरा से ऊपर' गीत वाली फिल्म-२
१३. 'हर इक लव पर है' गीत वाली श्रेयस तलुदे, आयशा टकिया की फिल्म-२
१५. शाहरुख, मनीषा, प्रीति, शिल्पा की फिल्म-२,१
१७. अमिताभ, जया भादुड़ी की फिल्म-२
१९. 'मुझे तुम याद' गीत वाली फिल्म-३
२०. अमिताभ, गोविंदा, रजनीकांत, किमी की फिल्म-२
२२. 'दिल में जिगर' गीतवाली फिल्म-२
२३. हिंदी फिल्मोंका पहला 'ही-मैन' किसे कहा गया है-४
२४. जीतेंन्द्र, जयप्रदा की एक पारिवारिक फिल्म-१
२५. 'सौ सवालों का' गीत वाली धर्मेन्द्र, अनिलकपूर, मीनाक्षी की फिल्म-३
२७. अमिताभ, जैकी, जावेद, कैटरीना, मधु, सीमा, जीनत की फिल्म-२
२८. 'जुड़वाँ' में सलमान के साथ करिश्मा के अलावा दूसरी नायिका कौन थी-२
२९. राजेश खन्ना, शर्मिला टैगोर की फिल्म-३
३१. फिरोज, संजय, मनीषा की 'आखिर तुम्हें आना है' गीत वाली फिल्म-४
३२. 'मेरा दिल जिस दिल' गीत वाली अनिल, अक्षय, करीना की फिल्म-३

ऊपर से नीचे:-

१. राहुल राय, शीबा की फिल्म-३
२. आमिर खान, ग्रेसी सिंह की 'मधुबन में जो कन्हैया' गीत वाली फिल्म-३
३. 'जिन्हें हम भूलना चाहें वो' गीत वाली दीपक कुमार, रेहाना की फिल्म-३
४. शशिकपूर, राखी की 'आज मदहोश हुआ जाये रे' गीत वाली फिल्म-३
५. 'नाले नाले मैं चली' गीत वाली मिथुन, कबीर बेदी, संगीता की फिल्म-४
८. बॉबी, काजोल, मनीषा कोइराला की 'मेरे ख्वाबों में तू' गीत वाली फिल्म-२
१०. 'अब चाहे सर फूटे या' गीत वाली राजेश खन्ना, राखी, शर्मिला टैगोर की फिल्म-२
१२. कुमार गौरव, माधुरी की 'पहली बारिश में और तू' गीत वाली फिल्म-२
१३. 'सजना साथ निभाना' गीत वाली राजेश खन्ना, बबीता की फिल्म-२
१४. सुनीलदत्त, माला की 'आजा आजा रे तुझको मेरा प्यार' गीत वाली फिल्म-४
१५. 'जान तन से' गीत वाली जैकी श्रॉफ, फरहा की फिल्म-४
१६. प्रशांत, संध्या की 'तुम तो प्यार हो सजना' गीत वाली फिल्म-३
१८. 'खुशी से खुदकुशी' गीत वाली फिल्म-५
२१. सनी, जीतेंन्द्र, फरहा, जयाप्रदा की फिल्म-४
२६. 'आँखों आँखों में हो गए' गीत वाली फिल्म-३
२९. नसीर, अतुल, पूजा भट्ट की फिल्म-२
३०. 'रंग दीन्हीं रंग दीन्हीं' गीत वाली फिल्म-२

फिल्म वर्ग पहेली- 644

सूडोकु -645

7	8	6		1		5		2
	9			8				3
1			6	9		7		
	3	8	2		1			
2	7	5				6	3	1
			5		7	2	8	
		9		7	4			6
8				2			5	
4		2		5		9	1	7

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु -644 का हल

2	9	5	3	1	4	6	8	7
3	6	1	2	8	7	4	9	5
8	4	7	5	9	6	3	2	1
5	7	4	1	6	2	8	3	9
1	3	6	9	4	8	5	7	2
9	8	2	7	3	5	1	4	6
6	2	8	4	7	1	9	5	3
4	5	3	6	2	9	7	1	8
7	1	9	8	5	3	2	6	4

शब्द पहेली - 645

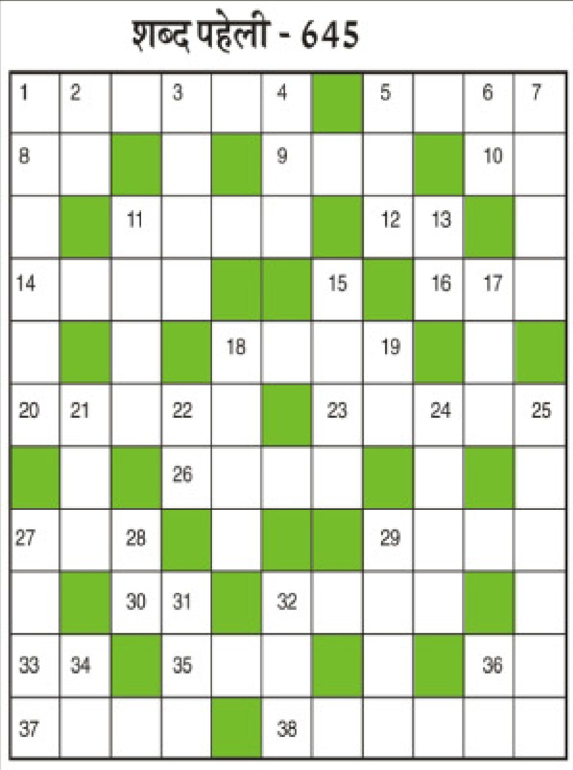

बाएँ से दाएँ

1.हलचल,कोलाहल-3,3
5.मानवीयता-4
8.शरीर, बदन-2
9.ऊंचाई-3
10.तीर, बाण-2
11.मनमोहक-4
12.रग, नाड़ी-2
14.दुत्कारना-4
16.चतुर, फुर्तीला-3
18.साझेदार-4
20.रमण लायक-3,2
23.भारी, वजन वाला-5
26.असावधानी-4
27.दाल पीसना-3
29.निश्चित-4
30.कविता-2
32.शरीर व इच्छा-2,2
33.भारत के झंडे का एक एक रंग-2
35.सलाम करना-3
36.रास्ता-2
37.राह पर चलनेवाले-4
38.जहाज चलाने की प्रक्रिया-3,3

ऊपर से नीचे

1.पैतृक संपत्ति का वारिस-6
2.गाय के स्तन-2
3.प्रसन्न होने का भाव-4
4.लगन, जिज्ञासा-3
5.खदान,खान (अंग्रेजी में-3)
6.अधीन, काबू-2
7.डामर, टार-4
11.पूर्वरक्षण, रिजर्वेशन-4
13.सच्चाई-2
15.दुश्मनी,शत्रुता-4
17.घूंघट, बुरखा-3
18.भाग्य का लेखा-जोखा-4
19.धूल, रेत-2
21.भवन, प्रसाद-3
22.जोड़, कुल-2
24.लावण्ययुक्त-4
25.जीवन निर्वाह का ढंग,-3,3
27.विजयादशमी-4
28.मोड़, छोर-2
29.मृत्यु का देवता, यम-4
31.बुरी आदत-3
32.सभ्य व्यवहार-3
34.मार्ग-2
36.गोंद, वार्निश-2

शब्द पहेली -644 का हल

बिहार की कोसी और मेची लिंक परियोजना को मंजूरी

एजेंसी

नई दिल्ली। केन्द्र सरकार ने बिहार की कोसी और मेची नदियों को जोड़ने को मंजूरी प्रदान की है। केन्द्रीय मंत्रिमंडल ने आज इस अंतरराज्यीय नदी जोड़ो परियोजना को प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना में शामिल किए जाने को मंजूरी प्रदान की है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में आर्थिक मामलों की मंत्रिमंडलीय समिति (सीसीईए) ने आज इस निर्णय को मंजूरी दी। सीसीईए ने 6,282.32 करोड़ रुपये की अनुमानित लागत वाली इस परियोजना को मार्च, 2029 तक पूरा करने के लिए बिहार को 3,652.56 करोड़ रुपये की केंद्रीय सहायता को भी मंजूरी दी है। केन्द्रीय मंत्रिमंडल के फैसलों की जानकारी देते हुए केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्री अश्वनी वैष्णव ने बताया कि कोसी नदी बिहार के पूरे राज्य से बहने वाली पानी का एक प्रमुख स्रोत है और 6,282 करोड़ रुपये की परियोजना को मंजूरी देकर कोसी नदी के जल प्रवाह को मेची नदी के साथ जोड़ा जाएगा। यह परियोजना से आर्थिक रूप से लाभकारी और आपदा प्रबंधन में मददगार साबित होगी। लिंक परियोजना बिहार के अररिया, पूर्णिया, किशनगंज और कटिहार जिलों में खरीफ सीजन में 2,10,516 हेक्टेयर अतिरिक्त वार्षिक सिंचाई प्रदान करेगी। परियोजना में प्रस्तावित लिंक नहर के माध्यम से कोसी के अधिशेष पानी के लगभग 2,050 मिलियन क्यूबिक मीटर को मोड़ने/उपयोग करने की क्षमता है।

इंदिरा गांधी के 'योग गुरु' रहे धीरेंद्र ब्रह्मचारी की संपत्ति अपने कब्जे में लेगी सरकार

एजेंसी

चंडीगढ़। हरियाणा सरकार द्वारा पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के 'योग गुरु' रहे धीरेंद्र ब्रह्मचारी की संपत्ति का अधिग्रहण करने का रास्ता साफ हो गया है। विधानसभा में विपक्षी दल कांग्रेस के हंगामे तथा वाकआउट के बावजूद सरकार ने यह विधेयक पारित करवा लिया, जिस संपत्ति को लेकर विवाद चल रहा है, वह गुरुग्राम के सेक्टर 30 के बिल्कुल करीब है। इस संपत्ति पर कब्जे को लेकर धीरेंद्र ब्रह्मचारी के पुराने अनुयायियों में विवाद चल रहा है। उनकी मृत्यु के बाद कुछ रिश्तेदार और किरायेदार 24 एकड़ 16 मरला इस प्रापर्टी पर मालिकाना हक को लेकर कानूनी लड़ाई लड़ रहे हैं। खुद को सोसाइटी का प्रतिनिधि बताने वाले दो लोगों ने 27 दिसंबर 2020 को करीब 55 करोड़ रुपये में इस जमीन को दिल्ली की चार कंपनियों के पक्ष में ट्रांसफर कर दिया था। डीसी गुरुग्राम ने सेल डीड रद कर दी थी। डीसी के आदेश के खिलाफ अपील को पिछले साल अप्रैल में हाईकोर्ट ने बरकरार रखा था, जिसकी सुनवाई अब 29 मई में होगी। उद्योग एवं वाणिज्य मंत्री राव नरबीर सिंह ने सदन में जैसे ही विधेयक रखा तो रोहतक के कांग्रेस विधायक बीबी बतरा ने विरोध करते हुए कहा कि सरकार किस अधिकार के तहत यह विधेयक सदन में लाई है क्योंकि यह केंद्र सरकार और दिल्ली सरकार के अधीन का मामला है। यह संस्था दिल्ली में पंजीकृत है, जिस कारण सरकार ने विधेयक पारित करा भी लिया तो अदालत में टिक नहीं पाएगा, जिससे सदन की किरकिरी होगी। पूर्व मुख्यमंत्री भूपेंद्र सिंह हुड्डा ने मोर्चा संभालते हुए पूछ कि इस संस्था की जमीन को 145 अनुच्छेद के तहत अटैच करेंगे या नहीं। इस पर मुख्यमंत्री नायब सैनी ने कहा कि सरकार इसको लेकर पूरी तरह से गंभीर है। नौ जून 1994 को हवाई दुर्घटना में धीरेंद्र ब्रह्मचारी के स्वर्गवास के बाद जम्मू में भी अपर्णा संस्थान को वहां की सरकार चला रही है। हरियाणा विधानसभा में भी अपर्णा संस्थान के संबंध में लाए गए विधेयक का उद्देश्य स्वामी धीरेंद्र ब्रह्मचारी के जन कल्याण के विचारों को आगे बढ़ाना है। उस जमीन पर योग आश्रम पहले से बना है और स्वामीजी चाहते थे कि लोगों को यहां पर स्वास्थ्य सुविधाएं भी उपलब्ध हों। इसलिए इस आश्रम का नियंत्रण सरकार के अधीन लेकर जन कल्याण के भाव को साकार करना है। मुख्यमंत्री ने कांग्रेस विधायकों की आपत्तियों को खारिज करते कहा कि इस विधेयक को लाने से हम केंद्र सरकार के किसी भी कानून को बाइपास नहीं कर रहे हैं, बल्कि उसके अधीन रहकर ही सभी प्रक्रियाएं पूरी की जा रही हैं। धीरेंद्र ब्रह्मचारी की मृत्यु होने के बाद उक्त संस्था दो गुटों में बंट गई। पिछले करीब 30 साल से इनमें मुकदमेबाजी चल रही है और संस्थान निष्क्रिय हो गया है। इसलिए इस विधेयक को लाने का उद्देश्य यह है कि संस्थान की जमीन किसी गलत हाथों में ना जाए और लोगों को इसका लाभ मिलता रहे। इसलिए सदन इस विधेयक को पूर्ण बहुमत से पारित करे।

नवरात्र पर आकाशवाणी का आराधना यूट्यूब चैनल चलाएगा विशेष कार्यक्रमों की श्रृंखला

एजेंसी

नई दिल्ली। नवरात्रि के पावन अवसर पर आकाशवाणी का आराधना यूट्यूब चैनल 30 मार्च से 6 अप्रैल 2025 तक विशेष कार्यक्रमों की एक श्रृंखला प्रस्तुत करने जा रहा है, जो श्रोताओं को पूरे उत्सव की अवधि में एक गहन भक्ति अनुभव प्रदान करेगा। प्रत्येक दिन के महत्व को स्मरण करने के लिए, चैनल सुबह 8 बजे से शाम 8 बजे तक एक विशेष रूप से क्यूरेट की गई श्रृंखला पेश करेगा। इसके अतिरिक्त, शक्ति आराधना का प्रसारण प्रतिदिन सुबह 8:30 बजे से 8:40 बजे तक किया जाएगा, जिसमें दर्शकों को दिव्य प्रस्तुतियां दी जाएंगी। इस उत्सव का एक विशेष आकर्षण नवरात्रि भजन होंगे, जिन्हें अनूप जलोटा, नरिंदर चंचल, जगजीत सिंह, हरिओम शरण, महेंद्र कपूर और अनुराधा पौडवाल जैसे प्रसिद्ध कलाकारों द्वारा प्रस्तुत किया जाएगा। ये प्रस्तुतियां प्रतिदिन शाम 6 बजे से 7 बजे तक प्रसारित की जाएंगी।भक्तिमय अनुभव को और बढ़ाते हुए, नवरात्रि पर प्रेरक कहानियां सुनाने वाली एक अनूठी श्रृंखला देवी मां के अनेक स्वरूप का प्रसारण प्रतिदिन सुबह 9 बजे से साढ़े 9 बजे तक किया जाएगा। चैनल देश भर के विभिन्न शक्ति पीठों पर विशेष सुविधाओं भी प्रस्तुत करेगा, जिससे श्रोताओं को देवी दुर्गा को समर्पित पवित्र स्थलों के बारे में गहन जानकारी मिलेगी। नवरात्रि उत्सव का समापन श्री राम जन्मभूमि मंदिर, अयोध्या से सीधे राम जन्मोत्सव पर एक भव्य लाइव कार्यक्रम के साथ होगा।

जल्द लौटेगा विक्रमशिला विश्वविद्यालय का गौरव, मुख्य सचिव ने किया निरीक्षण

भागलपुर। आठवीं सदी में तंत्र विद्या के लिए विश्वभर में अपनी पहचान बनाने वाली भागलपुर स्थित विक्रमशिला विश्वविद्यालय का गौरव फिर से वापस लौटने वाला है। जिसको लेकर कवायद तेज हो गई है। नालंदा विश्वविद्यालय के बाद अब विक्रमशिला विश्वविद्यालय के दिन बहुरने वाले हैं। विक्रमशिला विश्विद्यालय को 12 वीं सदी में बख्तियार खिलजी ने नष्ट किया था। अब यहां प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी केंद्रीय विश्विद्यालय का निर्माण करवाने जा रहे हैं। भागलपुर के कहलगांव स्थित विक्रमशिला विश्विद्यालय के समीप केंद्रीय विश्विद्यालय का निर्माण किया जाएगा। केन्द्र सरकार ने 2015 में ही 500 करोड़ रुपये इसके निर्माण को लेकर दिये थे हाल ही में राज्य सरकार ने भागलपुर जिला प्रशासन को 89 करोड़ रुपये जमीन अधिग्रहण के लिए दिया है। बिहार सरकार के मुख्य सचिव अमृतलाल मीणा अपने अधीनस्थ अधिकारियों के साथ विक्रमशिला विश्विद्यालय व अवशेष स्थल पर पहुंचे। चिन्हित जमीन का भी निरीक्षण किया। उन्होंने जमीन सम्बन्धी कार्रवाई को लेकर आवश्यक दिशा निर्देश दिया है। जमीन की डीपीआर संबंधी भी जानकारी ली। मुख्य सचिव को केंद्रीय विश्वविद्यालय निर्माण को लेकर चिन्हित जमीन के बारे में भागलपुर के जिलाधिकारी डॉक्टर नवल किशोर चौधरी ने नक्शा दिखाते हुए उन्हें ब्रीफ किया।

हरियाणा को मिला राज्य गीत, सभी कार्यक्रमों में राष्ट्रगान के बाद सुना जाएगा

चंडीगढ़। हरियाणा को पहली बार अपना राज्य गीत मिला है। विधानसभा में बजट सत्र के अंतिम दिन मामूली चर्चा के बाद यह गीत सर्वसम्मति से पास हो गया। अब हरियाणा में होने वाले प्रत्येक सरकारी कार्यक्रम के दौरान यह गीत सुना जाएगा। सोनीपत की गीतू परी और फतेहाबाद के कृष्ण कुमार सहित 3 लोगों ने राज्य गीत पर आपत्ति दर्ज करवाई थी। जांच के बाद इन आपत्तियों को खारिज कर दिया गया। विधानसभा में हरियाणा राज्य गीत कमेटी के अध्यक्ष लक्ष्मण यादव ने कहा कि गीत से कुछ अनावश्यक शब्द हटाए गए। गीत के भाव और भाषा को लेकर भी सुझाव दिए गए। इसमें पूर्व सीएम भूपेंद्र हुड्डा ने भी अहम भूमिका निभाई है। उन्होंने सुंदर गोरी महिलाओं के शब्द पर कहा था कि काली कहां जाएंगी? जिसके बाद इसमें सुंदर स्याणी नारी को शामिल किया गया। शिक्षा मंत्री महिपाल ढांडा ने सदन में सुझाव दिया कि भविष्य में सदन में राष्ट्रगान के साथ ही राज्य गीत का भी स्मरण किया जाए। इस गीत को पानीपत के डॉ. बालकिशन शर्मा ने लिखा है। डॉ.श्याम शर्मा गायक, पारस चोपड़ा कम्पोजर और रोहतक की मालविका पंडित ने डायरेक्ट किया है। खास बात यह है कि गीत के लिए प्रदेश सरकार से किसी भी कलाकार ने कोई फीस नहीं ली। लक्ष्मण यादव ने बताया कि राज्य गीत को चयन कमेटी ने 12 बैठकों के बाद फाइनल किया है। 15 सितंबर 2023 को तत्कालीन मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने हरियाणा राज्य गीत चयन के लिए प्रस्ताव लेकर आए थे।

मणिपुर में 4.3 और मेघालय में 4.0 तीव्रता के भूकंप

इंफाल/शिलांग। म्यांमार में आए शक्तिशाली भूकंप के बाद आफ्टर शॉक वेब के तहत भारत में भी भूकंप के झटके लगे हैं। मणिपुर और मेघालय में भी मध्यम तीव्रता के भूकंप के झटके महसूस किए गए। इन भूकंप से हुए नुकसान की अभी तक कोई जानकारी नहीं मिली है। मेघालय के ईस्ट गारो हिल्स जिले में आए भूकंप की तीव्रता रिक्टर स्केल पर 4.0 दर्ज की गई, जबकि मणिपुर के कामजोंग जिले में 4.3 तीव्रता का भूकंप महसूस किया गया। भारतीय सिस्मोलॉजी विज्ञान केंद्र के अनुसार मणिपुर राज्य के कामजोंग जिले में दोपहर बाद 1 बजकर 29 मिनट 55 सेकेंड पर भूकंप महसूस किया गया। भूकंप की तीव्रता रिक्टर स्केल पर 4.3 महसूस की गयी। इस भूकंप का एपीक सेंटर 24.96 उत्तरी अक्षांश तथा 94.69 पूर्वी देशांत्तर पर जमीन के 10 किलोमीटर नीचे स्थित था।

मप्र में दिखा ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड की अपील का असर, भोपाल-विदिशा में काली पट्टी बांधकर अदा की जुमे की नमाज

एजेंसी

भोपाल। मध्य प्रदेश में कई जगहों पर ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड की अपील का असर देखने को मिला। मुस्लिम समुदाय ने काली पट्टी बांधकर जुमे की नमाज अदा की और वक्फ संशोधन विधेयक का विरोध किया। वहीं रायसेन जिले में काली पट्टी लगाने को लेकर कुछ लोग आपस में भिड़ गये। कहासुनी, हाथापाई के बाद विवाद इतना बढ़ा की धारदार हथियार निकल आये। मारपीट के दौरान चार लोग घायल हो गए।भोपाल में रमजान महीने के आखिरी जुमे पर मुस्लिम समुदाय ने वक्फ संशोधन विधेयक 2024 के खिलाफ काली पट्टी बांधकर नमाज अदा की। ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड ने मुस्लिम समुदाय से काली पट्टी बांधकर शांतिपूर्ण और मौन विरोध प्रदर्शन करने की अपील की थी। बोर्ड ने कहा कि अगर यह बिल पारित हो गया तो मस्जिद, दरगाह, मदरसे, कब्रिस्तान और कई अन्य संस्थान उनके हाथ से चले जाएंगे। इस मौके पर भोपाल के मुसलमानों ने बड़ी तादाद में ताजुल मसाजिद में हाथ में काली पट्टी बांधकर नमाज अदा की। काजी सैयद अनस अली ने कहा कि वक्फ अमेंटमेंट बिल

वक्फ की संपत्तियों को हड़पने के लिए लाया जा रहा है। यह बिल मुस्लिमों के हित में नहीं है। सुनियोजित तरीके से उद्योगपतियों को लाभ पहुंचाने और मुसलमानों की वक्फ संपत्तियों को हड़पने के लिए यह बिल है। वक्फ की संपत्तियों पर जालिमों की नजरें हैं। यह जालिम हमारी संपत्तियों को हड़पना चाहते हैं। हम अपनी संपत्तियों की हिफाजत हर हाल में करेंगे। विदिशा जिले की जामा मस्जिद में भी काली पट्टी बांधकर नमाज पढ़ी गई। मस्जिद के इमाम अब्दुल रकीब ने कहा कि देश की सरकार जमीन के विरोध में जो बिल लाना चाहती है, हम उसका विरोध करते है। यह हमारे पक्ष में नहीं है, इसमें हमारी जमीन है, हमारे हाथ से चली जाएगी।इधर, रायसेन जिले की मुकरबा वाली मस्जिद में एक ही समुदाय के लोग आपस में भिड़ गए। दरअसल, कुछ लोग काली पट्टी बांधकर पहुंचे थे तो वही कुछ लोग बिना काली पट्टी के पहुंचे।

हमारा सौभाग्य है, हमने भारत मां की गोद में जन्म लिया : जमाल सिद्दीकी

एजेंसी

रायपुर। भारतीय जनता पार्टी अल्पसंख्यक मोर्चा ने केन्द्रीय नेतृत्व के आह्वान पर भाजपा कार्यालय एकात्म परिसर में 'सौगात-ए-मोदी' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस दौरान मुस्लिम समुदाय के 150 महिलाओं एवं बच्चों को सौगात किट भेंट की गई। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए भारतीय जनता पार्टी अल्पसंख्यक मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जमाल सिद्दीकी ने कहा कि आज मुसलमान जागरूक हो गया है। भाजपा को मुस्लिम विरोधी बताने की साजिशें नाकाम हुई हैं। उन्होंने कहा कि यह हमारा सौभाग्य है कि हमने भारत मां की गोद में जन्म लिया है और इसलिए हम सारे त्योहार मिल-जुलकर मनाते हैं। अल्पसंख्यक मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष सिद्दीकी ने कहा कि कांग्रेस समेत तमाम विपक्षी पार्टियों का साथ पहले ही आदिवासी, अनुसूचित जाति, और पिछड़ा वर्ग छोड़ चुके हैं, अब मुस्लिम भी भाजपा के साथ जुड़ गए हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के विकास कार्यों और जनकल्याणकारी नीतियों की चर्चा करते हुए सिद्दीकी ने कांग्रेस को

विकास विरोधी बताया। उन्होंने कहा कि भाजपा पार्टी विथ डिफ्रेंस इसीलिए है क्योंकि यह सेवा ही संगठन के मूलमंत्र पर समाज के हर वर्ग के कल्याण का काम सतत करती है। हम सत्ता नहीं, सेवा के लिए राजनीति करते हैं। इसीलिए तमाम विपक्षी दल आज बेचैन हैं और लगातार अफवाहों व साजिशों के जरिये मुस्लिमों को गुमराह कर रहे हैं लेकिन वे अपनी बदनीयती में कतई कामयाब नहीं होंगे। जमाल सिद्दीकी ने कहा कि मोर्चा के तत्वावधान में आगामी बैशाखी, गुड फ्राइडे, ईस्टर आदि पर्वों पर भी हर घर जाकर उन्हें त्योहार की बधाई और भेंट देकर मोर्चा पदाधिकारी व कार्यकर्ता उनकी खुशियों में शरीक होंगे। उन्होंने कहा कि यह हमारा सौभाग्य है कि हमने भारत मां की गोद में जन्म लिया है और इसलिए हम सारे त्योहार मिल-जुलकर मनाते हैं। भाजपा अल्पसंख्यक मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष शकील अहमद ने भी कार्यक्रम में उपस्थित मुस्लिम भाई-बहनों को रमजान और ईद की शुभकामनाएं दीं। उन्होंने कहा कि देश में नरेन्द्र मोदी की सरकार में सभी वर्गों के लिए बिना किसी भेदभाव के कार्य हो रहे हैं। कांग्रेस ने हमेशा देश को गुमराह करने का काम किया है। आज देश के मुस्लिम जागरूक हो गए हैं। उन्हें देश का विकास करने वाला राजनेता चाहिए, इसलिए वे प्रधानमंत्री मोदी के साथ कदम से कदम मिलाकर चल रहे हैं।

हरियाणा के सोनीपत की वर्ल्ड यूनिवर्सिटी ऑफ डिजाइन में अफीम की खेती पकड़ी गई, माली गिरफ्तार

एजेंसी

सोनीपत। हरियाणा के रोहतक की सुपवा यूनिवर्सिटी के बाद अब सोनीपत में राजीव गांधी एजुकेशन सिटी स्थित वर्ल्ड यूनिवर्सिटी ऑफ डिजाइन में फूलों के बीच अवैध अफीम की खेती का सनसनीखेज मामला सामने आया है। क्राइम यूनिट-1 की टीम ने छापेमारी कर इस गोरखधंधे का खुलासा किया। पुलिस ने मौके से विश्वविद्यालय के माली संतलाल को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने यहां से अफीम के करीब चार सौ पौधे बरामद किए हैं। दो दिन पहले रोहतक की सुपवा विवि में भी अफीम की खेती पकड़ी गई थी। हुई कार्रवाई के बारे में डीसीपी नरेंद्र सिंह कादियान ने बताया कि सीआईए-1 की टीम एएसआई सुरेंद्र के नेतृत्व में राजीव गांधी एजुकेशन सिटी, राई में गश्त कर रही थी। इसी दौरान पुलिस को सूचना मिली कि वर्ल्ड यूनिवर्सिटी ऑफ डिजाइन में अफीम की खेती हो रही है। सूचना के आधार पर ड्रग्स कंट्रोल ऑफिसर मुंशीराम और बागवानी विभाग के सहायक परियोजना अधिकारी ब्रज बेकरियां की मौजूदगी में छापा मारा गया। फूलों की क्यारियों के बीच 400 अफीम के पौधे पाए गए, जिनका कुल वजन 39.750 किलो था। पुलिस ने उत्तर प्रदेश के सुलतानपुर जिला निवासी संतलाल को गिरफ्तार कर लिया। मादक पदार्थ निरोधक अधिनियम के तहत मुकदमा दर्ज कर लिया गया है।

भारत की आर्थिक भविष्यवाणी से ममता बनर्जी की असहमति, भाजपा ने देश की छवि खराब करने का लगाया आरोप

एजेंसी

कोलकाता। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने ब्रिटेन दौरे में भारत के 2060 तक दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की भविष्यवाणी से असहमति जताई। उनके इस बयान को लेकर भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने तीखी प्रतिक्रिया दी और आरोप लगाया कि उन्होंने विदेशी धरती पर देश की छवि धूमिल करने का काम किया है। ममता बनर्जी ने यह टिप्पणी रात ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के केलॉग कॉलेज में एक संवाद के दौरान की। यहां जब उनसे कहा गया कि भारत पहले ही ब्रिटेन को पछाड़कर दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन चुका है और जल्द ही तीसरे स्थान पर पहुंचने वाला है, साथ ही 2060 तक शीर्ष स्थान पर काबिज होने की भविष्यवाणी की जा रही है, तो

उन्होंने इसे खारिज कर दिया। ममता बनर्जी ने इस भविष्यवाणी से असहमति जताते हुए कहा, मैं इससे सहमत नहीं हूं। कई ऐसे विषय हैं जिन पर मैं यहां खुलकर नहीं बोल सकती...आंतरिक और बाहरी मामलों को लेकर कुछ चीजें हैं, जिन्हें मैं उजागर नहीं कर सकती। मेरी इस पर कुछ अलग राय है।

उन्होंने कहा, कोविड-19 के बाद हर देश आर्थिक संकट से जूझ रहा है और मौजूदा वैश्विक उथल-पुथल की स्थिति में अगर आर्थिक युद्ध जैसी परिस्थिति बनी हुई है, तो हम कैसे उम्मीद कर सकते हैं कि हम आगे बढ़ेंगे? हमें आशा जरूर रखनी चाहिए, यह हमारा सपना है कि हमारा देश शीर्ष पर पहुंचे, लेकिन यह कई कारकों पर निर्भर करता है। भाजपा ने लगाया आरोपममता बनर्जी के इस बयान पर भाजपा ने कड़ी प्रतिक्रिया दी। पार्टी ने आरोप लगाया कि मुख्यमंत्री ने विदेशी धरती पर भारत की उपलब्धियों को कमतर आंकने की कोशिश की है। भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष और केंद्रीय मंत्री सुकांत मजूमदार ने इसे मुख्यमंत्री पद का अपमान करार दिया। उन्होंने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा, भारत ब्रिटेन को पछाड़कर दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन चुका है, जो हर भारतीय के लिए गर्व की बात है! लेकिन ममता बनर्जी विदेश में भारत की छवि खराब कर रही हैं। उनका यह भारत-विरोधी रवैया न केवल शर्मनाक है, बल्कि उस संवैधानिक पद का भी अपमान है, जिसे वह संभालती हैं। मजूमदार ने सवाल उठाया, आप मुख्यमंत्री के रूप में विफल रही हैं, लेकिन क्या आपको खुद को भारतीय कहने में भी झिझक होती है? क्या आप वास्तव में भारतीय हैं? विदेशी धरती पर देश का अपमान करना खुलेआम भारत का विरोध करने जैसा है।

अपने गांव को स्वच्छ और धर्ममय बनाएं : स्वान्त रंजन

एजेंसी

लखीमपुर खीरी। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय प्रचारक प्रमुख स्वान्त रंजन ने कहा कि हिन्दू धर्म भारत वर्ष का विचार है। सम्पूर्ण धर्म की रक्षा करना। सबको धर्म के लिए काम करना। इस नाते हम अपने-अपने धर्म का पालन करते हैं। गीता, रामायण, रामचरितमानस का पाठ करते हैं। इसके साथ-साथ हम अपने गांव को भी एक अच्छा, स्वच्छ एवं धर्ममय गांव बनाएं। वह लखनियांपुर नीमगांव खीरी में आयोजित ग्रामोत्सव कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। संघ के अखिल भारतीय प्रचारक प्रमुख स्वान्त ने कहा कि वसुंधरा परिवार हमारा। ऐसा हम कहते हैं। यह पृथ्वी हमारा परिवार है। इसलिए कहा जाता है कि हमारी सोच वैश्विक होनी चाहिए लेकिन हमारा व्यवहार अपने परिवेश के अनुसार होना चाहिए। उन्होंने कहा कि जब सभी में भगवान का वास है। सबको भगवान अपना मानता है। इसलिए जो अपने को खराब लगता हो, वह

दूसरे से व्यवहार न करें। किसी के साथ कोई भेदभाव नहीं। जो हिन्दू विचार है भारत का विचार है धर्म का विचार है ऋषियों ने कहा ?है सभी को अपना मानने को कहा है। सामाजिक समरसता गतिविधि के प्रान्त प्रमुख राजकिशोर ने कहा कि समरस समाज व भेदभाव रहित समाज की स्थापना के उद्देश्य से ग्रामोत्सव का आयोजन होता है। इस कार्यक्रम में आसपास के कई गांवों का प्रतिनिधित्व रहा। यज्ञस्थल से लेकर प्रवेश द्वार तक गाय के गोबर से लिपाई ग्रामवासी ही करते हैं। ग्रामवासी ही मिलकर प्रसाद तैयार करते हैं व वितरण करते हैं। सबसे प्रमुख बात यह रही कि सम्पूर्ण आयोजन में प्लास्टिक का प्रयोग नहीं किया गया। कार्यक्रम में पंच परिवर्तन का संकल्प दिलाया गया। स्वच्छता प्रहरियों का हुआ सम्मान-ग्रामोत्सव के समापन अवसर पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय प्रचारक प्रमुख स्वान्त रंजन व प्रान्त प्रचारक कौशल जी की उ?पस्थिति में किसानों, दिव्यांगों, ग्राम विकास से जुड़े बंधुओं,मेधावी विद्यार्थियों व स्वच्छता प्रहरियों को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर कन्याओं का पूजन भी किया गया। ग्रामोत्सव के प्रबंधक नवनीत मिश्र ने बताया कि ग्रामवासियों के सहयोग से भारत रत्न पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेई की प्रतिमा का भी अनावरण किया गया। सात दिन ?चले ग्रामोत्सव में मलूकपीठ वृन्दावन के धनंजय दास महाराज के श्रीमुख से प्रवचन व कथा हुई। वहीं वृन्दावन से ही पधारे श्याम बिहारी शुक्ला के नेतृत्व में प्रतिदिन प्रभाती व रुद्रीपाठ और रासलीला हुई। इस अवसर पर महामण्डलेश्वर यतीन्द्रानंद गिरि,प्रान्त प्रचारक कौशल,जिला संघचालक अवधेश, भाजपा के क्षेत्रीय अध्यक्ष कमलेश मिश्रा,सामाजिक समरसता गतिविधि की प्रान्तीय टोली सदस्य रेनू,प्रदीप मिश्रा एडवोकेट सहित बड़ी संख्या में ग्रामीण उपस्थित रहे।

भारत के प्रयासों और विचारों को आज पहले से कहीं अधिक महत्व मिल रहा है : प्रधानमंत्री

एजेंसी

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि आज भारत के प्रयासों, नवाचारों और विचारों को जो महत्व मिल रहा है, वह पहले कभी नहीं मिला। उन्होंने कहा कि भारत अब न केवल विश्व व्यवस्था में भाग ले रहा है, बल्कि इसके भविष्य को सुरक्षित बनाने में भी योगदान दे रहा है। प्रधानमंत्री नई दिल्ली के भारत मंडपम में 'आज भारत क्या सोचता है' विषय पर एक टीवी चैनल द्वारा आयोजित वैश्विक शिखर सम्मेलन को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि आज विश्व की दृष्टि भारत पर है। दुनिया के किसी भी देश में जाने पर वहां के लोग भारत को लेकर एक नई जिज्ञासा से भरे हुए हैं। आखिर ऐसा क्या हुआ कि जो देश 70 साल में 11वें नंबर की इकोनॉमी बना और महज 7-8 साल में 5वें नंबर की इकोनॉमी बन गया। आईएमएफ के

नए आंकड़े बताते हैं कि भारत दुनिया की एकमात्र मेजर इकोनॉमी है, जिसने 10 वर्षों में अपने जीडीपी को डबल किया है। बीते दशक में भारत ने 2 लाख करोड़ डॉलर अपनी इकोनॉमी में जोड़े हैं।

प्रधानमंत्री ने प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) जैसी जांच एजेंसियों की आलोचना करने के लिए विपक्षी दलों पर कटाक्ष करते हुए कहा कि जिन लोगों ने जनता का पैसा लूटा है, उन्हें उसे वापस करना होगा। उन्होंने कहा, ÷जिन लोगों ने जनता को लूटा है उन्हें भी लूटा हुआ धन लौटाना पड़ रहा है। जिस ईडी को दिन-रात गालियां दी जा रही हैं, ईडी ने 22,000 करोड़ रुपये से अधिक वसूले हैं। ये पैसा कानूनी तरीके से उन पीड़ितों तक वापस पहुंचाया जा रहा है जिनसे यह पैसा लूटा गया। उन्होंने कहा कि आज दुनिया की सबसे बड़ी युवा आबादी भारत में है। ये युवा तेजी से कौशल प्राप्त करके नवाचार को गति दे रहा है। इन सबके बीच भारत की विदेश नीति का मंत्र इंडिया फर्स्ट बन गया है। एक जमाने में भारत की सबसे समान रूप से दूरी बनाकर चलो थी। आज के भारत की नीति सबके समान रूप से करीब होकर चलो है।प्रधानमंत्री ने कहा कि हमने न केवल बुनियादी ढांचे में सुधार किया है, बल्कि हमने देश भर में बैंकिंग प्रणाली को भी मजबूत किया है। आज बैंकों का एनपीए बहुत कम हो गया है। आज बैंकों का लाभ एक लाख 40 हजार करोड़ रुपये के नए रिकॉर्ड को पार कर गया है। बाजार में विदेशी के बजाय भारतीय उत्पादों की मांग को तवज्जो मिलने का जिक्र करते हुए कहा कि आज स्थिति बदल गई है।

प्रधानमंत्री 30 मार्च को छत्तीसगढ़ के दौरे पर आएंगे, बिलासपुर को देंगे करोड़ों की विकास परियोजनाओं की सौगात

एजेंसी

रायपुर/बिलासपुर। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी 30 मार्च रविवार को छत्तीसगढ़ के दौरे पर आएंगे। वे दोपहर करीब साढ़े तीन बजे बिलासपुर में 33 हजार 700 करोड़ रुपये से अधिक की लागत वाली कई विकास परियोजनाओं की आधारशिला रखेंगे। सरकारी प्रवक्ता के अनुसार प्रधानमंत्री मोदी बिलासपुर जिले में स्थित एनटीपीसी की सीपत सुपर थर्मल पावर परियोजना चरण- ढ्ढढ्ढढ्ढ (1×800एमडब्ल्यू) की आधारशिला रखेंगे, जिसकी लागत 9,790 करोड़ रुपये से अधिक है। यह पिट हेड परियोजना उच्च बिजली उत्पादन दक्षता के साथ अत्यधुनिक अल्ट्रा-सुपरक्रिटिकल तकनीक पर आधारित है। वह छत्तीसगढ़ राज्य विद्युत उत्पादन कंपनी लिमिटेड (सीएसपीजीसीएल) की 15,800 करोड़ रुपये से अधिक की लागत वाली पहली सुपर क्रिटिकल थर्मल पावर परियोजना (2ङ्ग660एमडब्ल्यू) के कार्य की शुरुआत करेंगे। वह पश्चिमी क्षेत्र विस्तार योजना (डब्ल्यूआरईएस) के तहत 560 करोड़ रुपये से अधिक की लागत वाली पावरग्रिड की तीन विद्युत पारेषण परियोजनाओं को भी राष्ट्र को समर्पित करेंगे। प्रधानमंत्री मोदी प्रदेश के कोरिया, सूरजपुर, बलरामपुर और सरगुजा जिलों में भारत पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड (बीपीसीएल) की सिटी गैस वितरण (सीजीडी) परियोजना का उद्घाटन करेंगे। इसमें 200 किलोमीटर से अधिक हाई प्रेशर पाइपलाइन और 800 किलोमीटर से अधिक एमडीपीई (मीडियम डेंसिटी पॉलीइथिलीन) पाइपलाइन और 1,285 करोड़ रुपये से अधिक की लागत वाली कई सीएनजी डिस्पेंसिंग आउटलेट शामिल हैं।

नवरात्र से पहले कटरा में सुरक्षा हुई कड़ी, सीसीटीवी कैमरे व ड्रोन के अलावा सुरक्षाकर्मी तैनात

एजेंसी

जम्मू। कठुआ जिले में सुरक्षाबलों और आतंकियों की मुठभेड़ के बाद नवरात्र उत्सव के दौरान माता वैष्णो देवी मंदिर में सुरक्षा के कड़े इंतजाम किए गए हैं। मंदिर के पूरे इलाके में एआई-सक्षम सीसीटीवी कैमरे और ड्रोन सहित भारी सुरक्षा व्यवस्था की जा रही है। चैत्र (वसंत) नवरात्रि 30 मार्च से शुरू हो रहे हैं। नवरात्र में नौ दिवसीय उत्सव के दौरान गुफा मंदिर में भक्तों की भारी भीड़ उमड़ने की उम्मीद है। जम्मू शहर और राजमार्गों पर सुरक्षा बढ़ा दी गई है, वाहनों की जांच और संदिग्ध लोगों की तलाशी ली जा रही है।दरअसल, कठुआ जिले में मुठभेड़ में तीन आतंकवादी मारे गए और चार पुलिसकर्मी बलिदान हो गए। इसके बाद मंदिर आने वाले श्रद्धालुओंकी सुरक्षा के कड़े इंतजाम किए गए हैं। जम्मू शहर और राजमार्गों पर सुरक्षा बढ़ा दी गई है, वाहनों की जांच और संदिग्ध लोगों की तलाशी ली जा रही है। शुक्रवार को गुफा मंदिर के आधार शिविर कटरा की सुरक्षा जांच करते हुए रियासी के एसएसपी परमवीर सिंह ने कहा कि सुरक्षा को काफी मजबूत किया गया है। उन्होंने कहा कि हम देश के विभिन्न हिस्सों से आने वाले सभी भक्तों को आश्वस्त करते हैं कि उन्हें पर्याप्त सुरक्षा दी जाएगी। उन्होंने कहा कि हमने कटरा शहर में कई स्थानों पर सुरक्षा जांच की है और रणनीतिक स्थानों पर अतिरिक्त तैनाती की योजना बना रहे हैं। एसएसपी सिंह ने बताया कि इसके अलावा केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) और पुलिस की संयुक्त टीमों के साथ-साथ त्वरित प्रतिक्रिया टीमों को भी तैनात किया गया है और वे सतर्क हैं। पुलिस उपमहानिरीक्षक रईस मोहम्मद भट ने कहा कि इलाके में ड्रोन की तैनाती सहित सुरक्षा के व्यापक इंतजाम किए गए हैं। इसके अलावा मंदिर की ओर जाने वाले रास्ते पर सीआरपीएफ की कड़ी नजर है। अधिकारियों ने कहा कि तीर्थयात्रा मार्ग पर उन्नत एआई क्षमताओं से लैस 500-600 से अधिक सीसीटीवी कैमरे लगाए गए हैं। माता वैष्णो देवी के गुफा मंदिर में पहले से ही श्रद्धालुओं की संख्या में वृद्धि देखी जा रही है। श्री माता वैष्णो देवी श्राइन बोर्ड के मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) अंशुल गर्ग ने कहा कि पिछले कुछ दिनों में तीर्थयात्रियों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। माता वैष्णो देवी मंदिर में प्रतिदिन लगभग 40 हजार तीर्थयात्री आ रहे हैं। उन्होंने कहा कि आने वाले दिनों में यह संख्या और बढ़ने की उम्मीद है। श्री माता वैष्णो देवी श्राइन बोर्ड (एसएमवीडीएसबी) ने 30 मार्च से 7 अप्रैल तक त्योहार के दौरान तीर्थयात्रियों के लिए नए बुनियादी ढांचे तैयार किया है और अधिक सुविधाओं की व्यवस्था की है।

पहाड़ों की रानी है 'मसूरी'

पर्यटन स्थल मसूरी अन्य हिल स्टेशनों से भिन्न है क्योंकि यहां एक ओर बर्फ की सफेद चादर ओढ़े भव्य हिमालय प्रहरी की तरह खड़ा है तो दूसरी ओर मैदानों में शीतलता का संचार करती हुई गंगा मंथर गति से बह रही है। मसूरी समुद्र तल से लगभग 6,500 फुट ऊंचाई पर स्थित है। पहाड़ों की रानी मसूरी के नजारों में जरूर कुछ बात है तभी तो यहां हर साल लाखों की संख्या में पर्यटक आते हैं खासकर हनीमून मनाने जाने वाले लोगों के लिए तो यह पसंदीदा जगह है। गनहिल मसूरी की दूसरे नंबर की सर्वाधिक ऊंची चोटी है। पुराने दिनों में समय का पता लगाने के लिए दोपहर को ठीक बारह बजे इस पहाड़ी पर रखी तोप दागी जाती थी। कुछ समय के बाद तोप हटा ली गई, तब से इसका नाम गनहिल पड़ गया। रोपवे से गनहिल पहुंचने का मजा सचमुच रोमांचक है। गनहिल में जहां एक ओर विशाल हिमालय की दूर-दूर तक फैली सफेद झिलमिलाती चोटियां दिखाई पड़ती हैं वहीं दूसरी ओर दून घाटी की बिखरी पड़ी अद्भुत सुंदरता का नजारा देखने को मिलता है। कैमल्स बैक रोड़ भी देखने योग्य जगह है। यह सड़क घुड़सवारी व सैर करने के लिए बहुत अच्छी है। कैमल्स बैक का यह रास्ता कुलरी स्थित रिंक हाल से शुरू होकर लाइब्रेरी बाजार पर खत्म होता है। इस रास्ते पर पहाड़ी का आकार कुछ-कुछ ऊंट की पीठ की भांति दिखाई देता है। इसलिए इस सड़क का नाम कैमल्स रोड़ पड़ गया। यहां की खास बात यह है कि पूरे रास्ते में जगह-जगह पर थकान मिटाने तथा प्राकृतिक दृश्यों का आनंद लेने के लिए हवा घर बने हुए हैं। लंढोर बाजार मसूरी के सर्वप्रथम निर्मित 'मुलिंगार भवन' से शुरू होकर लंढोर के घंटाघर पर खत्म होता है। एक मील लंबा यह बाजार पुराने समय की शान लिए हुए है। इस बाजार में कहीं तो आयातित सामान की दुकानें दिखाई देती हैं तो कहीं विशुद्ध भारतीय सभ्यता की गाथा कहती साधारण दुकानें हैं।

आप लाल टिब्बा भी देखने जा सकते हैं। यह मसूरी की सर्वाधिक ऊंची चोटी है। आप यहां से दूरबीन की मदद से गंगोत्तरी, बदरीनाथ, केदारनाथ, नंदा देवी और श्रीकांता की चोटियों का विहंगम दृश्य देख सकते हैं। मसूरी से लगभग पंद्रह किलोमीटर दूर चकराता रोड़ पर स्थित कैंपटी फाल मसूरी का एक और सुंदर स्थल है। पर्वतों में से फूट कर निकलता हुआ यह झरना पांच अलग-अलग धाराओं में चालीस फुट ऊंचाई से गिरता हुआ दिखाई पड़ता है। आप नौकायान करना चाहें तो लेकमिस्ट देखने जा सकते हैं। इस स्थान को आधुनिक पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया गया है। मसूरी का म्यूनिसिपल गार्डन भी देखने योग्य है। यह गार्डन आजादी से पहले बोटोनिकल गार्डन कहलाता था। आजकल इसे कंपनी गार्डन भी कहा जाता है। कंपनी गार्डन में मुस्कुराते फूलों के अलावा एक छोटी सी कृत्रिम झील भी बनाई गई है। यहां पर निकट में ही एक छोटा सा तिब्बती बाजार भी है। इन सब स्थानों के अलावा आप मसूरी झील और भट्टा फाल तथा क्लाउड ऐंड भी देख सकते हैं। मसूरी के निकटवर्ती स्थलों की बात की जाए तो यमुना ब्रिज और नाग टिब्बा सहित धनोल्टी का नाम लिया जा सकता है। मसूरी तक जाने के लिए निकटतम रेलवे स्टेशन देहरादून है। देहरादून दिल्ली, हावड़ा, लखनऊ, वाराणसी, मुंबई, अमृतसर और इलाहाबाद आदि से रेल मार्ग से जुड़ा हुआ है। देहरादून से मसूरी तक जाने के लिए टैक्सियां भी आसानी से मिल जाती हैं। यदि आप गर्मी से राहत पाने के लिए मसूरी जाना चाहते हैं तो अप्रैल से जून के बीच मसूरी जाएं। जुलाई से सितंबर तक यहां बरसात का आनंद लिया जा सकता है। यदि वहां घूमने-फिरने जाना चाहते हैं तो इसके लिए उत्तम समय अक्टूबर से दिसम्बर के बीच का है। यहां जनवरी से फरवरी के बीच में हिमपात होता है।

समंदर से घिरा, हरा भरा, खूबसूरत देश मॉरीशस

मोती के समान सुंदर तथा सफेद मारीशस के चारों तरफ 100 मील का समुद्री तट और मीलों तक फैली रूपहली रेत ही इसका मुख्य आकर्षण है। दक्षिणी अफ्रीका के पास स्थित मारीशस द्वीप पर पहले ज्वालामुखी पर्वत थे जिनसे लावा बहता रहता था या बंजर और पथरीली भूमि थी। 1598 में डचों ने मारीशस पर सबसे पहले कब्जा किया और वे तकरीबन 120 वर्षों तक यहां रहे जिसके प्रमाण आज भी यहां मिलते हैं। 1710 में डच मारीशस छोड़ कर चले गए। इसके पांच वर्ष बाद यहां फ्रेंच आए और वह 95 वर्षों तक यहां रहे। इसके बाद फ्रांसीसियों ने इस द्वीप को अंग्रेजों के हाथों बेच दिया। अंग्रेजों ने इस द्वीप को उपजाऊ और हराभरा बनाने के लिए बहुत मेहनत की। उन्होंने भारत से बिहारी मजदूरों को परिवार सहित यहां लाकर खेती के काम में लगाया। मारीशस में गन्ने की लहलहाती खेती बिहारी मजदूरों की मेहनत का ही परिणाम है। 17वीं और 18वीं सदी में आए मजदूरों की पीढ़ियों ने हिंदू धर्म, भाषा, पहनावा तथा रहन-सहन भारतीय परंपरा के अनुसार ही रखा। मारीशस में वैसे अब नई पीढ़ी आधुनिक पोशाक जींस वगैरह पहनने लगी है लेकिन गांवों में आज भी बड़े-बूढ़े साड़ी और कुर्ता-धोती को ही महत्व देते हैं। स्कूलों में भोजपुरी वर्नाकुलर के रूप में अनिवार्य है। यहां की बोलचाल की भाषा क्रेओल है जो फ्रेंच, अंग्रेजी और भोजपुरी भाषा के मिश्रण से बनी है। मारीशस को 1968 में अंग्रेजी शासन से पूर्ण आजादी मिली। मारीशस की जलवायु समशीतोष्ण है। यहां मई से अक्टूबर तक सर्दियों का मौसम रहता है लेकिन तापमान 12 डिग्री सेल्सियस से कम नहीं जाता है। नवंबर से अप्रैल तक गर्मी के मौसम में तापमान 30 डिग्री सेल्सियस से अधिक नहीं होता है। चूंकि मारीशस चारों ओर समुद्र से घिरा है इसलिए यहां का मौसम वर्ष भर सुहावना बना रहता है। यहां गर्मी में 14 घंटे का और सर्दी में 12 घंटे का दिन होता है। यहां बरसात वर्ष भर होती रहती है। मारीशस में लिली और ताड़ के वृक्षों की शोभा देखते ही बनती है। पांपलेमस में रायल बोटेनिकल गार्डन यहां का सबसे सुंदर गार्डन है। मारीशस की राजधानी पोर्टलुई यहां का सबसे बड़ा शहर एवं बंदरगाह है। यहां की चौड़ी, साफ-सुथरी सड़कें तथा यातायात व्यवस्था सैलानियों का मन मोह लेती हैं। पोर्टलुई में बड़े-बड़े अतिआधुनिक होटल एवं रेस्तरां हैं, जहां अंग्रेजी, चीनी व भारतीय भोजन आसानी से सुलभ है। मारीशस में खाने-पीने की हर चीज बहुत महंगी है क्योंकि यहां घी, दूध, मक्खन, सब्जियां, अनाज, कपड़े आदि सब कुछ विदेशों से आयात किया जाता है। यहां ज्यादातर खाने की वस्तुएं दक्षिण अफ्रीका से तथा कपड़े व गहने भारत, जापान और कोरिया से आयात किए जाते हैं। समुद्री खेलों के शौकीन खिलाड़ियों के लिए मारीशस सबसे उपयुक्त जगह है क्योंकि वर्ष भर यहां का मौसम खेलों के लिए बेहतर बना रहता है। आजकल समुद्री खेलों को और अधिक लोकप्रिय व सुविधाजनक बनाने के लिए मारीशस सरकार इस ओर विशेष ध्यान भी दे रही है। मारीशस जाने वाले सैलानी यहां की महिलाओं के हाथ के बने शंख, समुद्री सीप और मोती की मालाएं और हस्तकला की अनेक वस्तुओं को बड़े चाव से खरीदते हैं। तो आप भी जब यहां जाएं तो इन्हें खरीदना नहीं भूलें।

पहाड़ी मदिकेरी में बनाइए अपनी को यादगार

मदिकेरी की खूबसूरती में एक सदगी हैं। इसे भगवान का आशीर्वाद हासिल है। प्रदूषण से मुक्त यहां का शांत माहौल सभी को अच्छा लगता है। अपनी छुट्टियों को यादगार बनाना चाहते हैं, तो मदिकेरी से बेहतर कुछ नहीं। लकड़ियों के ढलान, गांव, रंग-बिरंगे दृश्य और प्राकृतिक छटा पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करती है। मदिकेरी को कुर्ग का जिला मुख्यालय कहा जाता है जो 1525 मीटर की ऊंचाई पर है। इस शहर में ज्यादातर बंगले लाल रंग के पत्थर के हैं। यही इस शहर की खासियत है। मदिकेरी को भारत का स्कॉटलैंड भी कहा जाता है जिसकी मृदु राजा ने 1681 में तलाश की थी। मृदुराजाकेरी के नाम पर ही इस शहर का नाम मदिकेरी रखा गया। कावेरी नदी शहर से 44 किलोमीटर की दूरी पर बहती हैं। कर्नाटक में मदिकेरी से आठ किलोमीटर दूर है- ऐबे फॉल व अब्बी फॉल। यह वाटरफॉल कॉफी के बागान, मसालों के बागान और हरे पेड़-पौधे के बीच है जहां से कई धाराएं पहाड़ों से गिरती हुई कावेरी नदी मे जाकर मिलती हैं। यह वाटर फॉल अचानक ही बनता हैं। चट्टानों से यह वाटरफॉल तेजी से गिरता हुआ शांत पूल में मिलता है। इस के गिरने की गर्जन सड़क से ही सुनी जा सकती है। मानसून के दौरान इस वाटरफॉल की धारा बहुत ऊंची हो जाती हैं मगर गर्मी के दिनों में यह कम हो जाती हैं। इस वाटरफॉल की सुंदरता देखने के लिए सर्दियों की शुरूआत होते ही आपको जाना होगा ताकि मानसून के पानी से बने इस वाटरफॉल की सुदंरता को आप खो न दें। राजा सीट एक छोटा सा मंडप है जिसके चारों तरफ बगीचा है। यहां से नीचे घाटी की हरियाली देखते बनती है। अद्भुत सूर्यास्त और नीले पहाड़ का खूबसूरत दृश्य देखकर एक पल के लिए तो सांसें रूक जाती हैं। मदिकेरी किले का निर्माण राजा मृदुराजा ने 17वीं शताब्दी में करवाया था। इस किले के अंदर एक पैलेस भी बनवाया था। टीपू सुल्तान ने इस महल को दोबारा ग्रेनाइट से बनवाया। इसे जाफराबाद नाम दिया गया। 1790 में यह किला डोडावीरा राजेन्द्र के कब्जे में चली गई। मदिकेरी को ओककारेश्वर मंदिर का निर्माण 1820 में लिंग राजेन्द्र ने करवाया था। यह मदिकेरी शहर के दिल से सिर्फ एक किलोमीटर दूर है। वास्तुकला की बात करें, तो यहां दो तरह की वास्तुकला देखने को मिलती हैं पहली इस्लामिक और दूसरी गोथिक। इस मंदिर के मुख्या देवता शिवलिंग के रूप में विराजमान हैं। कहते हैं कि लिंगराजेन्द्र ने ब्रह्महत्या से मुक्ति पाने के लिए इस मंदिर का निर्माण कराया और शिवलिंग की स्थापना की। मदिकेरी में कई ऐसे ट्रैकिंग स्थल हैं जहां आप ट्रैकिंग का मजा ले सकते हैं। ट्रैकर्स के लिए मदिकेरी स्वर्ग हैं। मदिकेरी जाने का बेहतरीन समय है सितम्बर से मार्च। नजदीकी हवाई अड्डा मंगलौर 136 किलोमीटर दूर है। नजदीकी रेलवे स्टेशन कसरगॉड 106 किलोमीटर दूर है। मदिकेरी दूसरे कई मुख्य शहरों से सड़क यातायात से जुड़ा है।

दिल्ली की खुफिया रास्तों की दास्तां

बादशाहों की पसंद दिल्ली की जमीं, कई लड़ाइयों की गवाह बनी। सियासत की इस बिसात पर वे खुद नहीं समझ पाते थे कि कब वे मात खा जाएं। बादशाहों ने अपने बचाव के लिए एक अदद ऐसे रास्ते जरूर तैयार किए, जिससे वे दुश्मनों से बचकर निकल सकें। राजाओं ने अपने शासन में शानदार किले तो बनवाये ही उनमें खुफिया रास्ते भी बनाए। प्रस्तुत है इन्हीं सुरंग नुमा खुफिया रास्तों की सैर – उन खुफिया रास्तों का जिक्र छिड़ा है जिससे होते हुए कभी बादशाहों ने अपनी जान बचाई होगी या फिर चुपचाप शिकार पर जाने के लिए इन रास्तों का इस्तेमाल किया होगा। सियासत की समझ रखने वाले बादशाहों ने सुरंगें भी बनाई, जिसका जिक्र किताबों में है। हाल ही में दिल्ली विधानसभा में भी सुरंग निकलने का दावा किया गया है। इस बारे में अब शोध हो रहा है लेकिन यह पहला मौका नहीं है जब दिल्ली में सुरंग का जिक्र छिड़ा हो। इससे पहले भी कश्मीरी गेट के पास ऑक्टर्स लोनी के घर में सुरंग मिली थी जिसे बंद कर दिया गया, मौजूदा समय में यहां उत्तरी रेलवे का दफ्तर है। माना जाता है कि यह सुरंग कश्मीरी गेट तक निकलती है। इसके साथ निजामुद्दीन औलिया की दरगाह की बावली में भी एक खुफिया रास्ता होने की बात कही गई है। इसी रास्ते से निजामुद्दीन औलिया बावली में आया करते थे। इस पर काम भी हुआ लेकिन प्रशासनिक तौर पर इसके दस्तावेज नहीं प्राप्त हुए। यही नहीं दिल्ली में सात किलोमीटर लंबी सुरंग होनी की भी बात कही जाती है। यह सुरंग इतनी लंबी और बड़ी बताई जाती है कि इससे बादशाह की फौज घोड़े पर बैठकर भी आराम से निकल सकती थी। बाड़ा हिंदूराव के पास पीर गायब ऐतिहासिक स्मारक के पास इसके खंडहर से जाकर सुरंग होने की बात किताबों में दर्ज है। यह सुरंग पीर गायब से फिरोज शाह कोटला तक जाती थी। अब इतनी लंबी सुरंग थी या नहीं यह शोध का विषय है।

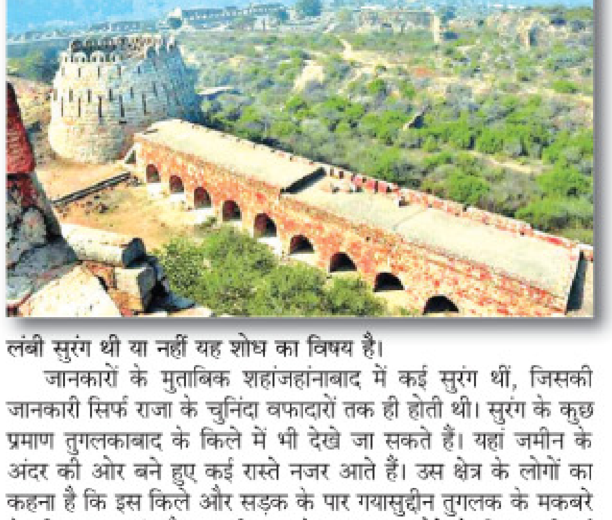

जानकारों के मुताबिक शहांजहांनाबाद में कई सुरंग थीं, जिसकी जानकारी सिर्फ राजा के चुनिंदा वफादारों तक ही होती थी। सुरंग के कुछ प्रमाण तुगलकाबाद के किले में भी देखे जा सकते हैं। यहां जमीन के अंदर की ओर बने हुए कई रास्ते नजर आते हैं। उस क्षेत्र के लोगों का कहना है कि इस किले और सड़क के पार गयासुद्दीन तुगलक के मकबरे के बीच एक सुरंग है। उसकी कब्र के पास कुछ लोहे के ग्रिल लगी हुई हैं। सुरंग का यह रास्ता कब्र की तरफ जाता है। इसी तरह लालकिले को लेकर कई सुरंगों की कहानी है। जाहिर है यह सत्ता का केन्द्र भी रहा। कहा जाता है कि लालकिले के अंदर एक ऐसी सुरंग हुआ करती थी जो चांदनी चौक को यमुना नदी से जोड़ा करती थी। हालांकि इस बारे में यहां के अधिकारी कुछ भी कहने से कतराते हैं। अलबत्ता रंगमहल के पास पीछे एक गेट जरूर है जिससे शाहजहां यमुना नदी में जाया करते थे।

विजयालक्ष्मी सिर्फ कहानियां ही नहीं हकीकत भी है

शाहजहांनाबाद में सुरंग और खुफिया रास्तों की कहानियां सिर्फ कहानियां नहीं हकीकत भी हैं। दिल्ली में 15 शासकों ने राज किया और हर बादशाह ने अपने बचाव के लिए खुफिया रास्ता बनाया। इसके बारे में इतिहास में इसलिए भी ज्यादा तथ्य नहीं क्योंकि अंग्रेजों को इन रास्तों से ही खतरा था इसलिए सबसे पहले उन्होंने सुरंगों और खुफिया रास्तों को नेस्तोनाबूद किया। आज भी अगर इस संबंध में सर्वे किया जाए तो सुरंगों के बारे में ढेर सारी जानकारियां मिल सकती हैं। 1880 के पहले के इतिहासकारों ने अपनी किताबों में भी इसका जिक्र किया है। विलियम डेलरिंपल की किताब 'सिटी ऑफ जिंस' में उन्होंने लालकिले में सुरंग होने की बात लिखी है, क्योंकि ऐसा कहा जाता है कि शहांजहांनाबाद बसाते समय बादशाह ने अपनी सुरक्षा के लिए अपने किले से शहर के बाहर तक सुरंग बनाई थी। लेकिन इस तथ्य के भी सुबूत नहीं मिलते। वजह, कभी किसी ने इस संबंध में शोध करने की कोशिश ही नहीं की। दंत कथाएं जरूरत हैं लेकिन उन कथाओं का आधार भी हो सकता है इस बारे में किसी एजेंसी को खोजने की लालसा नहीं है। लालकिले में भी सुरंगों के बारे में कई कहानियां है। कहा जाता है जब नादिर शाह ने मुगलों पर हमला किया तब उसने पूरी दिल्ली में कत्लेआम मचा रखा था और सिर्फ तीन घंटे में ही मुगलों की फौज को हरा दिया था। तब बादशाह मोहम्मद शाह ने नादिर से मुलाकात करने के लिए खुफिया रास्ते का इस्तेमाल किया था। लालकिले में जिस तरह मेहताब बाग की खोज की जा रही है उसी तरह उन खुफिया रास्तों की भी तह तक जाने की जरूरत है।

मिटा दिया था नामों-निशान

दिल्ली में तुगलकाबाद के किले के अंदर कुछ एक ऐसे तथ्य मिलते हैं जिससे लगता है कि यहां खुफिया रास्ते रहे होंगे। किले के अंदर भूमिगत बाजार होने के सुबूत मिले हैं, क्योंकि उस रास्ते के दोनों तरफ आर्क मिले हैं। ऐसा लगता है कि इस रास्ते में बाजार लगता होगा। इसी तरह कुछ और रास्ते हो सकते हैं जो जमीन के अंदर होते हों। चूंकि जब अंग्रेज दिल्ली आए उन्होंने सभी ऐसे रास्ते खत्म कर दिए जिससे उनके राज को खतरा था। बेशक उन्होंने बाद में कुछ बनाया होगा जिससे अभी तक एएसआइ अनभिज्ञ हो। चूंकि सुरंगों के नाम पर लोगों की जिज्ञासा जाग जाती है, इसलिए भी कई कहानियां बनाई गई हैं। जैसे कहा जाता है कि दिल्ली से आगरा तक एक सुरंग होती थी, जो कि संभव नहीं है। अगर ऐसा होता तो कुछ शाफ्ट तो मिलते। हो सकता है कि लालकिले के पीछे यमुना नदी से होते हुए आगरा जाने की कहानी को लोगों ने सुरंगी रास्ता बना दिया हो। तुगलकाबाद के किले में कुछ साक्ष्य जरूरत मिले हैं, लेकिन पीर गायब और फिरोजशाह कोटला में सुरंग के बारे में ऐसी कोई जानकारी नहीं है।

दबी हैं कई रोचक कहानियां

सुरंगों के बारे में ज्यादा सुबूत इसलिए भी नहीं हैं क्योंकि ये गुप्त रखे जाते थे। ये वो रास्ते होते थे जहां से राजा और रानी युद्ध के दौरान भाग सकें या फिर वो रास्ते जहां से उनके मुखबिर, भरोसेमंद लोग उनके लिए मुखबिरी करते होंगे। इसलिए इन रास्तों को राज रखा जाता था। उस समय के भी राजाओं के सिवाय कुछ खास लोगों को ही इसके बारे में जानकारी होती थी। दिल्ली में कई राजाओं ने खुद अंग्रेजों ने भी सुरंग बनाई होगी।

चेन्नई और मदुरै करेंगे एफआईएच जूनियर पुरुष हॉकी विश्वकप की मेजबानी

नयी दिल्ली। तमिलनाडु के चेन्नई और मदुरै 28 नवंबर से 10 दिसंबर तक चलने वाली एफआईएच जूनियर पुरुष हॉकी विश्वकप की मेजबानी करेंगे। हॉकी इंडिया ने एफआईएच जूनियर पुरुष हॉकी विश्वकप की मेजबानी करने वाले तमिलनाडु के चेन्नई और मदुरै शहरों के नामों की घोषणा की। दो सप्ताह तक चलने वाले इस हॉकी महाकुंभ में पहली बार 24 टीमें भाग ले रही। देश में आयोजित होने वाला यह लगातार तीसरा एफआईएच जूनियर पुरुष विश्वकप होगा। इससे पहले इस प्रतिष्ठित आयोजन के पिछले संस्करण 2021 में ओडिशा के भुवनेश्वर और 2016 में उत्तर प्रदेश के लखनऊ में आयोजित किए गए थे। इस अवसर हॉकी इंडिया के अध्यक्ष डॉ. दिलीप तिर्की ने कहा, आगामी एफआईएच जूनियर पुरुष हॉकी विश्वकप की मेजबानी करना हॉकी इंडिया के लिए बहुत गर्व की बात है और मैं तमिलनाडु सरकार के मुख्यमंत्री एमके स्टालिन और खेल मंत्री उदयनिधि स्टालिन के प्रति आभार व्यक्त करता हूं जिन्होंने इस आयोजन की सफलतापूर्वक मेजबानी के लिए अद्वितीय समर्थन दिया है। इस बार जूनियर विश्व कप में 24 टीमें खेल रही हैं, इसलिए हम दो शहरों - चेन्नई और मदुरै में यह आयोजन करेंगे।

भारतीय खाद्य निगम, उत्तर क्षेत्र और उत्तर रेलवे ने जीत दर्ज की

नयी दिल्ली । इंस्टिट्यूशनल फुटबाल लीग में भारतीय खाद्य निगम, उत्तर क्षेत्र और उत्तर रेलवे ने अपने-अपने मुकाबलों में जीत दर्ज करते हुए पूरे अंक अर्जित किये। आज यहां विनोद नगर स्पोर्ट्स काम्प्लेक्स मैदान पर खेले गये मुकाबले में उत्तर क्षेत्र ने डी डी ए पर 6 -1 की बड़ी जीत दर्ज की तो खाद्य निगम मुख्यालय ने डीटीसी को 7-0 से रौंदा। हितिक वालिया ने लीग की पहली हैट्रिक जमाई। एक अन्य मुकाबले में उत्तर रेलवे ने दिल्ली ऑडिट को जितेन्दर राणा के गोल से परास्त किया। खाद्य निगम मुख्यालय की जीत में हितिक वालिया की हैट्रिक मैच का आकर्षण रही तो स्टार खिलाड़ियों से सजी टीम के लिए यश थापा ने दो और मोनू चौधरी एवम उमंग शर्मा ने एक एक गोल बांटे खाद्य निगम उत्तर क्षेत्र की जीत का हीरो पूर्व अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी त्रिलोक सिंह बिष्ट रहा जिसने दो दर्शनीय गोल किय। जोगिंदर सिँह, पियूष भंडारी, ललित और कमल सिंह ने एक एक गोल बांटे। दिन का सबसे रोमांचक मुकाबला उत्तर रेलवे और दिल्ली ऑडिट के बीच देखने को मिला। दोनों तरफ से कई अच्छे मूव बने लेकिन रक्षापंक्ति और गोलकीपर के सुन्दर बचाव से गोल नहीं बन पाया। बड़े उम्र के खिलाड़ियों से सजी डी डी ए और डीटीसी दौड़ से बाहर होने की कगार पर हैं।

रूसी पहलवान बेबोरिको पर लगा दो साल का प्रतिबंध

जिनेवा। रूस के पहलवान दिमित्री बेबोरिको के डोपिंग परीक्षण में प्रतिबंधित पदार्थ टैमोक्सीफेन की मात्रा पाये जाने के बाद उन्हें दो वर्ष के लिये अयोग्य ठहराया गया है। रूसी पहलवान ने सजा स्वीकार कर ली है। अंतरराष्ट्रीय परीक्षण एजेंसी (आईटीए) ने संयुक्त विश्व कुश्ती शासी निकाय की ओर से प्रतिबंध की घोषणा करते हुए कहा कि 23 अक्टूबर 2024 अल्बानिया के तिराना में 130 किलोग्राम हैवीवेट ग्रीको-रोमन कुश्ती वर्ग में अंडर-23 विश्व चैंपियनशिप के दौरान बेबोरिको का डोपिंग परीक्षण पॉजिटिव पाये जाने पर उन पर दो साल का प्रतिबंध लगा दिया है। बेबोरिको ने इस प्रतिबंध को स्वीकार कर लिया है। आईटीए ने 20 दिसंबर 2024 से 19 दिसंबर 2026 तक बेबोरिको पर प्रतिबंध लगाया गया है और 23 अक्टूबर 2024 से सभी प्रतिस्पर्धी परिणामों को अयोग्य घोषित कर दिया है। चैंपियनशिप में जीते गये उनके रजत पदक छीन लिया जाएगा।

मियामी ओपन में सबालेंका और पेगुला के बीच होगी खिताबी भिड़ंत

फ्लोरिडा। विश्व की नंबर एक खिलाड़ी एरिना सबालेंका और अमेरिका की टेनिस स्टार जेसिका पेगुला के बीच मियामी ओपन में खिताबी भिड़ंत होगी। आज यहां खेले गये महिला एकल के सेमीफाइनल मुकाबले में 26 वर्षीय बेलारूसी सबालेंका ने छठी वरीयता प्राप्त जैस्मीन पाओलिनी पर 6-2, 6-2 से जीत दर्ज की। सबालेंका ने टूर्नामेंट में अभी तक एक भी सेट नहीं गंवाया है और वह शानदार फॉर्म में हैं। तीन बार की ग्रैंड स्लैम चैंपियन सबालेंका का लगातार यह दूसरा फाइनल हैं।इस बीच महिला एकल के दूसरे सेमीफाइनल के दो घंटे 26 मिनट तक चले मुकाबले में अमेरिकी जेसिका पेगुला ने शानदार प्रदर्शन करते हुए फिलीपींस की एलेक्जेंड्रा इला पर 7-6 (7-3) 5-7 6-3 से जीत दर्ज करते हुए टूर्नामेंट के फाइनल में जगह बनाई।

रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु ने चेन्नई सुपर किंग्स को 50 रनों से हराया

एजेंसी
चेन्नई। कप्तान रजत पाटीदार (51), फिल सॉल्ट (32), विराट कोहली (31) और टिम डेविड (नाबाद 22) रन के बाद हेजलवुड (तीन विकेट) के शानदार प्रदर्शन की बदौलत रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) ने इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) 2025 के आठवें मुकाबले में चेन्नई सुपर किंग्स (सीएसके) को 50 रनों से हरा दिया है। आरसीबी टूर्नामेंट में लगातार दूसरी जीत के साथ अंक तालिका में शीर्ष पर बनी हुई है। 197 रनों के लक्ष्य का पीछा करने उतरी चेन्नई सुपर किंग्स की शुरुआत बेहद खराब रही और उसने मात्र आठ रन के स्कोर पर अपने दो विकेट गवां दिये। राहुल त्रिपाठी (पांच), कप्तान ऋतुराज गायकवाड़ (शून्य) को जॉश हेजवुड ने आउट किया। दीपक हुड्डा (चार) और सैम करन (आठ) रन बनाकर पवेलियन लौट गये। 13वें ओवर में यश दयाल ने रचिन रविंद्र (41) को आउटकर चेन्नई की उम्मीदों को ध्वत कर दिया। इसके बाद यश ने शिवम दुबे (19) को भी बोल्ड कर पवेलियन भेज दिया। रवि अश्विन (11) को लियम लिविंगस्टन ने आउट किया। इसके बाद रवींद्र जडेजा और महेन्द्र सिंह

धोनी ने पारी को संभाला। दोनों बल्लेबाजों के बीच आठवें के लिए 31 रनों की साझेदारी हुई। हेजलवुड ने रवींद्र जडेजा (25) को आउट कर इस साझेदारी को तोड़ा। चेन्नई सुपर किंग्स निर्धारित 20 ओवरों में आठ विकेट पर 146 रन ही बना सकी और 50 रनों से मुकाबला हार गई। आरसीबी की ओर से जॉश हेजलवुड ने तीन विकेट, लियम लिविंगस्टन और यश दयाल ने दो-दो विकेट लिये। भुवनेश्वर कुमार ने एक बल्लेबाज को आउट किया।

इससे पहले आज यहां चेन्नई सुपर किंग्स के कप्तान ऋतुराज गायकवाड़ ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया। बल्लेबाजी करने उतरी आरसीबी के लिए फिल सॉल्ट और विराट कोहली की सलामी जोड़ी ने पहले विकेट के लिए 45 रन जोड़े। पांचवें ओवर में नूर अहमद की गेंद पर विकेटकीपर महेंद्र सिंह धोनी ने फिल सॉल्ट को स्टंप आउट कर पवेलियन भेज दिया। फिल सॉल्ट ने 16 गेंदों में पांच चौके और एक छक्का लगाते हुए (32) रन बनाये। इसके बाद बल्लेबाजी करने आये देवदत्त पड़िक्कल (27) को आठवें ओवर में रविचंद्रन अश्विन ने अपना शिकार बना लिया। 13वें ओवर में नूर अहमद ने विराट कोहली को आउटकर आरसीबी को तीसरा झटका दिया। विराट कोहली ने 30 गेंदों में दो चौके और एक छक्का लगाते हुए (31) रन बनाये। लियम लिविंगस्टन (10), जितेश शर्मा (12) रन बनाकरअ आउट हुये। कप्तान रजत पाटीदार ने 32 गेंदों में चार चौके और तीन छक्के लगाते हुए (51) रनों की अर्धशतकीय पारी खेली। उन्हें 19वें ओवर की पहली गेंद पर मतीशा पतिराना ने आउट किया। इसी ओवर में क्रुणाल पंड्या (शून्य) को पतिराना ने अपना दूसरा शिकार बनाया। टिम डेविड ने आठ गेंदों में तीन छक्के और एक चौका लगाते हुए (नाबाद 22) रनों की विस्फोटक पारी खेली। डेविड ने 20वें ओवर में एस करण की गेंद पर लगातार छक्के लगाते हुए टीम को स्कोर को सात विकेट पर 196 रन पर पहुंचा दिया। चेन्नई सुपर की किंग्स की ओर से नूर अहमद ने तीन, मतीशा पतिराना ने दो विकेट लिये। आर अश्विन और खलील अहमद ने एक-एक बल्लेबाज को आउट किया।

सिरसा के कनिष्क चौहान का भारतीय अंडर-19 क्रिकेट कैंप में चयन

एजेंसी
सिरसा। जिला क्रिकेट एसोसिएशन के सचिव डॉ. वेद बैनीवाल ने बताया कि सिरसा के खिलाड़ी कनिष्क चौहान का चयन भारतीय अंडर-19 क्रिकेट कैंप के लिए हुआ है। यह कैंप 1 अप्रैल से राजकोट में शुरू होगा। डॉ. बैनीवाल ने कहा कि बीसीसीआई द्वारा शीघ्र ही देश के पांच भागों में अंडर-19 आयु वर्ग के खिलाडियों के लिए प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया जाएगा जिसमें सिरसा के इस होनहार ऑलराउंडर खिलाड़ी कनिष्क चौहान का चयन राजकोट में लगने वाले शिविर में हुआ है। कनिष्क चौहान आगामी 1 अप्रैल को इस कैंप को ज्वाइन करेगा। डॉ. बैनीवाल ने कहा कि साधारण किसान परिवार से आने वाले कनिष्क चौहान ने बगैर किसी सिफारिश के महज अपनी प्रतिभा के बल पर हरियाणा और देश का ध्यान खींचा है। उन्होंने आशा प्रकट की कि अपनी प्रतिभा के आधार पर कनिष्क चौहान निकट भविष्य में देश की अंडर-19 का हिस्सा होगा जो सिरसा के साथ-साथ समूचे हरियाणा के लिए गौरव का क्षण होगा। डॉ. वेद बैनीवाल कहते हैं कि कनिष्क चौहान से पूर्व देश के प्रथम पंक्ति के स्पिनर युजवेंद्र चहल भी हरियाणा का गौरव हैं जो उनके व हरियाणा के गुणी प्रशिक्षकों

के हाथ से निकला है। डॉ. बैनीवाल के मुताबिक जिस गंभीरता से शिद्दत से कनिष्क चौहान क्रिकेट की ऊंचाईयों को छू रहे हैं, निश्चित ही वे नवीन खिलाड़ियों के लिए आदर्श हैं। काबिलेजिक्र है कि कनिष्क चौहान इस समय सिरसा की अंडर-19 क्रिकेट टीम का कप्तान है और सिरसा की शाह सतनाम क्रिकेट अकादमी में प्रशिक्षण ले रहा है।

पूर्व ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेटर स्टुअर्ट लॉ बने नेपाल क्रिकेट टीम के हेड कोच

एजेंसी
नई दिल्ली। पूर्व ऑस्ट्रेलियाई खिलाड़ी स्टुअर्ट लॉ को अगले 2 वर्षों के लिए नेपाल पुरुष क्रिकेट टीम का हेड कोच नियुक्त किया गया है। नेपाल क्रिकेट एसोसिएशन (सीएएन) ने इसकी जानकारी दी है। लॉ से पहले मोंटी देसाई नेपाल टीम के कोच थे। उनका कार्यकाल इस साल फरवरी में समाप्त हो गया था। नेपाल क्रिकेट एसोसिएशन ने सोशल मीडिया अकाउंट एक्स पर इसकी जानकारी देते हुए बताया कि पूर्व ऑस्ट्रेलियाई दिग्गज स्टुअर्ट लॉ अगले दो वर्षों के लिए नेपाल पुरुष राष्ट्रीय क्रिकेट टीम की कमान संभालेंगे। 56 साल के स्टुअर्ट लॉ ने ऑस्ट्रेलियाई टीम के लिए वर्ष 1994 से 1999 के बीच क्रिकेट खेला। उन्होंने एक टेस्ट और 54 वनडे मैच खेले, जिसमें 1291 रन बनाए और 12 विकेट अपने नाम किए। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट को अलविदा कहने के बाद उन्होंने कोचिंग की दुनिया में कदम रखा। उनके पास कोचिंग का काफी

अनुभव हो चुका है। वे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अमेरिका, श्रीलंका, बांग्लादेश, वेस्टइंडीज और अफगानिस्तान के साथ काम कर चुके हैं। पिछले साल उनकी कोचिंग में अमेरिका टीम ने आईसीसी पुरुष टी20 विश्व कप 2024 में ऐतिहासिक प्रदर्शन किया। घरेलू धरती पर खेले गए टूर्नामेंट में यूएसए ने ग्रुप चरण में अपने शुरुआती मैच में कनाडा को हराया। इसके बाद पाकिस्तान के खिलाफ एक ऐतिहासिक जीत दर्ज की। इससे वे सुपर आठ चरण में पहुंचने में कामयाब रहे थे।

चैंपियंस ट्रॉफी 2025: सचिवालय हरिकेन और डेंजर ने फाइनल में बनाई जगह

एजेंसी
देहरादून। चैंपियंस ट्रॉफी 2025 के सेमीफाइनल मुकाबले खेले गए, जिसमें सचिवालय हरिकेन और डेंजर की टीमें विजयी होकर फाइनल में पहुंच गई। पहले सेमीफाइनल में सचिवालय हरिकेन का सामना सचिवालय लायंस से हुआ। हरिकेन ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए 20 ओवर में 5 विकेट के नुकसान पर 165 रन बनाए। टीम के लिए सुनील ने 35, कपिल ने 29 और विनोद ने 25 रन की उपयोगी पारियां खेलीं।

लायंस की ओर से माधव नौटियाल ने 2 विकेट चटकाए। जवाब में लायंस की टीम 20 ओवरों में 9 विकेट खोकर 126 रन ही बना सकी और मुकाबला 39 रनों से हार गई। टीम के लिए प्रमोद कुमार ने सर्वाधिक 37 रन बनाए। हरिकेन की ओर से ओमीश ने 4, आशीष ने 2 और अनुज चमोली ने 1 विकेट झटका। शानदार प्रदर्शन के लिए ओमीश कुमार को मैन ऑफ द मैच और प्रमोद कुमार को फाइटर ऑफ द मैच चुना गया।दूसरे सेमीफाइनल में सचिवालय ए और डेंजर की टीमें आमने-सामने थीं।

सचिवालय ए ने पहले बल्लेबाजी करते हुए सागर के 42 रनों की बदौलत 155 रन बनाए। डेंजर की ओर से प्रमोद जोशी ने बेहतरीन गेंदबाजी करते हुए 3 विकेट झटके। लक्ष्य का पीछा करने उतरी डेंजर की टीम ने 18.3 ओवरों में 4 विकेट खोकर जीत हासिल कर ली। टीम के लिए चंदन ने 53 और अरविंद राणा ने 39 रनों की शानदार पारियां खेलीं।

सचिवालय ए की ओर से हरीश सैनी ने 2 विकेट लिए। इस मैच में प्रमोद जोशी को मैन ऑफ द मैच और सागर कुमार को फाइटर ऑफ द मैच का पुरस्कार दिया गया।अब चैंपियंस ट्रॉफी 2025 का फाइनल मुकाबला रविवार को सचिवालय हरिकेन और डेंजर के बीच खेला जाएगा, जहां दोनों टीमें खिताब जीतने के लिए अपनी पूरी ताकत झोंक देंगी।

एफआईएच जूनियर पुरुष हॉकी विश्व कप के लिए चेन्नई और मदुरै होंगे मेजबान शहर

एजेंसी
नई दिल्ली। तमिलनाडु के चेन्नई और मदुरै आगामी एफआईएच जूनियर पुरुष हॉकी विश्व कप के मेजबान शहर होंगे। हॉकी इंडिया ने उक्त घोषणा की। यह प्रतिष्ठित टूर्नामेंट 28 नवंबर से 10 दिसंबर 2025 तक आयोजित किया जाएगा। इस दो सप्ताह तक चलने वाले हॉकी महोत्सव में पहली बार 24 टीमें खिताब के लिए मुकाबला करेंगी। यह लगातार तीसरा अवसर होगा जब एफआईएच जूनियर पुरुष हॉकी विश्व कप भारत में आयोजित किया जाएगा। इससे पहले, 2021 में यह टूर्नामेंट भुवनेश्वर, ओडिशा और 2016 में लखनऊ, उत्तर प्रदेश में आयोजित हुआ था, जहां भारत ने खिताबी जीत दर्ज की थी। हॉकी इंडिया के अध्यक्ष डॉ. दिलीप टिर्की ने इस आयोजन पर खुशी व्यक्त करते हुए कहा, एफआईएच जूनियर पुरुष हॉकी विश्व कप की मेजबानी करना हॉकी इंडिया के लिए गर्व की बात है। मैं तमिलनाडु के मुख्यमंत्री श्री एम.के. स्टालिन और खेल मंत्री उदयनिधि स्टालिन का आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने इस आयोजन को सफल बनाने के लिए अभूतपूर्व समर्थन दिया है। इस बार 24 टीमें भाग लेंगी, इसलिए हमने टूर्नामेंट को दो शहरों - चेन्नई और मदुरै में आयोजित करने का निर्णय लिया है। चेन्नई ने 2023 में एशियन चैंपियंस ट्रॉफी की सफल मेजबानी की थी, जबकि मदुरै पहली बार इस स्तर के अंतरराष्ट्रीय टूर्नामेंट की मेजबानी करेगा। हमें खुशी है कि हम हॉकी को देश के विभिन्न हिस्सों में ले जा रहे हैं।हॉकी इंडिया के महासचिव भोला नाथ सिंह ने कहा, हमारी महासंघ वैश्विक हॉकी टूर्नामेंट की मेजबानी में अग्रणी रहा है और एक बार फिर, हम एफआईएच जूनियर पुरुष हॉकी विश्व कप को शानदार सफलता दिलाने में कोई कसर नहीं छोड़ेंगे। हमारा उद्देश्य भारत के अलग-अलग स्थानों पर हॉकी को बढ़ावा देना है। इसी सोच के तहत हमने चेन्नई और मदुरै को मेजबान शहरों के रूप में चुना है, जिसे तमिलनाडु सरकार और हमारे कोषाध्यक्ष श्री शेखर मनोहरन के नेतृत्व से संभव बनाया गया।÷ हॉकी इंडिया के कोषाध्यक्ष और हॉकी तमिलनाडु के अध्यक्ष शेखर मनोहरन ने तमिलनाडु में हॉकी के स्वर्णिम दिनों को वापस लाने की उत्सुकता जाहिर करते हुए कहा, मैं तमिलनाडु के माननीय मुख्यमंत्री श्री एम.के. स्टालिन और खेल मंत्री उदयनिधि स्टालिन का हॉकी के प्रति उनके जुनून और समर्थन के लिए आभार व्यक्त करता हूँ।

ओडिशा को हराकर हरियाणा ने जीता राष्ट्रीय महिला हॉकी लीग का खिताब

एजेंसी
रांची। हरियाणा ने हॉकी एसोसिएशन ऑफ ओडिशा को करीबी मुकाबले में हराकर राष्ट्रीय महिला हॉकी लीग 2024-2025 का खिताब अपने नाम किया। आज यहां झारखंड के रांची में मारंग गोमके जयपाल सिंह मुंडा एस्ट्रो टर्फ पर खेले गये फाइनल मुकाबले में हरियाण ने हॉकी एसोसिएशन ऑफ ओडिशा को 3-2 से हराया। हॉकी एसोसिएशन ऑफ ओडिशा के लिए अहल्या लाकड़ा ने (आठवें) मिनट में गोलकर अपनी टीम को बढ़त दिलाई। लेकिन चैंपियन हरियाणा की आज अलग ही योजना थी। हरियाण की काजल ने(12वें) मिनट में गोलकर स्कोर 1-1 से बराबर कर दिया। इसके बाद काजल ने एक बार फिर (22वें) मिनट में गोल दागकर अपनी टीम को बढ़त दिला दी। हरियाणा के लिए सावी ने (44वें) मिनट में विजयी गोल किया। हरियाणा के डिफेंस ने पहले गोल के बाद प्रतिद्वंद्वी को गोल करने से रोक दिया, जब तक कि दीपिका बरवा ने (54वें) मिनट खेल के अंतिम क्षणों में हॉकी एसोसिएशन ऑफ ओडिशा के लिए गोल किया। वहीं तीसरे स्थान के लिए हुये मैच में झारखंड ने मध्यप्रदेश को 1-0 से हराकर तीसरा स्थान हासिल किया। झारखंड़ के लिए स्वीटी डुंगडुंग ने 12वें मिनट में गोल किया और यह यह निर्णायक रहा।

मुंबई सिटी के कोच पेट्र क्राटकी ने प्लेऑफ मुकाबले से पहले टीम को दिया जीत का मंत्र

एजेंसी
मुंबई। इंडियन सुपर लीग (आईएसएल) 2024-25 के प्लेऑफ मुकाबले में मुंबई सिटी एफसी को बेंगलुरु एफसी के खिलाफ कांतिरावा स्टेडियम में करो या मरो की स्थिति में उतरना होगा। इस अहम मुकाबले से पहले टीम के हेड कोच पेट्र क्राटकी और स्टार फॉरवर्ड निकोलास करेलिस ने टीम की तैयारियों और मानसिकता को लेकर अपना आत्मविश्वास जाहिर किया।मुंबई सिटी एफसी हाल ही में इसी मैदान पर बेंगलुरु एफसी को 2-0 से हराकर प्लेऑफ में अपनी जगह पक्की कर चुकी है, जिससे टीम के हौसले बुलंद हैं। हालांकि, कोच क्राटकी और करेलिस को पता है कि यह मुकाबला पूरी तरह अलग होगा और टीम को अपनी पूरी ताकत झोंकनी होगी। मुंबई सिटी एफसी के मुख्य कोच पेट्र क्राटकी ने टीम की एकजुटता को जीत का सबसे बड़ा कारण बताया। उन्होंने एक प्रेस कांफ्रेंस में कहा, हम किसी भी चीज़ की कमी नहीं महसूस कर रहे हैं। यह हमेशा एक टीम प्रयास होता है। करेलिस ने दस गोल किए हैं, लेकिन यह केवल उनकी वजह से नहीं है, बल्कि पूरी टीम की मेहनत का नतीजा है। उन्होंने कहा कि हर खिलाड़ी अपनी भूमिका निभाता है, कोई असिस्ट देता है, तो कोई सही समय पर सही जगह पर मौजूद रहता है। निकोलास करेलिस, जो इस सीजन में अब तक 10 गोल कर चुके हैं, ने भी टीम को प्राथमिकता देने की बात कही। उन्होंने कहा, एक स्ट्राइकर के रूप में गोल करना मेरी जिम्मेदारी है, लेकिन यह मेरे साथियों की मेहनत का नतीजा है। उनकी मदद के बिना मैं यह नहीं कर सकता था।

बेंगलुरु एफसी देगा कड़ी चुनौती

मुंबई सिटी एफसी ने लीग चरण में बेंगलुरु एफसी को हराया था, लेकिन क्राटकी को पता है कि प्लेऑफ मुकाबले में विपक्षी टीम पहले से ज्यादा मजबूत होकर उतरेगी। उन्होंने कहा, बेंगलुरु एफसी पिछले मुकाबले में अपने कई अहम खिलाड़ियों के बिना खेल रही थी, लेकिन इस बार वे पूरी ताकत के साथ उतरेंगे। हमें मानसिक और शारीरिक रूप से तैयार रहना होगा।

मुंबई सिटी एफसी इस मुकाबले से पहले शानदार लय में है और खिलाड़ी पूरी तरह से तैयार हैं। करेलिस ने कहा, टीम का मनोबल काफी ऊंचा है। सभी खिलाड़ी एक-दूसरे को प्रेरित कर रहे हैं और मैदान पर सर्वश्रेष्ठ देने के लिए तैयार हैं। हमारा लक्ष्य प्लेऑफ तक पहुंचना था और अब हम इस चुनौती के लिए पूरी तरह से तैयार हैं।

बेंगलुरु की मजबूत रक्षापंक्ति से मिलेगी कड़ी टक्कर: बेंगलुरु एफसी की मजबूती उनकी रक्षापंक्ति है, जिस पर करेलिस ने भी ध्यान दिलाया। उन्होंने कहा, उनकी डिफेंस काफी मजबूत है और उसे भेदना आसान नहीं होगा। साथ ही, वे हमारी किसी भी गलती का फायदा उठा सकते हैं। हमें धैर्य रखना होगा और अपने खेल पर ध्यान देना होगा। मुंबई सिटी एफसी के लिए यह मुकाबला बेहद अहम है और टीम की कोशिश रहेगी कि इस जीत के साथ सेमीफाइनल में अपनी जगह पक्की करे।

रीतिका हुड्डा ने एशियाई कुश्ती चैंपियनशिप में जीता रजत पदक

अम्मा। मौजूदा अंडर 23 विश्व चैंपियन रीतिका हुड्डा ने एशियाई कुश्ती चैंपियनशिप 2025 में महिलाओं के फ्रीस्टाइल 76 किग्रा वर्ग स्पर्धा में रजत पदक हासिल किया हैं। जार्डन के अम्मान में गुरुवार को खेले गये फाइनल मुकाबले में भारतीय पहलवान रीतिका किर्गिस्तान की ऐपेरी मेदेत किजी से 7-6 से हार गई और उन्हें रजत पदक से संतोष करना पड़ा। एक समय रीतिका 6-2 से आगे थीं, लेकिन आखिरी सेकेंड में बढ़त को गंवा दिया। रीतिका ने सेमीफाइनल में जापान की नोदोका यामामोटो को हराकर अपना दूसरा सीनियर एशियाई पदक पक्का किया। इससे पहले उन्होंने क्वार्टर फाइनल में कोरिया की सियोयोन जियोंग को 10-0 से हराया था। इस बीच अन्य मुकाबलों में मुस्कान ने (59 किग्रा) वर्ग और मानसी लाठर ने (68 किग्रा) वर्ग स्पर्धा में कांस्य पदक जीते।

अनाहत और करीम ने जीता जेएसडब्ल्यू इंडियन ओपन खिताब

एजेंसी
मुंबई। भारतीय महिला स्क्वैश खिलाड़ी अनाहत सिंह और पुरुष वर्ग में मिस्र के करीम एल टॉर्की ने शानदार खेला का प्रदर्शन करते हुए जेएसडब्ल्यू इंडियन ओपन का खिताब अपने नाम कर लिया। 17 वर्षीय अनाहत का यह लगातार छठा खिताब है।आज यहां खेले गये महिला एकल के फाइनल में, भारत की किशोर सनसनी अनाहत सिंह ने हेलेन टैंग के खिलाफ शानदार प्रदर्शन किया। अनाहत ने पहले सेट के दौरान हेलेन को दूसरे कोने में कड़ी टक्कर दी, लेकिन अनाहत ने 1-0 की बढ़त हासिल करने के लिए पर्याप्त प्रयास किया। इसके बाद तीसरी वरीयता प्राप्त अनाहत ने हांगकांग की अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी पर अपना दबदबा बनाना शुरू कर दिया और अगले दो सेट 13 मिनट में जीत लिए। अनाहत ने अपने प्रतिद्वंद्वी को फाइनल मुकाबले के दौरान बिल्कुल भी सहज नहीं होने दिया और अंततः 24 मिनट में 3-0 (11-9, 11-5, 11-8) के स्कोर के साथ फाइनल जीत लिया। इस जीत से अनाहत को 300 रैंकिंग अंक मिले और यह उनके करियर का कड़ी टक्कर दी जिसके बाद उन्होंने अपेक्षाकृत आसानी से अगला सेट जीत लिया। ब्रेक के बाद, दृढ़ निश्चयी दिख रहे अभय ने वापसी करते हुए तीसरा सेट जीत लिया।

11वां खिताब है। दूसरी ओर, पुरुष एकल फाइनल में, अभय सिंह को मिस्र के करीम एल टॉर्की के खिलाफ कड़ी चुनौती का सामना करना पड़ा। दोनों खिलाड़ियों ने पहले सेट में कुछ बेहतरीन स्क्वैश के साथ शाम की शुरुआत की। करीम ने पहले सेट में चौथे सेट में करीम ने बढ़त हासिल की, लेकिन अभय ने कड़ी मेहनत की और लगभग सेट जीत लिया। करीम ने अपनी भारतीय खिलाड़ी को 3-1 (12-10, 11-4, 7-11, 12-10) से पछाड़कर खिताब अपने नाम किया।

कोर्डा को हराकर जोकोविच अंतिम चार में

एजेंसी
फ्लोरिडा।सर्बियाई टेनिस स्टार नोवाक जोकोविच ने अमेरिका के सेबेस्टियन कोर्डा को हराकर मियामी ओपन में पुरुष वर्ग के सेमीफाइनल में जगह बना ली है। एक घंटा 24 मिनट तक चले मुकाबले में गुरुवार को दुनिया के पांचवें नंबर के खिलाड़ी जोकोविच ने दूसरे सेट में ब्रेक डाउन से वापसी करते हुए कोर्डा पर 6-3 7-6 (7-4) से जीत दर्ज की। इस जीत के साथ ही 37 वर्षीय जोकोविच एटीपी मास्टर्स 1,000 इवेंट के अंतिम चार में पहुंचने वाले सबसे उम्रदराज खिलाड़ी बन गये हैं। यह क्वार्टरफाइनल मैच को खेला जाना था, लेकिन जेसिका पेगुला और एम्मा राडुकानु के बीच महिला क्वार्टरफाइनल मैच रात 11 बजे के बाद तक चलने के कारण इसे स्थगित कर दिया गया था।

जोकोविच सेमीफाइनल में बुल्गारियाई 14वीं वरीयता प्राप्त ग्रिगोर दिमित्रोव से मुकाबला करेंगे। 2016 के बाद से जोकोविच इस टूर्नामेंट में पहली बार सेमीफाइनल में पहुंचे हैं।

मैच के बाद जोकोविच ने कहा कि मेरे लिए यह अब तक का सर्वश्रेष्ठ सर्विंग प्रदर्शन रहा, मैं काफी नर्वस था क्योंकि मुझे पता है कि कोर्डा बहुत आक्रामक और प्रतिभाशाली खिलाड़ी है।

रिजर्व बैंक और कस्टम की आसान जीत

एजेंसी
नयी दिल्ली। पंकज नेगी के दो शानदार गोलों की मदद से भारतीय रिजर्व बैंक ने आवासन और शहरी कार्य मंत्रालय को 5-2 से हरा कर डीएसए सांस्थानिक लीग में बड़ी जीत के साथ शुरुआत की। वहीं एक अन्य मुकाबले में कस्टम एंड सेंट्रल एक्साइस ने ईएसआईसी को 3-1 से हराया। विनोद नगर स्पोर्ट्स काम्प्लेक्स में आज यहां दिन के पहले मुकाबले में भारतीय रिजर्व बैंक के लिए पंकज नेगी ने दो, कृतेश हुड्डा,अभिषेक और के पी कबुई ने एक-एक गोल किये। मुकाबले के दौरान बैंक के गोलकीपर कुलदीप हुड्डा ने कई मौकों पर दर्शनीय बचाव किए। आवासन और शहरी कार्य मंत्रालय की टीम के लिए बिजेन्दर और लोकेश ने एक-एक गोल दागे। वहीं दिन के दूसरे मुकाबले में कस्टम एंड सेंट्रल एक्साइस ने महिप अधिकारी, सायक और कृष्णा के गोलों से ई एस आई सी पर 3-1 की जीत के साथ अभियान शुरू किया। पराजित टीम की ओर से पवन जोशी ने गोल दागा।

अनन्या पांडे

और जान्हवी कपूर संग काम करने पर सलमान खान बोले- 10 बार सोचूंगा

'सिकंदर' सलमान खान और रश्मिका मंदाना की मोस्ट अवेटेड फिल्म है. ये फिल्म इस साल ईद के मौके पर यानी 30 मार्च को रिलीज होगी. हालांकि, फिल्म के ट्रेलर रिलीज होने के बाद से लोगों में इस फिल्म को लेकर एक्साइटमेंट और भी ज्यादा बढ़ गया है. 'सिकंदर' का ट्रेलर 23 मार्च को लॉन्च किया गया था, जिसे लोगों ने काफी पसंद किया है. फिलहाल फिल्म के सिनेमाघरों में दस्तक देने से पहले इसकी पूरी टीम इसके प्रमोशन में लगी हुई है.'सिकंदर' को लेकर हाल ही में सलमान खान ने मीडिया से बात की. इस दौरान एक्टर से पर्सनल और प्रोफेशनल लाइफ को लेकर कई सवाल किए गए. इस दौरान सलमान को फिल्म करने को लेकर सवाल किया गया. उनसे पूछा गया कि कई सारे डायरेक्टर और एक्टर उनके साथ काम करना चाहते हैं, लेकिन एक्टर किस हिसाब से काम करते हैं? इस पर जवाब देते हुए एक्टर ने कहा कि मैं इंडस्ट्री में आई नई एक्ट्रेसेस के साथ काम करना चाहता हूं, जिसके बाद उन्हें अच्छी फिल्में मिलें.

'मुझे 10 बार सोचना पड़ेगा'

एक्टर ने मैं सोच रहा था कि मैं इन नई लड़कियों के साथ काम करूंगा और वे आगे आएंगी और बड़ी स्टार बनेंगी. उन्हें बड़ी और बेहतर फिल्में मिलेंगी, लेकिन आप लोगों ने ऐज गैप दिखा-दिखा कर उन एक्ट्रेसेस का तो बेड़ा गर्क कर दिया है. आगे उन्होंने कहा कि अब अगर मैं अनन्या या जान्हवी के साथ काम करना चाहूं, तो मुझे 10 बार सोचना पड़ेगा. हालांकि, इस पर तुरंत सामने से जवाब आया कि इस बारे में न सोचे, तो सलमान ने कहा, मैं 10 बार सोचने के बाद भी मैं काम करूंगा.

लोगों को दिया था करारा जवाब

'सिकंदर' में रश्मिका मंदाना सलमान खान के साथ रोमांस करती नजर आ रही हैं. इस पर कई सारे लोगों ने उनके उम्र के फासले को दिखाया है. हालांकि, फिल्म के ट्रेलर के दौरान सलमान ने रस्मिका के साथ काम करने को लेकर कहा कि लोग कहते हैं 31 साल का एज गैप है. जब रश्मिका को और उनके पिता को परेशानी नहीं है, तो आपको क्या हो रहा है. हालांकि, रश्मिका से पहले सलमान दिशा पटानी और पूजा हेगड़े के साथ नजर आ चुके हैं.

रोमित राज की एग्जिट से परेशान हुए फैंस, सोमनाथ मंदिर जाकर की प्रार्थना

वैसे तो जब अपने पसंदीदा एक्टर के साथ कुछ गलत होता है, तब फैंस सोशल मीडिया पर इस बात की भड़ास निकालते हैं. लेकिन 'ये रिश्ता क्या कहलाता है' एक्टर रोमित राज के फैंस तो उनकी एग्जिट को रोकने के लिए सीधे सोमनाथ मंदिर जा पहुंचे हैं. दरअसल रोमित राज कई सालों से टीवी इंडस्ट्री में एक पॉपुलर एक्टर रहे हैं. उन्होंने कई सीरियल्स में काम किया है. उनके प्रमुख सीरियल्स में 'शाका लाका बूम बूम' 'हातिम', 'घर की लक्ष्मी बेटियां', 'यशोमति मैय्या के नंदलाला' जैसे कई शोज शामिल हैं. फिलहाल वो स्टार प्लस के मशहूर सीरियल 'ये रिश्ता क्या कहलाता है' में रोहित पोद्दार का रोल अदा कर रहे हैं. लेकिन जल्दी ही इस शो से उनकी विदाई जल्द होने वाली है.

रोमित की एग्जिट से उनके फैंस बहुत ज्यादा दुखी हैं. रोमित के कुछ गुजराती फैंस ने तो सीधे सोमनाथ मंदिर जाकर प्रार्थना की है कि वो इस शो से बाहर न हो. दरअसल पिछले साल जुलाई में बतौर रोहित के किरदार से एंट्री सीरियल में एंट्री करने वाले एक्टर ने तब शिवम खजुरिया को रिप्लेस किया था. तकरीबन 9 महीने शो में काम करने के बाद अब शो में उनके ट्रैक का अंत होने वाला है.

जल्द होगी रोमित की एग्जिट

इस शो से जुड़े एक सोर्स ने बताया रोमित का किरदार एक हफ्ते में खत्म हो जाएगा. रोहित के मौत के बाद सीरियल की कहानी में एक बड़ा ट्विस्ट आएगा और इस ट्विस्ट के चलते रूही, अभिरा और अरमान को अपना बच्चा देने से इनकार कर देगी. इस बीच हमें सीरियल में इमोशनल ड्रामा भी देखने मिलेगा. आईपीएल के सीजन में भी दर्शकों को अपने साथ बांधे रखने के लिए मेकर्स ये ट्विस्ट लेकर आए हैं. दरअसल शुरुआती स्टेज पर रोमित का रोल सिर्फ दो महीने का होने वाला था लेकिन जैसे जैसे ट्रैक बढ़ा, रोहित के किरदार को 9 महीने का एक्सटेंशन मिल गया. अब ये देखने वाली बात होगी कि रोहित के ट्रैक को खत्म करके शो के रेटिंग्स और आगे की स्टोरीलाइन में कैसे बढ़ोतरी देखने को मिलती है.

'ये रिश्ता...' ने दिया दूसरा मौका

शो में जुड़ने से पहले रोमित ने एक इंटरव्यू में कहा था 'मैं यह कहना चाहता हूं कि मैं अपने करियर के सबसे बेस्ट फेज में हूं. मेरा कैरियर 2000 में अच्छा चल रहा था लेकिन अभी मुझे और ज्यादा अच्छे किरदार करने को मिल रहे हैं. मुझे टीवी में काम करना पसंद है और अब मुझे पता है कि किस तरह के रोल्स मुझे स्टैंड आउट करेंगे. मैं बहुत खुश हूं कि राजन शाही ने मुझे 'ये रिश्ता क्या कहलाता है' और 'बातें कुछ अनकही सी' जैसे दिलचस्प किरदार दिए हैं.

45 करोड़ में बनी बिना क्लाइमैक्स वाली फिल्म, 66 हजार भी न कमा सकी, OTT ने भी दिया बड़ा झटका

बॉलीवुड में हर साल ढेरों फिल्में बनती हैं. कई फिल्में बॉक्स ऑफिस हिला देती हैं तो कई फिल्में टिक नहीं पाती. लेकिन कई फिल्मों का हाल तो इतना बुरा होता है कि जिनकी कल्पना भी नहीं की जा सकती. एक्टर अर्जुन कपूर की भी एक फिल्म का ऐसा ही हाल हुआ था. उनकी एक फिल्म 45 करोड़ रुपये के तगड़े बजट में बनी थी लेकिन फिल्म 65 हजार रुपये भी कमा नहीं पाई.अर्जुन कपूर को उनकी हिट से ज्यादा फ्लॉप फिल्मों के लिए जाना जाता है. बात है साल 2023 की. उनकी फिल्म आई थी 'द लेडी किलर'. फिल्म के नाम में 'किलर' शब्द था. लेकिन फिल्म बॉक्स ऑफिस पर खुद 'किल' हो गई थी. अर्जुन कपूर के साथ इसमें लीड रोल भूमि पेडनेकर ने निभाया था. दोनों के नाम बॉलीवुड की सबसे बड़ी डिजास्टर फिल्म दर्ज हो गई. सिनेमाघरों में इसे दर्शक नहीं मिले. जबकि ओटीटी ने भी इसे बड़ा झटका दिया था.

45 करोड़ बजट, कमाई 65 हजार भी नहीं

भूमि पेडनेकर और अर्जुन की ये फिल्म 3 नवंबर 2023 को रिलीज हुई थी. इसका डायरेक्शन किया था अजय बहल ने. इसकी कहानी अजय के साथ मिलकर पवन सोनी और मयंक तिवारी ने लिखी थी. मेकर्स ने फिल्म को 45 करोड़ रुपये में तैयार किया था. लेकिन फिल्म दर्शकों के लिए तरस गई और पाई-पाई को मोहताज हो गई. इसने बॉक्स ऑफिस पर सिर्फ 60 हजार रुपये का कलेक्शन किया था.

पहले दिन सिर्फ 293 टिकट बिके थे

फिल्म को भूषण कुमार की कंपनी टी-सीरीज के बैनर तले बनाया गया था. फिल्म पर अच्छा खासा खर्च किया गया लेकिन इसका हाल बहुत बुरा हुआ. फिल्म औंधे मुंह गिरी. आपको ये जानकर हैरानी होगी कि पहले दिन फिल्म के भारत में सिर्फ 293 टिकट बिके थे. फिल्म की असफलता की कई वजहें रहीं. कहा तो ये भी जाता है कि किसी रीजन के चलते इस फिल्म का क्लाइमैक्स शूट नहीं हो पाया था और इसे बिना क्लाइमैक्स के ही रिलीज कर दिया गया था. इसकी कहानी भी लोगों को पसंद नहीं आई थी.

OTT ने भी दिया बड़ा झटका

नेटफ्लिक्स ने 'द लेडी किलर' के डिजिटल राइट्स खरीदे थे. लेकिन ओटीटी प्लेटफॉर्म ने क्वालिटी चेक में इस फिल्म को रिजेक्ट कर दिया था. इस तरह से अर्जुन और भूमि की फिल्म को ओटीटी से भी बड़ा झटका लगा था. बाद में इसे 2024 में टी सीरीज ने अपने यूट्यूब चैनल पर रिलीज कर दिया था. फिल्म में अर्जुन और भूमी की एक्टिंग को भी काफी ट्रोलिंग का सामना करना पड़ा था.

डेटिंग की खबरों के बीच

श्रीलीला

के साथ दिखे कार्तिक आर्यन, शेयर की फोटो, बोले- तू मेरी जिंदगी है

बॉलीवुड के मशहूर एक्टर कार्तिक आर्यन का नाम बीते कई दिनों से साउथ एक्ट्रेस श्रीलीला के साथ जुड़ रहा है. फिल्म 'पुष्पा 2' में आइटम सॉन्ग करके सुर्खियां बटोरने वाली श्रीलीला और कार्तिक आर्यन की डेटिंग की खबरें लगातार चल रही हैं. हालांकि इस मामले को लेकर दोनों में से किसी ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी है.डेटिंग की खबरों के बीच अब कार्तिक आर्यन ने फैंस को हैरान कर देने वाला काम कर दिया है. उन्होंने श्रीलीला के साथ अपनी एक तस्वीर सोशल मीडिया पर शेयर की है. इस तस्वीर में एक्टर, श्रीलीला की आंखों में देख रहे हैं. और शर्म से एक्ट्रेस ने अपनी नजरें नीचे झुका रखी हैं. इस तस्वीर को शेयर करते हुए कार्तिक ने श्रीलीला को अपनी जिंदगी कहा है. सोशल मीडिया पर दोनों की तस्वीर को फैंस काफी पसंद कर रहे हैं.

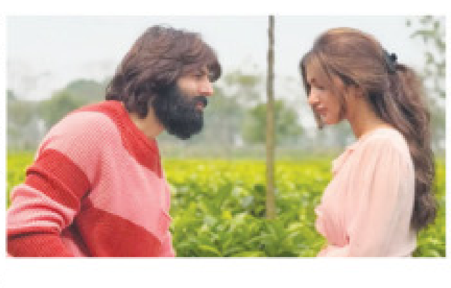

कार्तिक बोले- तू मेरी जिंदगी है

कार्तिक आर्यन इसमें लंबे बाल और बढ़ी हुई दाढ़ी के साथ दिखाई दे रहे हैं. वहीं गुलाबी रंग की ड्रेस में श्रीलीला भी काफी खूबसूरत लग रही हैं. हालांकि वो एक्टर की तरफ नहीं देख रही हैं. कार्तिक के सामने उनकी निगाहें झुकी हुई हैं. दोनों हरियाली के बीचों बीच बैठकर चाय का लुत्फ ले रहे हैं. इस फोटो को शेयर करते हुए कार्तिक आर्यन ने कैप्शन में लिखा, तू मेरी जिंदगी है'. इस तस्वीर को श्रीलीला ने भी अपने इंस्टाग्राम हैंडल से पोस्ट किया है.

दार्जिलिंग में शूटिंग कर रहे हैं कार्तिक-श्रीलीला

तस्वीर को लेकर फैंस ज्यादा कुछ सोचें इससे पहले हम आपको बता देते हैं कि ये दोनों की अपकमिंग फिल्म के सेट की तस्वीर है. दोनों अनुराग बासु की अनटाइटल फिल्म की शूटिंग फिलहाल दार्जिलिंग में कर रहे हैं. सेट से ये तस्वीर सामने आने के बाद फैंस की खुशी का ठिकाना नहीं है. फैंस कार्तिक और श्रीलीला को एक साथ बड़े पर्दे पर देखने के लिए एक्साइटेड हैं.

आशिकी 3 हो सकती है फिल्म!

माना जा रहा है कि अनुराग बासु, कार्तिक और श्रीलीला के साथ मिलकर 'आशिकी 3' बना रहे हैं.